अलौकिक साधना विशेपांक
जून ९४
मूल्य-१५/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
सम्मोहन रहस्य
अपने मृत परिचित से वार्तालाप सम्भव है
रतिप्रिया यक्षिणी : सलोने सौन्दर्य का दूसरा नाम

गुरु पूर्णिमा

१६-२०-२१-२२ जुलाई ६४

- ये दिन - जैसे जिन्दगी की पूरी बहार गुलेल बिखेर रही हो
- और सारी प्रकृति नृत्यमय, गीतमय, थिरकती, मचलती, झूमती इठलाती साधकों के बीच उतर आई हो
- और गुरुदेव का सान्निध्य - साहचर्य, मानो सिद्धाश्रम झील में स्नान कर पवित्र हो गये हो
- और इस बार तो सारी साधनाओं - सिद्धियों को प्रैक्टिकल रूप में उतारना है, हजारों गृहस्थ एवं सन्यासी शिष्यों के हृदय कमल में।
- एक अनूठा महोत्सव, एक लाजवाब गुरु - भाई, बहिनों का पारस्परिक मिलन, पूरे आकाश में शिष्यों का इन्द्र धनुष मंडन

फिर इस बार तो इस अनूठे आयोजन को चूकना जिन्दगी को चूकना है

आयोजन स्थल : होटल सिंगला पैलेस, जी०टी० रोड, पानीपत

(पानीपत बस स्टैंड से दो कि०मी० आगे नगर के बाहर जी०टी० रोड पर स्थित)

स्थानीय सम्पर्क :

श्री सत्यवीर सक्सेना, विशनस्वरूप कॉलोनी, पानीपत

श्री सतीश सिंगला, सुखदेव नगर, पानीपत

फोन : (घर) - ०१७४२-२१३८६, (होटल) -०१७४२-२३३६६

पानीपत, दिल्ली से १०० कि०मी० दूर रेल व बस द्वारा जुड़ा महत्वपूर्ण नगर है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश व हिमांचल प्रदेश के साधक यहां तक सीधे भी पहुंच सकते हैं। शेष प्रान्तों के साधकों के लिए दिल्ली आकर **अन्तर्राज्यीय बस स्टैंड** (पुरानी दिल्ली रेल्वे स्टेशन के पास स्थित) से पानीपत पहुंचना ही सुविधाजनक रहेगा।

आजय कुमार उत्तम "निखिल"

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

माया मानुषरूपिणं शशिधरं कैलासवासप्रियं,
संसारार्णवतारणं प्रियकरं ज्ञानैकबोधामृतम् ।
अज्ञानान्धविनाशिकेन विधिना शिष्यान् सदाभाविनं,
सोऽयं नो विदधातु तत्पदमिति निखिलेश्वरः मद्गुरुः ।।

अपनी माया के वशीभूत हो लीलामय मनुष्य शरीर धारण किए हुए, सभी को आह्लादित करने वाले, कैलाश में रहना जिन्हें प्रिय है, संसार सागर से पार उतारने वाले, सभी के हित-चिन्तक, ज्ञानामृत से परिपूर्ण, शिष्यों के अन्धकार को दूर करके उन्हें सद्गति देने वाले, गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द अपने उस परम स्वरूप से मुझे आप्लावित करें।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

कथ्य

स्तम्भ

विशेष

दीक्षा

सद्गुरुदेव

चिकित्सा

रिपोर्ताज

विवेचनात्मक

पाठकों के पत्र

❊ पत्रिका के **अगस्त ९३** अंक में प्रकाशित अनंग रति नमस्कार का प्रभाव देखकर चकित हूं। मैं एवं मेरी पत्नी उसे उसी माह से करते आ रहे हैं जिससे शरीर एवं मन पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं।

बलराम प्र० सिंह,
धनबाद

❊ होली विशेषांक में आपने जहां 'वशीकरण के अनोखे विधान' लेख के अन्तर्गत हरताल, अष्टगंध एवं गोरोचन का उल्लेख किया है वहां कदाचित् गोरोचन सही नहीं है, क्योंकि अष्टगंध में स्वयं ही गोरोचन मिली होती है। कृपया समाधान करें।

वेद प्रकाश सविता,
फर्रूखाबाद

- - आपके ध्यानाकर्षण के लिये धन्यवाद। यह आपकी सजगता को प्रकट करता है, किन्तु वस्तुतः गोरोचन का पुनः प्रयोग किया ही जाता है, अर्थात् गोरोचन दो भाग होनी आवश्यक है।

-सहा० सम्पादक

❊ देवगण जिसकी गोद में जन्मते पलते और प्रखर होते समर्पण करते हैं जो ऋद्धि-सिद्धियों के भण्डार हैं जिसने काल की विडम्बना से उपेक्षित तिरस्कृत-विकृत हुए समाज में गूढ़ तांत्रिक विद्याओं का पुनर्स्थापन किया। अकेले ही दधीचि, शंकराचार्य, व्यास, वशिष्ठ की भूमिका निभाई। हे युग पुरुष! आपको कोटि-कोटि हम अनुचरों का प्रणाम एवं हीरक जयन्ती की कोटिशः बधाई।

भुवनेश्वर भारतीय
(पत्रकार), दुर्ग

❊ **किस भाव से भजे सेवक**

किस भाव से भजे सेवक, गर भाव ही न बन पाए
पाप की गठरी हो लदी, कर्जों का बोझ बढ़ा जाए
प्राण हो पड़े सुप्त जीव के, भव बन्धन में जकड़ जाए
इस हाल में हे प्रभो! ना समझ जीव कहां जाए
युग युगान्तर में कभी तू! षोडश कला युक्त आए
हर जीव के कल्याण का, स्वर्ण युग चला आए
इस हाल में तेरी कृपा, गर जीव पर हो जाए
नेति-नेति हे प्रभो! जीवन ही सफल हो जाए

डॉ० एम० आर० वशिष्ट,
मण्डी (हि० प्र०)

❊ मैंने कुछ माह पूर्व से ही आपकी पत्रिका पढ़नी प्रारम्भ की है किन्तु लगने लगा है कि मुझे एक बार गुरुदेव का दर्शन करके अपने जीवन को पूर्णता देनी है . . . मेरा अन्तर्मन जो कहता है एवं सूचित करता है वैसी ही मेरी कलम लिखती है क्योंकि आपको लिखते समय बुद्धि-चातुर्य पास फटकता भी नहीं, यह मैंने अच्छी तरह परखा है।

प्रकाश घट्टे,
बुलढाणा

❊ हमने आपकी किताबें पढ़ी जो हमें प्रेरणादायक साबित हुई। हमें आपकी अधिक पुस्तकें पढ़ने की आकांक्षा है लेकिन हमें आपकी पुस्तकों की जानकारी नहीं है। इसके लिए आप यदि हमें कोई वृहद् सूचीपत्र भेजें तो हम अधिकाधिक स्नेही जनों को भी पाठक बना सकेंगे।

पूरणमल सैनी,
विराट नगर, जयपुर

*— पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा रचित एवं **मंत्र शक्ति केन्द्र जोधपुर** द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची आप- **'मंत्र शक्ति केन्द्र, हाइकोर्टकालोनी जोधपुर - ३४२००१ (राज०)'** द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ज्योतिष एवं भारतीय विद्याओं पर रचित पूज्यपाद गुरुदेव के विभिन्न ग्रंथ- **हिन्द पाकेट बुक्स, देहाती पुस्तक भंडार एवं आनंद पेपर बैक्स** आदि प्रमुख प्रकाशन संस्थानों द्वारा प्रकाशित हुए हैं जिन्हें आप सम्बन्धित प्रकाशन अथवा ए० एच० व्हीलर के बुक स्टालों के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।*

— सहा० सम्पादक

❊ इस घोर अंधकार में आपकी पत्रिका पढ़ने को मिली। एक पत्रिका पढ़ने के उपरान्त जितने अंक भी बाजार में उपलब्ध हो सके, सभी तुरन्त खरीद लिए। मुझे आशा की एक किरण दिखाई दे रही है।

प्रवीण कुमार वर्मा,
मुजफ्फरनगर

वर्ष १४ **अंक ६** **जून ९४**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक,गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

सम्पादकीय

पिछले माह का साधना सिद्धि विशेषांक प्रकाशित होने के बाद हमें इतने अधिक पत्रों के उत्तर देने पड़े जो कि पत्रिका कार्यालय का एक रिकार्ड रहा। साधकों द्वारा इस प्रकार पत्रिका के प्रत्येक अंक को हाथों-हाथ लिया जाना उनकी आत्मीयता और सजगता का ही परिचायक है। ऐसे समस्त पाठकों को मैं इन पंक्तियों के माध्यम से साधुवाद ज्ञापित करता हूं जिन्होंने ललक के साथ साधना-जगत में प्रवेश किया है तथा साधनाओं के क्षेत्र में आगे बढ़कर इसकी ऊंचाइयों को छूने के लिए आतुर हो गए हैं।

आप सभी के उत्साह एवं रुचि को देखते हुए ही यह निर्णय लिया गया कि अब वह समय आ गया है जब पाठकों एवं साधकों को उन साधनाओं से परिचित कराया जाए जो अभी तक गोपनीय व दुर्लभ रही हैं। यह **अलौकिक साधना विशेषांक** इसी चिन्तन का प्रतिफल है।

ऐसे अनेक योगी एवं विशिष्ट साधक जो पूज्यपाद गुरुदेव के शिष्य हैं एवं अभी तक गोपनीय साधनात्मक ज्ञान को प्रदान करने में हिचकिचाहट अनुभव करते रहे हैं उन्होंने भी यह अनुभव किया कि अब हम वह उचित समय आ गया है जब ऐसी साधनाएं सार्वजनिक की जा सकती हैं।

अलौकिक साधनाओं का तात्पर्य यही है कि ये साधनायें उन महायोगियों द्वारा प्रणीत हैं जिनकी प्रामाणिकता तो स्वतः ही सिद्ध है क्योंकि उनके साथ जो नाम जुड़े हैं वे अपने- आप में युग पुरुषों के नाम हैं— **महर्षि विश्वामित्र, महर्षि वशिष्ठ, गुरु गोरख नाथ** एवं सिद्धाश्रम के अनेक ज्ञात व अज्ञात योगियों - **परमहंस स्वामी चैतन्यानन्द जी, प्रख्यात तांत्रिक परमहंस त्रिजटा अघोरी जी** एवं अन्यान्य विभूतियां। क्या इनकी प्रामाणिकता पर संदेह किया जा सकता है? सामान्य प्रचलित साधनाओं से अलग हटकर इन साधनाओं के मंत्रों में जो तेजस्विता निहित है उससे यह 'अलौकिक' बन गई है और ऐसी साधनाओं के द्वारा ही साधक अपने जीवन में कुछ घटित कर सकता है तथा सामान्य जीवन जीते हुये भी ब्रह्माण्ड के रहस्यों को प्राप्त करने का अधिकारी बन सकता है।

गुरु - पूर्णिमा से पूर्व का अवसर अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है जब साधक गुरु - पूर्णिमा के अवसर पर सद्गुरुदेव द्वारा प्रदान किए जाने वाले तपस्यात्मक अंश को प्राप्त करने का सुपात्र बनने की प्रारम्भिक तैयारियांपूर्ण कर लेता है। गुरु- पूर्णिमा से पूर्व इस प्रकार की दुर्लभ साधनाएं प्राप्त होना वास्तव में साधकों का सौभाग्य है और उनके सौभाग्य के इन क्षणों में मैं उनका सहभागी हूं।

आपका

नंदकिशोर श्रीमाली

सिद्धाश्रमो त्वं
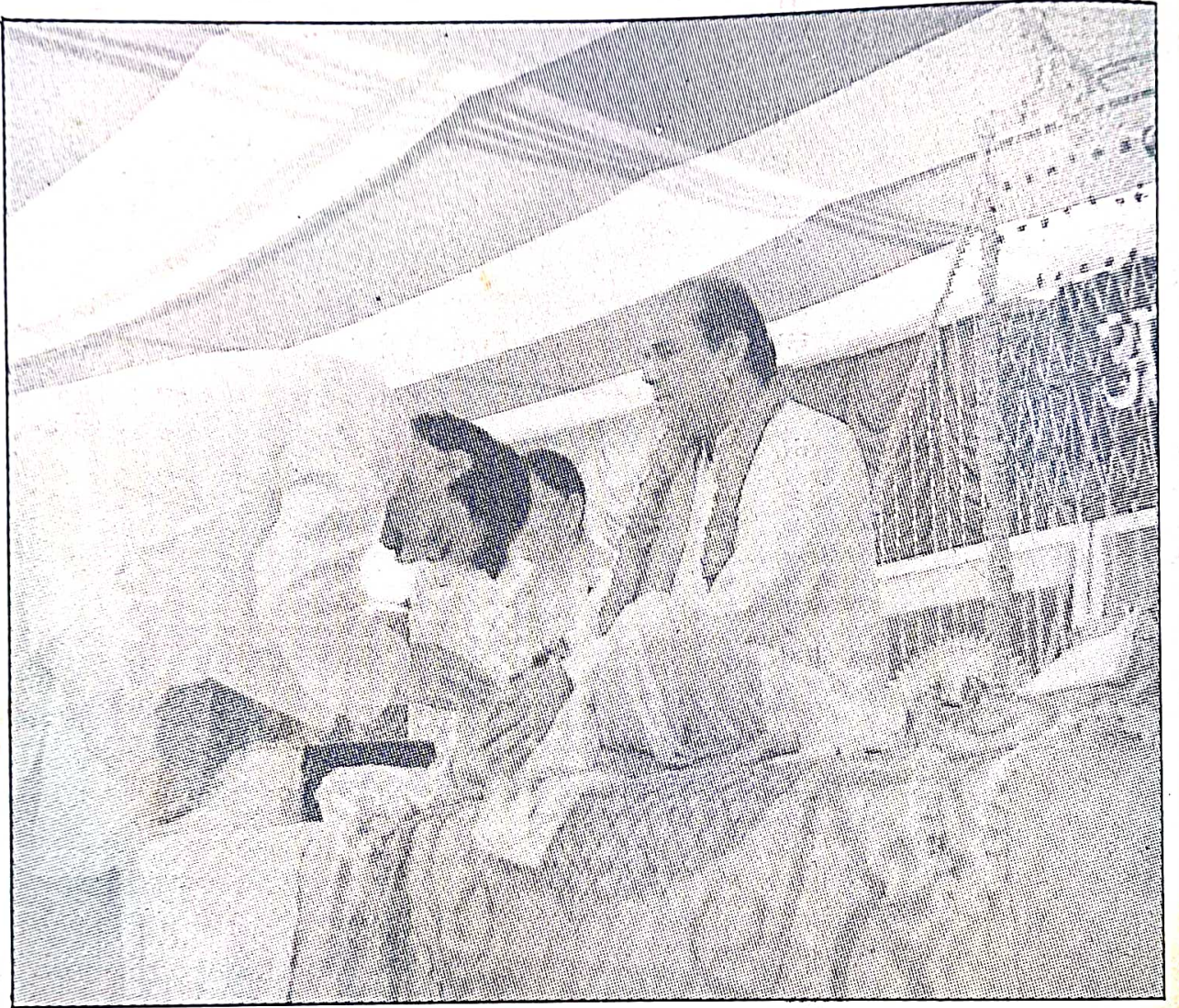
गुरुवं प्रणम्यं

प्रत्येक मनुष्य अपने "स्व" को पहिचानने एवं अपनी अस्मिता से परिचित होने के क्रम में किसी न किसी स्तर पर रुक कर पीछे देखने को विवश होता ही है क्योंकि जीवन की तीव्रता से आगे बढ़ती यात्रा के क्रम में भले ही भौतिक रूप से कुछ धन आदि अर्जित कर लिया जाए, सामाजिक रूप से अपनी पहचान बना ली जाए, पद-प्रतिष्ठा अर्जित कर ली जाए किन्तु जीवन के बीतते वर्ष स्वयं को भीतर से झकझोरते रहते ही हैं और एक प्रकार से उद्वेलित करते रहते हैं कि व्यक्ति अपने-आप को पहचान सकें, अपने-आप से जुड़ सके। **यदि कहा जाए कि सारी आपाधापी, तनाव और कुंठा का कारण यही स्वयं से अपरिचय है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।** जीवन में यह बोध किसी को युवावस्था में हो सकता है और किसी को प्रौढ़ावस्था में, किन्तु होता अवश्य है कि जब अपना सांसारिक परिचय, सारा भौतिक अस्तित्व व्यर्थ लगने लगता है और तब एक क्षण ठिठक कर पीछे देखने की विवशता होती हैं।

संसार के प्रत्येक भाग के मनीषियों ने, विचारकों ने पीछे मुड़ कर इस प्रकार देखा, अपने उद्गम को समझना चाहा और भारतीय मनीषियों ने भी ऐसा ही किया। उपलब्ध साहित्य को पलटा, बिखरी कड़ियों को समेटना चाहा। यह अनुभव किया कि उनका परिचय, उनका अस्तित्व केवल उनके जन्मदाता अथवा पूर्वजों तक ही सीमित नहीं, उससे भी कहीं और दूर तक विस्तृत है और तब यही बिखरी कड़ियां कभी उन्हें 'गोत्र' की धारणा तक ले गयी, कभी इस चिन्तन तक कि प्रत्येक जीव उसी अनिर्वचनीय प्रकाश पुञ्ज से बिखरा एक कण है जिसे उन्होंने 'ब्रह्म' की संज्ञा दी, और जिसे नित्य कहाहै।

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता,
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याता,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।।

हम अनुभव करते हैं कि हम भोग - सुख प्राप्त कर रहें हैं परन्तु सही अर्थों में वे भोग ही हमारा शोषण कर लेते हैं। हम साधना या तप नहीं कर पाते वरन ताप ही हमें जला कर नष्ट कर देता है। हम काल को व्यतीत करने का चिन्तन करते हैं परन्तु काल स्वयं हमें समाप्त कर देता है। सही अर्थों में तो हम काया को अत्यधिक जीर्ण और रोग युक्त बनाकर दुःख ही उठाते रह जाते हैं।

किन्तु जो नित्य व अक्षय स्रोत से उत्पन्न है उसका कभी क्षय तो हो ही नहीं सकता, फिर बार-बार जन्म क्यों है? मृत्यु क्यों है? रोग क्यों है? पीड़ा, दुःख, तनाव, व्यथा क्यों है? इन सभी प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ और उस सार्थकता को ढूंढने का प्रयास हुआ जहां व्यक्ति अपने मूल आनन्दमय स्वरूप में अवस्थित हो सके, क्योंकि मूलतः प्रत्येक जीव आनन्द स्वरूप तो है ही निष्पाप, निर्मल होते हुये समान रूप से जीवन में उन सभी उपलब्धियों को प्राप्त करने का अधिकारी है जो किसी अन्य को प्राप्त हों। जीवन का ऐसा चिन्तन, ऐसी भाव-भूमि, ऐसी पावनता ही 'सिद्धाश्रम' है, जिसकी अन्य रूप में चर्चा 'ज्ञानगंज' के नाम से विख्यात है, क्योंकि आनन्द और ज्ञान परस्पर दो भिन्न स्थितियां है ही नहीं।

हम जब अपना अस्तित्व खोजते हैं और स्वयं को किसी ऋषि की सन्तान गर्व से घोषित करते हैं तभी ऐसा प्रश्न उठता है कि क्या पुनः उस स्थिति तक, उस प्रारम्भिक बिन्दु तक पहुंचा जा सकता है? वहां तक पहुंचने का अर्थ हमारे जीवन में महत्वपूर्ण क्यों है? वह कौन सी चेतना है जो हमें उस बिन्दु तक पहुंचा सकती है, और हम वहां किस प्रकार से अवस्थित होकर क्या प्राप्त कर सकते हैं? किस प्रकार से जीवन को सार्थक कर सकते है? **क्योंकि ऐसे ही प्रश्नों पर विचार, चिन्तन व मनन के साथ जीवन में सक्रिय होना सिद्धाश्रम की यथार्थ भावना है,** अपने-आप को ऋषि गोत्र से जुड़ा घोषित करने से गर्व की सार्थकता है अन्यथा वे पवित्र नाम तो विशेष अवसरों पर किए जाने वाले सामान्य उच्चारण बनकर ही रह गए हैं।

आज जबकि **सिद्धाश्रम जयन्ती** का अवसर समक्ष उपस्थित हुआ है तब इसी मूल भावना को समझना व इसको

पूर्ण सम्मान देते हुये हृदयस्थ करना ही यथार्थतः सिद्धाश्रम का पुण्य स्मरण होगा, अपने गोत्र के परम पुरुषों का पावन वन्दन होगा। सिद्धाश्रम केवल सिद्ध पुरुषों की दिव्य स्थली एवं उच्चकोटि की साधनाओं की क्रिया-स्थली अथवा एक सुरम्य स्थली मात्र ही नहीं है, सिद्धाश्रम तो एक मूलतः एक अलौकिक भाव-भूमि है जिसका प्रारम्भ प्रथमतः साधक के हृदय व मानस में होता है और जिसकी पूर्णता जीवन में ब्रह्मत्व दर्शन से होती है। यह तो एक चेतना और आत्म जागृति की निरन्तर यात्रा है जिसका प्रारम्भ और जिसकी यात्रा का अधिकांश भाग स्वयं अपने अन्दर ही पूर्ण करना होता है।

कदाचित् यह चर्चा और ऐसा सब कुछ कहना आज इसलिए आवश्यक हो रहा है कि जब पूज्यपाद गुरुदेव के वापस सिद्धाश्रम लौट जाने में अब अधिक समय नहीं रह गया है और जब वे पुनः आह्वान कर रहे हैं कि उनके साथ कुछ श्रेष्ठ साधक उस दिव्य स्थली तक चल सके, तव यह हमारा दायित्व हो जाता है कि स्वयं को टटोल कर देखें कि क्या हम उस पावन स्थली तक चलने के लिये एक स्तर प्राप्त कर सके हैं? जीवन में किसी उच्चता, तपोमयता और चैतन्यता का कुछ भी स्पर्श कर सके हैं? क्या अपने-आप को सर्वथा निर्द्वन्द्व, उन्मुक्त और जीवन के प्रति ऐसे आग्रह से युक्त बन सकें हैं जो आग्रह अपनी अस्मिता की खोज का मूल आग्रह हो। इन्हीं सब आग्रहों और भावभूमियों का समन्वित रूप ही सिद्धाश्रम-यात्रा की पूर्व तैयारी है।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा सिद्धाश्रम की अधिक प्रचलित संज्ञा 'ज्ञान गंज' रही है और इसी संज्ञा से मानव जीवन में ज्ञान की महत्ता, ज्ञान व आनन्द की एकता का बोध होता है। उसी बोध के पश्चात् स्पष्ट होता है कि जीवन में गुरु का क्या अर्थ है? क्योंकि शास्त्रों में गुरुदेव को विराट व्यापक ब्रह्म स्वरूप ही नहीं साक्षात् परब्रह्म के रूप में वन्दनीय कहने के साथ ही साथ उन्हें 'केवलं ज्ञानमूर्ति' भी कहा गया है। गुरुदेव का स्वरूप बोध प्रदाता ज्ञानमूर्ति के रूप में ही तो इस जगत में प्रतिष्ठित है। शेष जो कुछ उनके साथ संलग्न है वह आवरण है। उनका केवल ज्ञानमय स्वरूप ही जीवन में वास्तविक आनन्द का बोध कराने में समर्थ है।

इसी कारणवश शास्त्रों में गुरुदेव को ही **साक्षात् सिद्धाश्रम** की संज्ञा दी गई है। जो ज्ञान की सम्पूर्ण चेतना, आनन्द की समस्त भावभूमियां लेकर हमारे-आपके मध्य गतिशील हैं, क्या वे सिद्धाश्रम से कम वन्दनीय हैं? वे यथार्थ में सिद्धाश्रम की मानव रूप में प्रस्तुति ही हैं और यही गुरुदेव का नितान्त आत्मस्वरूप है। उनके इसी स्वरूप को आत्मसात करना, उनके इसी स्वरूप में रचपच जाना अपनी अस्मिता से परिचित होना है, तथा सिद्धाश्रम को प्राप्त करना भी है।

ज्ञान के दिव्य आलोक में न केवल हम पूज्य गुरुदेव का मंगलमय और सच्चिदानन्दमय स्वरूप का दर्शन कर सकते हैं वरन् ज्ञान के इसी आलोक में फिर यह भी स्पष्ट देख सकते है कि हमारा स्वयं का अस्तित्व भी मूल में जाकर आनन्दमय ही है। आनन्दमयता की पहचान होना, आनन्दमयता से परिचित होना तथा आनन्द के ऐसे सागर में सदैव निमग्न रहना ही यथार्थ में सिद्धाश्रम है, ऐसा 'सिद्धाश्रम' गुरु के प्रवाह से पहले हमारे अन्दर स्थापित होगा तथा बाद में ही हम उसका साकार चाक्षुषी दर्शन कर सकेंगे।

यह एक संक्रमण का काल है कि जब पूज्य गुरुदेव वापस सिद्धाश्रम जाने के लिये उद्धत हो गये हैं, और उनके हजारों शिष्यों का आग्रह दिन-प्रतिदिन प्रबल होता जा रहा है कि वे कैसे अपने गुरुदेव को रोक सकें, उनका अभी कुछ दिन और सान्निध्य प्राप्त कर सकें तथा अपने जीवन को संवार सकें। ऐसे साधकों में निश्चय ही अनेक साधक ऐसे भी हैं जो अपना सर्वस्व लुटा कर भी गुरुदेव को रोक लेना ही चाहते हैं किन्तु उनके प्रयास तभी सार्थक होंगे, तभी वे निश्चित रूप से कुछ घटित कर पाने में समर्थ होंगे जब वे गुरुदेव की मूलचेतना से परिचय प्राप्त करने के लिये आगे बढ़ेंगे और व्यर्थ का दिखावा छद्म और निरर्थक आवरण त्याग कर उनके ज्ञानमय स्वरूप से जुड़ने का अपना संकल्प स्पष्ट करेंगे।

गुरु को अपने शिष्य से कोई भी अपेक्षा या कामना नहीं रहती क्योंकि गुरुपद तो सर्वथा निर्विकल्प पद है। जब कामना शेष नहीं रह जाती और करुणा ही शेष रह जाती है तभी तो गुरुत्व का प्रादुर्भाव होता है। उस करुणा के वशीभूत होकर शेष रह जाती है तो केवल एक ही इच्छा कि कैसे मेरा शिष्य पूर्णता प्राप्त करेगा? यह पूर्णता ज्ञानमय होकर प्राप्त की जा सकती है और तब ऐसे ज्ञानमय शिष्य में ही सद्गुरु आकर समाहित होते हैं क्योंकि जल में ही जल समा सकता है और वही निर्मलता, वैसी ही शीतलता शिष्य को अपनी चेतना में स्पष्ट करने के लिये प्रयत्नशील होना पड़ता है। इस प्रकार से सर्वाधिक लाभ भी शिष्य को ही होता है क्योंकि तब वह और गुरु दो भिन्न व्यक्तित्व नहीं रह जाते। तब आनन्द उसके जीवन में कोई दुर्लभ वस्तु नहीं रह जाती। **तब उसे शीतलता प्राप्त करने के लिये नहीं वरन् स्वयं शीतलता वितरित करने के लिये गतिशील होना पड़ता है, जो जीवन का पुण्य होता है।** जीवन में ऐसे पुण्य प्राप्त करने के लिए, सिद्धाश्रम को अपने हृदय में उतारने के लिए, सिद्धाश्रम की चेतना में एकाकार हो जाने के लिए गुरु चरण ही एकमात्र आधार है।

नारायणो त्वं निखिलेश्वरो त्वं, माता-पिता गुरु आत्म त्वमेवं
ब्रह्मा त्वं विष्णुच रुद्र स्त्वमेवं, सिद्धाश्रमो त्वं गुरुवं प्रणम्यं।।

जीवन पग-पग साधना है

साधना-सूत्र जानने के इच्छुक जिज्ञासु साधकों एवं पाठकों की रुचि के अनुकूल पिछले माह प्रकाशित साधना - सिद्धि विशेषांक के क्रम में यह महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किया जा रहा है।

जीवन में गुरु की आवश्यकता तथा साधना के मध्य उनका क्या विशिष्ट स्थान है, उनकी प्रामाणिक पूजन विधि क्या है इसी का सांगोपांग अध्ययन प्रस्तुत करता विवेचनात्मक लेख।

❋ ❋ ❋

जीवन का यदि विवेचन करने की कोशिश करें तो व्यक्ति को जितना अधिक परिश्रम निर्माण के लिये करना पड़ता है उससे कहीं अधिक अपनी बाधाओं का नाश करने के लिये करना पड़ता है। व्यवहारिक जीवन में इस बात को पग-पग पर अनुभव किया जा सकता है और यही बात साधना जगत में भी शत-प्रतिशत् सत्य उतरती है। **वस्तुतः साधना जगत एवं भौतिक जगत दो भिन्न-भिन्न जगत हैं भी नहीं।** व्यक्ति को अपना भौतिक जीवन अर्थात् दैनिक जीवन संवारने के लिये जिस प्रकार प्रयास करना पड़ता है उसी प्रकार आध्यात्मिक जगत में भी परिश्रम करना पड़ता ही है।

साधनायें चमत्कार नहीं घटित करतीं, भले ही साधनाओं का अर्थ समाज में 'चमत्कार' बनकर बैठ गया हो। साधक जिस अनुपात में अपनी साधना के प्रति आग्रहशील व समर्पण युक्त होता है, वे उसी अनुपात में फलदायक होती हैं। यह तो एक विडम्बना और विसंगति से भरा चिन्तन है कि व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अनेक छोटी-छोटी बातों के लिये अपने मानसिक व शारीरिक श्रम का घोर दुरुपयोग करता है किन्तु उतना ही परिश्रम कर साधना से संयुक्त नहीं होता। इसके मूल में केवल यही असन्तुलित व अपूर्ण चिन्तन है कि साधना के द्वारा जो कुछ भी प्राप्त होगा, वह तुरन्त प्राप्त होगा और जब ऐसा नहीं हो पाता तो आलोचनाएं, हताशा और खेद ही शेष रह जाता है।

केवल साधना ही नहीं यह सम्पूर्ण जीवन पग-पग पर साधना तुल्य ही है। व्यक्ति एक दिन परिश्रम करके भोजन बनाकर ग्रहण करता है और सायं पुनः भोजन करने की आवश्यकता क्या नहीं पड़ती? क्या एक रात्रि के विश्राम के बाद फिर कभी विश्राम करने की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती? क्या जीवन में धन एक बार उपार्जित कर लें तो सदैव के लिये चिंतामुक्त हो जाते हैं? जब जीवन के ये क्रिया-कलाप नहीं भंग होते तो साधना को ही केवल एक बार की जाने वाली घटना क्यों मान लिया जाता है। जीवन के ये नित्य क्रिया-कलाप अपनी अविच्छिन्नता से प्रकट करते है कि इसी से जीवन में गतिशीलता

और आनन्द का प्रवाह है। इसी प्रकार नित्य प्रति साधनारत रहना, साधनामय होना ही जीवन का आनन्द और जीवन की गति है। नित्य साधना से तात्पर्य केवल दैनिक क्रिया-कलाप छोड़कर आसन पर बैठ जाने तक ही नहीं सीमित किया जा सकता। साधनामयता का तात्पर्य यह नहीं होता। साधनामय होने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि व्यक्ति हर क्षण अपने इष्ट के, अपने जीवन के मूल्यों के प्रति चिन्तनयुक्त रहे।

साधना कभी भी किसी भी बिन्दु पर आकर समाप्त होने की प्रक्रिया नहीं है। साधना का एक सोपान समाप्त होते ही दूसरा सोपान प्रारम्भ हो ही जाता है और इस प्रकार जीवन में निरन्तर विकास की सम्भावनाएं बनती रहती हैं। एक पद्धति के उपरांत दूसरी पद्धति, मंत्रात्मक साधना के उपरान्त तंत्रात्मक साधनाएं, एक मत के अनुसार साधना करने के उपरान्त दूसरे मत से साधना करने की क्रिया ही साधक को योग्यतम साधक के रूप में परिवर्तित करती रहती है और साधक धीमे-धीमे सूक्ष्म से विशाल की ओर गतिशील होता हुआ अपनी लघु देह के माध्यम से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विस्तारित होने की क्षमता प्राप्त कर लेता है क्योंकि प्रत्येक साधना (यदि वह सही ढंग से की गई हो) विस्तारित होकर साधक के प्राणों को झंकृत करती ही है और प्राणों के झंकृत होने से ही साधक के अन्दर विस्फोट की क्रियाएं आरम्भ हो जाती है।

साधना के इस क्रम पर पहुंच कर ही साधक उस आनन्द और उस श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकता है जो प्राप्त करना उसके जीवन का लक्ष्य होता है। **प्रायः कई साधक अनुभव करते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में अनेक साधनायें सम्पन्न की हैं, श्रेष्ठ दीक्षायें प्राप्त की है किन्तु फिर भी कुछ अभाव अनुभव कर रहे हैं उनके इस अभाव और खालीपन का रहस्य इसी बात में छुपा है कि उन्होंने दीक्षा अथवा साधना को एक घटना मानकर भुला दिया होता है।** जबकि जैसा कि प्रारम्भ में कहा कि यह तो पग-पग की घटना है, पग-पग का आनन्द है। एक के बाद एक नये खुलते रहस्य हैं और साधक उनमें अभिभूत होता जाता है, एक सफलता के बाद दूसरी सफलता की ओर उन्मुख होता जाता है। तब उसके लिये यह मार्ग कष्टदायक नहीं होता। वास्तव में यह मार्ग कष्टदायक होता भी नहीं। किन्तु जब तक साधक प्रारम्भिक चरण पूर्ण नहीं कर लेता तब तक आगे की प्रक्रियाओं में लाभ भी नहीं प्राप्त कर सकता।

जहां साधना-सिद्धि की बात आती है, साधना में उच्च स्तर पर पहुंचने की लालसा मन में जन्म लेती है, फिर वहां गुरु का बल प्राप्त करना आवश्यक और अनिवार्य हो ही जाता है। साधक गुरु-साधना को भी अपने जीवन का अंग बना सकता है और यदि उसकी रुचि किसी अन्य साधना में हो तब भी गुरु-पूजन और गुरु-साधना की महत्ता अनिवार्य होती है। जिस प्रकार गुरु साधना हेतु साधक अलग-अलग पद्धतियों को प्रयोग में ला सकता है, उसी प्रकार षोडशोपचार पूजन का एक विशेष महत्व होता है, विशेषकर लक्ष्मी साधनाओं अथवा तीव्र साधनाओं में यदि साधना से पूर्व **षोडशोपचार गुरु पूजन** सम्पन्न कर लिया जाता है तो वह निश्चित सिद्धि प्रदायक होता है। पंचोपचार पूजन का विवरण हमने पत्रिका के पिछले अंक में दिया था। समय की सीमितता की दशा में (अथवा जहां पंचोपचार पूजन निर्दिष्ट हो, ऐसी स्थितियाँ छोड़कर) साधक को यथा सम्भव अपनी साधनाओं से पूर्व गुरु का षोडशोपचार पूजन ही करना चाहिये, जिससे गुरुदेव की पूर्ण तेजस्विता, बल व आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

पाठकों की सुविधा के लिये हम यहां संक्षेप में षोडशोपचार गुरु पूजन प्रस्तुत कर रहे हैं। षोडशोपचार पूजन करने से पूर्व साधक के पास **ताम्रपत्र पर अंकित गुरु यंत्र-चित्र, पंचपात्र,** पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, गोली, यदि सम्भव हो तो गंगाजल, ताम्बूल, सुपारी, इत्यादि वस्तुयें होनी आवश्यक हैं। साधना के प्रारम्भ में करने के अतिरिक्त साधक अपनी रुचि के अनुसार बृहस्पतिवार अथवा सोमवार को भी इस पूजन को सम्पन्न कर यदि गुरुमंत्र का जप करे तो उसे पूर्ण गुरु - साधना का लाभ प्राप्त होता है। इस षोडशोपचार पूजन के सोलह क्रम इस प्रकार हैं —

१. पाद्यम् (चरण धोने के लिए जल देना)

गंगोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
पाद्यं समर्पयामि भगवते श्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

२. अर्घ्यम्

दाहिनी हथेली में जल लेकर उसमें पुष्प, चावल एवं चंदन रखकर निम्न मंत्र को बोलते हुए गुरु यंत्र के समक्ष चढ़ा दें।

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।।
अर्घ्यं समर्पयामि भगवते श्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

३. आचमनीयम्

पात्र से आचमनी में जल लेकर निम्न मंत्र बोल कर जल छोड़ दें।

सर्वतीर्थ समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलं
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण जगदीश्वर
आचमनीयं समर्पयामि भगवते श्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

४. स्नानीयम्

आचमनी में जल लेकर निम्न मंत्रोच्चारण पूर्वक वह जल यंत्र के समक्ष स्थापित किसी ताम्रपात्र में छोड़ दें अथवा यंत्र पर चढ़ाकर वस्त्र से पोंछ दें।

गंगा सरस्वती रेखा पयोष्णि नर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मायादेव तथा शांतिं कुरुष्व मे।।
स्नानम् समर्पयामि भगवतेश्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

५. वस्त्रम्

मौली का एक छोटा टुकड़ा निम्न मंत्र के साथ वस्त्र की भावना करते हुए यंत्र पर चढ़ायें।

सर्व भूषादिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्यतां भुवनेश्वर।।
वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि भगवतेश्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

६. भूषणम्

गुरुयंत्र के समक्ष **चार गुरु कृपा फल** भूषण के रूप में चढ़ायें एवं हाथ जोड़ कर प्रणाम करें।

भूषणं समर्पयामि भगवतेश्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

७. गंधम्

गुरु यंत्र पर निम्न मंत्र के द्वारा अष्टगंध लगाएं

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्य गन्धयढ्य सुमनोहरं।
चन्दनं च मया दत्तं गृहाण भुवनेश्वर।।
गंधं समर्पयामि भगवतेश्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

८. पुष्पम्

गुरुयंत्र पर निम्न मंत्रों के द्वारा पुष्प भेंट करें तथा गुरु चित्र पर सुगन्धित पुष्पों की माला चढ़ायें।

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः
शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च
माला समर्पयामि भगवते श्री निखिलेश्वरनंदाय नमः

९. धूपम्

सुगन्धित धूप प्रज्ज्वलित कर निम्न मंत्र से समर्पित करें।

वनस्पति रसोद्भूतः गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
धूपं आघ्रापयामि भगवते श्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

१०. दीपम्

शुद्ध घी का दीपक लगाकर निम्न मंत्रोच्चार पूर्वक पूज्य गुरुदेव के चरणों में प्रदर्शित करें।

आज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपम् गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह।
दीपम् दर्शयामि भगवतेश्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

११. नैवेद्यम्

दूध का बना कोई भी शुद्ध मिष्ठान भेंट कर निम्न मंत्रों से समर्पित करें।

शर्कराधृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
नैवेद्यं निवेदयामि भगवतेश्री निखिलेश्वरानंदाय नमः

१२. आचमनीयम्

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा

इन पांच संदर्भों की बोल कर पांच आचमनी जल यंत्र के सामने के पात्र मे छोड़े।

१३. ताम्बूलम्

एक ताम्बूल (पान का पत्ता) लेकर उस पर एक छोटी सुपारी मौली बांध कर पूज्य गुरुदेव के चरणों में समर्पित करें।

जीवब्रह्मैक्य विज्ञान तृप्ताय गुरु मूर्तये।
जीवनन्मुक्तिसुखाकरं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
ताम्बूलं निवेदयामि भगवते श्री निखिलेश्वरनंदाय नमः

१४. स्तवन पाठ

उपरोक्त पूजन के पश्चात् निम्न स्तवन का पाठ करें।

महारोगे महोत्पाते महादेवी महाभये।
महाअरौ महापापे स्मृता रक्षति पादुका।।
तेनाधीनं स्मृतं ज्ञानं दुष्टं पर्त्तं च पूजितं।
जिह्वायां वर्तत यस्य श्री परो पादुका स्मृतिः।।
भोगः भोगार्थिनां ब्रह्म वैष्णवी पद कांक्षिणाम्
भक्ति रेव गुरौ देवि 'नान्यः पंथा' इतिश्रुतिः।।

उपरोक्त स्तवन पाठ कर **लघु गुरु पादुका यंत्र** पर श्वेत चंदन व अक्षत चढ़ाएं।

१५. तर्पणम्

एक ताम्रपात्र में जल कुंकुम, अक्षत, बिल्वपत्र व **१६ सिद्धि फल** लेकर यंत्र के समक्ष चढ़ायें जो वास्तव में जीवन में षोडशकला युक्त होने की प्रार्थना के प्रतीक है।

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिं मया दत्त गृहाण गुरुनायक।।

१६. नमस्कारम्

इस षोडशोपचार पूजन के अंत में सम्पूर्ण पूजन को पूज्य गुरुदेव को समर्पित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

देवनाथ गुरौस्वामिन् दैशिक स्वात्मनायक
त्राहि-त्राहि कृपा सिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु
अनया पूजनया श्री गुरुः प्रीयाताम्।
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु

यदि नियमित रूप से षोडशोपचार पूजन करने के उपरांत साधक पांच माला गुरु मंत्र का जप केवल **गुरु रहस्य माला** से करे तो उसे अलौकिक व विचित्र अनुभूतियां प्राप्त होने का क्रम बनने लगता है तथा उसकी कुण्डलिनी में स्फुरण आरम्भ हो जाता है। गुरु पूर्णिमा से पूर्व ऐसे साधना विधान को प्राप्त करना वास्तव में पाठकों का सौभाग्य ही है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

की वार्षिक सदस्यता

यही तो है हिन्दी जगत की वह मासिक पत्रिका जो आपको प्रदान करती है, स्वस्थ मनोरंजन के साथ- साथ अपने भारतीय ज्ञान की परम्परा. . . जिनका ठोस आधार है -- ज्ञात-अज्ञात शास्त्रों से ढूंढकर लाई गई एक से एक दुर्लभ और अचूक साधनाएं. . . जिनके द्वारा सदैव आपके जीवन में धन- सम्पदा, सुख-शांति और आनन्द की रस धारा बहती ही रहे. . . ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, कथाएं, तंत्र-मंत्र के रहस्य, क्या कुछ नहीं, और ये सब प्रतिमाह निरंतर. . . आपको चिंतन और ज्ञान वर्धन की मिली-जुली दुनिया में ले जाती हुई. . .

एक उपहार विशेषतः आपके लिए

मनोवाच्छित कार्य सिद्धि यंत्र

वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/- , डाक खर्च सहित १६८/-

सम्पर्क

गुरुधाम ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर(राज.),फोन-०२९१-३२२०६

नेपोलियन का भाग्य लिखने वाला तांती साधक

बहुत कम लोगों को ही ज्ञान होगा कि नेपोलियन का बचपन अत्यंत निर्धनता और कष्टप्रद रूप से ही बीता। एक प्रकार से वह अपने जीवन से हार मान चुका था। उसकी एक ही तमन्ना थी कि किसी पानी के जहाज पर उसे काम मिल जाए तो वह भारत पहुंच जाए और किसी ऐसे साधु से मिले जो भविष्य दर्शन में माहिर हो, जो उसके भाग्य को पढ़ सके, जो बता सके कि उसकी किस्मत में क्या लिखा है?

भाग्य ने पलटा खाया और उस असहाय युवक ने अपनी महत्वाकांक्षा के बल पर राजनीति में प्रवेश ले लिया और धूमकेतु की तरह आगे बढ़ता ही गया। भरी जवानी में उसने सबसे कम समय में फ्रांस का अधिपति बनकर दिखा दिया कि संकल्प शक्ति के बल पर कुछ भी सम्भव है।

परन्तु उसकी तो असंख्य इच्छाएं थीं। वह तो पूरे संसार को अपने पांवों तले रौंदने का स्वप्न देख रहा था, अतः उसने अपनी विजय यात्रा आरम्भ की। जर्मनी को रौंदा, बेल्जियम को परास्त किया और अब उसकी नजर ब्रिटिश सिंहासन पर थी। अपनी अचूक व्यूह रचना से वह लगातार सफल होता भी जा रहा था।

इसी बीच उसका प्रेम केथराइन नामक अपूर्व सुन्दरी से हुआ, पर उसे इतना समय ही नहीं मिलता था कि वह प्रेम सम्वन्ध आगे बढ़ा सके। निरन्तर युद्ध में व्यस्त रहता हुआ नेपोलियन घोड़े की पीठ पर से ही कभी-कभी पत्र लिखकर अपनी प्रिया के पास भेज देता था। वे पत्र आज भी प्रेम-अभिव्यक्ति के श्रेष्ठतम उदाहरण हैं।

और एक दिन ऐसा आया कि यूरोप के लगभग सभी देश उसके पांवों में गिरकर अपनी पराजय स्वीकार कर चुके थे। अब उसकी आकांक्षा रूस पर विजय पाने की थी परन्तु इसमें सबसे बड़ी बाधा आल्पस पर्वत था। उस समय तक कोई भी आल्पस को पार नहीं कर सका था, पर नेपोलियन ने निश्चय कर लिया कि मैं आल्पस को पार कर रूस को अपने अधीन कर उसे केथराइन को प्रेम-उपहार के रूप में भेंट कर दूंगा। इससे बड़ी सौगात और हो भी क्या सकती थी?

पर नेपोलियन मन के किसी कोने में सशंकित अवश्य था कि ऐसा न हो कि आल्पस की बर्फ में ही सब योद्धा समाप्त हो जाएं। एक बार फिर उसे किसी ऐसे योगी की याद हो आई जो उसका भविष्य बांच सकता हो। उसने अपने मन की बात सेनापति को भी बताई।

सेनापति ने सूचना दी कि फ्रांस में एक भारतीय तांत्रिक आए हुए हैं, उनका नाम **तांती बाबा** है, और सुना है कि वे पुस्तक के पन्नों की भांति भविष्य को भी बांच लेते हैं।

नेपोलियन ने तुरन्त घोड़े दौड़ाये, उस साधु को लाने के लिए। एक सुनसान स्थान पर नदी के किनारे वह तांत्रिक मस्ती से लेटा हुआ था। सैनिकों ने उसे खोज निकाला और सम्राट का सन्देश सुना दिया। तांती साधक ने आग उगलने वाली नजरों से उन्हें घूरा, उसकी आंखों से कुछ ऐसी लपक निकल रही थी कि सैनिक भी अज्ञात आशंका से डर गए। तांती ने कहा, "मैं किसी का गुलाम नहीं, मुझे नहीं आना है।"

सैनिकों को खाली हाथ लौटते देख नेपोलियन तिलमिला गया। सेनापति को उसने आदेश दिया कि जैसे भी हो उस भारतीय तांत्रिक को यहां लाया जाए, अगर सीधे-सीधे नहीं माने तो बांध कर ही लाया जाए।

सेनापति के जाकर निवेदन करने पर भी तांती कुछ बोला नहीं, उल्टे सैनिकों के समक्ष ही सेनापति का अपमान कर दिया। सेनापति गुस्से से लाल हो उठा और उसने जबरदस्ती तांती साधक को घोड़े की पीठ पर बांधकर नेपोलियन के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

नेपोलियन उस समय रूस पर हमला करने की योजना को अन्तिम रूप देने में व्यस्त था। नजरें उठाकर उसने सामने देखा कि एक नंग-धड़ंग सा सन्यासी खड़ा है। **लम्बा-चौड़ा शरीर, पीछे की ओर पैरों तक छूती हुई लम्बी जटाएं, सारे शरीर पर राख मली हुई, वस्त्र के नाम पर मात्र एक छोटी सी लंगोटी पहिने हुए और क्रोध से लाल सुर्ख बड़ी-बड़ी आंखें।**

नेपोलियन ने नम्रता से कहा, "मैं आप को प्रणाम करता हूं, और मैं रूस पर हमला करने जा रहा हूं। मुझे विश्वास है कि मैं अवश्य ही जीत जाऊंगा, पर मैं चाहता हूं आप मेरा भाग्य बांच कर बता दें।"

तांती ने एक नजर पूरी सभा में बैठे हुए सेनापतियों को देखा। पर्दे के पार उसने देखा कि हजारों सैनिक युद्धोन्माद से ग्रस्त हैं और उन सेनापतियों के मध्य एक ऐसा व्यक्तित्व बैठा है जो वास्तव में ही योद्धा है, जिसकी आंखों में विश्व-विजय का सपना है, पर जो अत्यधिक दम्भी, हठी और युद्धोन्माद से ग्रसित है।

नेपोलियन उतावला हो रहा था, पुनः पूछा, "महाराज! मैं नेपोलियन हूं। मैंने पूरे यूरोप को विजित किया है। निश्चय ही मेरा भविष्य अत्यधिक सुरक्षित और शानदार है, फिर भी मैं आपके मुख से सुनना चाहता हूं।"

एक क्षण के लिए तांती ने नेपोलियन को घूरा और फिर बोला, "नेपोलियन! तुम दुष्ट और रणपिपासु हो। तुम कभी भी और किसी भी हालत में रूस को फतह नहीं कर सकोगे। तुम्हारी सेना आलपस के बर्फीले तूफान में दबकर समाप्त हो जाएंगी और अगले कुछ ही दिनों में तुम ब्रिटेन के सैनिकों के हाथों गिरफ्तार हो जाओगे। आगे का तुम्हारा सम्पूर्ण जीवन जेल में ही व्यतीत होगा।"

सारी सभा यह सुनकर स्तब्ध रह गई। एक सर्वथा अप्रत्याशित और उल्टी भविष्यवाणी, जिसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। एक विश्व-विजेता को ब्रिटेन जैसा अदना देश क्या गिरफ्तार कर सकेगा? किसमें ताकत है जो नेपोलियन को हाथ भी लगा सके, और सबने देखा कि क्रोध में दहकता हुआ, अपमान से दग्ध नेपोलियन सिंहासन से उठ खड़ा हुआ। मुट्ठियां भिंच गयीं, आंखों से अंगारे बरसने लगे और हाथ कमर में बंधी तलवार की मूठ पर जा पहुंचा। पैर पटकता हुआ नेपोलियन गुर्राया, "दुष्ट सन्यासी! तू ढोंगी है, तू क्या मेरा भाग्य पढ़ेगा? अब तो मैं ही तेरे भाग्य को पढ़ूंगा। जेल में मैं नहीं तू जीवन भर रहेगा . . ." यह कहते-कहते नेपोलियन ने आदेश दिया कि इसे कैद में डाल दिया जाए।

तांती साधक किञ्चित भी विचलित नहीं हुआ। बोला, "**तू भारतीय योगियों और वहां की तांत्रिक साधना को नहीं समझ सकता। मैंने जो कुछ कहा है सही कहा है। इतना मैं और जोड़ देता हूं कि जेल में ही तेरी मृत्यु होगी और भूख से तड़फ-तड़फ कर तू अपने प्राण छोड़ेगा।**"

सुनकर सारी सभा सन्न रह गयी, पर तब तक सैनिक तांती को घसीटते हुए बाहर ले गए और नेपोलियन ने भी क्रोध में सभा को विसर्जित कर दिया।

पर इतिहास साक्षी है कि इसके बाद नेपोलियन ने रूस पर चढ़ाई की और बर्फीले तूफान में उसकी अधिकांश सेना समाप्त हो गयी। थका-हारा सा जब वह वापस लौटा तो ब्रिटेन के सैनिकों ने उसे कैद कर लिया और समुद्र में दूर स्थिति सेंट हेलना में उसे कैदी के रूप में रख लिया।

उसका आगे का सम्पूर्ण जीवन कैद में ही बीता। जेल में ही जीवन के अन्तिम दिनों में नेपोलियन हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया था, पीला और निस्तेज चेहरा, कई रोगों से ग्रस्त नेपोलियन एक बेबस निरीह प्राणी सा लग रहा था और अपमान, भूख और रोगों से क्लान्त होकर उसकी जेल में ही मृत्यु हो गयी थी।

तांती साधक की इस घटना को सुनाते हुए धूर्जटा बाबा ने कहा कि तांती तो आज भी अपने योग बल से जीवित है, पर उसने उस समय जिस निर्भीकता से भरी सभा में नेपोलियन का जो भविष्य पढ़ा था वह अक्षरशः सही उतरा।

सम्मोहन-रहस्य

सम्मोहन शब्द में कोई बहुत बड़ा रहस्य नहीं छिपा है। जब आपका अन्तर्मन प्रभावी होकर किसी के भी अन्तर्मन को अपने वश में लेता है तो वह बाह्य मन से अथवा भौतिक रूप से भी आपकी इच्छा पूर्ति के लिए बाध्य हो जाता है। यही सम्मोहन है।

इस लेख में कुछ ऐसी विधियां स्पष्ट की जा रही हैं जिनके माध्यम से आप किसी के भी अन्तर्मन पर हावी हो सकते हैं। इनमें कोई पेचीदापन या जटिलता है ही नहीं। आवश्यकता है तो केवल थोड़ी सी संकल्प शक्ति की।

प्रारम्भ में सीधे माध्यम को बैठाकर सम्मोहित करने की अपेक्षा कुछ छोटे-छोटे प्रयोग करने चाहिए। इनसे जहां एक ओर आपको अपनी वस्तु-स्थिति का पता चल सकेगा, वहीं आप सफल होने पर आत्मविश्वास से भर उठेंगे। आपको चाहिए कि प्रारम्भ में आप चुपचाप सड़क पर जाते किसी व्यक्ति को या रेल में यात्रा करते समय किसी सहयात्री को अपनी संकल्प-शक्ति से भावना दीजिए कि यह मुझसे मेरा अखबार मांगे अथवा यह पास आकर बातचीत करे या माचिस के लिए कहे आदि। आप सतर्कता पूर्वक अनुभव कीजिए कि आप द्वारा भावना देने के कितने अंतराल बाद वह व्यक्ति आपकी आज्ञा का पालन करता है अथवा कितनी बार भावना देनी पड़ती है। इससे आपको स्पष्ट हो सकेगा कि आपमें कितनी सघनता व तीव्रता आ चुकी है।

द्वितीय अवस्था में आप किसी

सम्मोहन विज्ञान एक सम्पूर्णता का विज्ञान है जिसके अनेक पक्ष व विधियाँ प्रचलित हैं। प्रारम्भिक चरणों का पूर्व के अंकों मे वर्णन करने के पश्चात् इस अंक में प्रस्तुत हैं वे विधियाँ जिनके सामान्य अभ्यास से कोई भी व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

अपने घनिष्ठ मित्र को लेकर उसके सहयोग से अपने को परिपक्व कर सकते हैं। घनिष्ठ मित्र को लेने का कारण यह है कि वह आपका सहयोगी रहेगा और यदि आप किसी कारणवश सफल नहीं हो पाते तो आपकी हंसी न उड़ा कर आपका मनोबल नहीं तोड़ेगा। यह तो स्पष्ट है कि सम्मोहन की दशा में माध्यम को एक विशेष प्रकार की निद्रा दी जाती है जिससे उसका बाह्य मन सुप्त और अन्तर्मन अधिक चैतन्य हो जाता है, इस दशा में व्यक्ति चाह कर भी न तो असत्य बोल सकता है और न सम्मोहन कर्ता की अवज्ञा कर सकता है।

सम्मोहन करने के लिए सर्वाधिक प्रचलित विधि तो यही है कि माध्यम को शांत एकांत व सुखद वातावरण वाले कमरे में बैठा कर, सम्मोहनकर्ता उसकी आंखों में आंखें डालकर गम्भीर स्वर में अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ आदेश देता है कि उसे (माध्यम को) नींद आ रही है और वह सो जाये। वह इस वाक्य को दो तीन बार आवश्यकता के अनुसार दोहराता है तथा फिर उसके बोझिल हो जाने पर उसे आराम से कुर्सी की पीठ से लग कर बैठने का निर्देश देता है। इसके पश्चात माध्यम का अन्तर्मन सम्मोहन कर्ता के नियंत्रण में होता है। इस सर्वमान्य विधि के अतिरिक्त भी कुछ विधियों का वर्णन उपयुक्त रहेगा जिनका अवसर विशेष पर प्रयोग किया जा सकता है।

प्रथम विधिः

माध्यम को कुर्सी पर आराम से बैठ जाने को कह कर उसे कांच की

मानव शरीर संभावनाओं की अनंत खान है, सम्मोहन शक्ति उसकी छिपी हुई असीम शक्तियों में से एक अंशमात्र है। थोड़े से मूलभूत ज्ञान को समझ कर और थोड़ा सा प्रयासों में सघनता लाकर हम उसे सहज जाग्रत कर सकते हैं।

गोल गेंद दिखा कर कहिए कि इस गेंद से विशेष किरणें निकलती हैं जिनसे नींद आ जाती है। ऐसा कह कर वह गेंद उसकी आंखों से एक फुट की दूरी पर घुमाइए। माध्यम को उसे एकटक देखने को कहिए तथा उससे कहते जाइए कि देखो अब तुम्हें नींद आ रही है, तुम्हारी पलकें भारी हो रही हैं, तुम चाह कर भी आंख नहीं खोल सकोगे इत्यादि। इसका शीघ्र व अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

द्वितीय विधि

इस विधि में माध्यम जो कुर्सी पर बैठा हो उसे आंखें बंद करने को कह कर अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से उसकी दोनों भौंहों के मध्य दबाते हुए बांये हाथ को उसके सिर पर फेरते हुए उपरोक्त ढंग से निर्देश दें। इससे आप देखेंगे कि उसे शीघ्र ही नींद आ जाएगी।

तृतीय विधि

इसमें माध्यम को बैठाकर आंख बंद करने को कह कर निर्देश दिया जाता है कि तुम सौ से उल्टी गिनती गिनोगे और चालीस तक आते-आते सो जाओगे। आपको स्वयं आश्चर्य होगा कि वह वास्तव में अधिक से अधिक तीस तक आ पायेगा और गहन निद्रा (सम्मोहन निद्रा) में चला जायेगा।

चतुर्थ विधि

माध्यम को अपनी आंख में आंख डालकर देखने को कहिए। कुछ देर देखने के बाद उसे आंख बंद करके उसे सम्मोहन निद्रा में जाने का निर्देश दीजिए। इस विधि में सम्मोहन कर्त्ता के स्पर्श से व्यक्ति पर विशेष प्रभाव होता है और वह बहुधा पहली आज्ञा में ही निद्रा में चला जाता है।

उपरोक्त विधियों में से सम्मोहन कर्त्ता कोई भी विधि चुन सकता है। इस हेतु आवश्यक होता है कि सम्मोहनकर्त्ता माध्यम के भावनात्मक स्वर से परिचित हो क्योंकि कहीं स्पर्श अनुकूल प्रभाव दे सकता है तो कहीं प्रतिकूल प्रभाव भी। इसी प्रकार से अलग-अलग दशाओं में अलग-अलग विधि का प्रयोग समझ-बूझ कर करना उपयोगी रहता है।

सम्मोहन की अवस्थाएं

सम्मोहन में व्यक्ति को जो विशेष प्रकार की नींद दी जाती है उससे उसका बाह्य मन सुप्त हो जाता है। यह केवल एक चरण की प्रक्रिया नहीं है। विवेचना करने पर हम पाएंगे कि इसमें तीन चरण होते हैं। तृतीय चरण तक माध्यम को ले जाना ही पूर्णता है और तभी सम्मोहन का पूरा प्रभाव प्राप्त हो सकता है।

प्रारम्भ में अर्थात् प्रथम चरण में माध्यम की आंखें बंद हो जाती हैं और बाह्य मन का व्यापार हल्का पड़ने से वह एक मानसिक तृप्ति और विश्राम का अनुभव करता है जिसका प्रभाव उसके मुख मण्डल पर हल्की मुस्कान और ढीले पड़ गये स्नायुओं से दिखने लगता है। उसके सांसों की गति मध्यम हो जाती है और पलकें भारी होने लगती हैं। उसे इस दशा में यदि हिलाएं-डुलाएं तो वह आंख खोलने का यत्न तो करेगा किन्तु उसे सुखद नहीं लगेगा। यह प्रायः तन्द्रा की दशा होती है।

द्वितीय अवस्था में पहली अवस्था और गहन हो जाती है। उसकी आंखों की पुतलियाँ ऊपर चढ़ जाती हैं, हाथ-पैर भारी हो जाते हैं, सांसें और भी अधिक मंद हो जाती हैं। यह दशा ऐसी होती है जबकि व्यक्ति का अन्तर्मन आपके वश में तो आ चुका होता है और वह आपकी आज्ञा भी पालन करने को तत्पर होता है किन्तु इस दशा में वह स्थिति नहीं होती कि आप उसके अन्तर्मन को निर्देशित कर सकें।

तृतीय अवस्था सर्वोत्तम अवस्था है। यह पहली और दूसरी अवस्थाओं का ही सम्मिश्रण है किन्तु गहनतम रूप में। इस दशा में माध्यम आपके निर्देश अपने अन्तर्मन से ग्रहण करने की दशा में आ जाता है। इस दशा में वह असत्य भी नहीं बोल सकता और इसी अवस्था में उसे

सम्मोहन–साधना - जगत की एक सुपरिचित विद्या एवं विज्ञान है जिसके प्रयोग की विधियाँ आप भी सीख सकते हैं, सहज ही, इस लेख में वर्णित उपाय पढ़ कर।

यदि कोई निर्देश देकर कहा जाये कि तुम इसे जागने पर याद तो रखोगे किन्तु यह भूल जाओगे कि तुमसे सम्मोहन में क्या कहा गया तो वह वैसा ही करता है।

आपको सम्मोहन प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व इस बात का परीक्षण भी कर लेना चाहिए कि क्या आपके माध्यम को उपरोक्त वर्णित तृतीय अवस्था प्राप्त हो गयी है। **इस हेतु आप उससे कह सकते हैं कि अब चूंकि नींद बहुत गहरी हो गयी है और तुम चाह कर भी अपनी आंखें नहीं खोल पाओगे** या इस प्रकार कहिए कि तुम दोनों हाथों की उंगलियों को फंसा लो और प्रयत्न करके भी उनको अलग-अलग नहीं कर पा रहे हो। आप यदि ऐसा पाए कि माध्यम वास्तव में ही आपके वर्णित अनुसार ही करता है तो आपका प्रयोग सफल रहा है। अब माध्यम तृतीय अवस्था में है जहां उसका अन्तर्मन तो पूर्ण जाग्रत है किन्तु बाह्य मन का उस पर कोई भी प्रभाव नहीं रह गया है। **इसी दशा में ही आप उसके मन की गुत्थियों को जान सकते हैं,** उसके गोपनीय रहस्यों से परिचित हो सकते हैं, उसे निर्देश दे सकते हैं।

इसी दशा में अपना मनोवांच्छित करने के बाद आप उसे भी यह निर्देश दे सकते हैं कि तुम्हें जगने के बाद कुछ भी याद नहीं रहेगा और इसी दशा में माध्यम से यह भी कह दिया जाता है कि मैं ऐसा करूंगा (जैसे तीन बार चुटकी बजाऊंगा या इत्र सुंघाऊंगा आदि) तो तुम जग जाओगे। प्रायः सम्मोहन निद्रा गहरी हो जाने पर माध्यम जगता नहीं है किन्तु इससे चिंतित होने की कोई बात नहीं क्योंकि वह सम्मोहन निद्रा से स्वाभाविक निद्रा में चला जायेगा और जब उठेगा तो उसी प्रकार उठेगा मानों सामान्य निद्रा ही त्याग कर जगा हो। सम्मोहन का प्रयोग यद्यपि बार-बार किया जा सकता है अर्थात् उससे न तो माध्यम को और न सम्मोहन कर्ता को कोई हानि होती है फिर भी **सम्मोहन कर्ता जब तक कुशल न हो, अपने माध्यम के साथ बार-बार प्रयोग न करे।** इसका कारण यह है कि व्यक्ति के बाह्य मन को बिना गम्भीरता से समझे-बूझे बार-बार सुप्त करने से उसका व्यक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की भी संभावना रहती है। इसी तरह से एक बार के सम्मोहन में यदि एक ही निर्देश दिया जाए तो उचित रहता है।
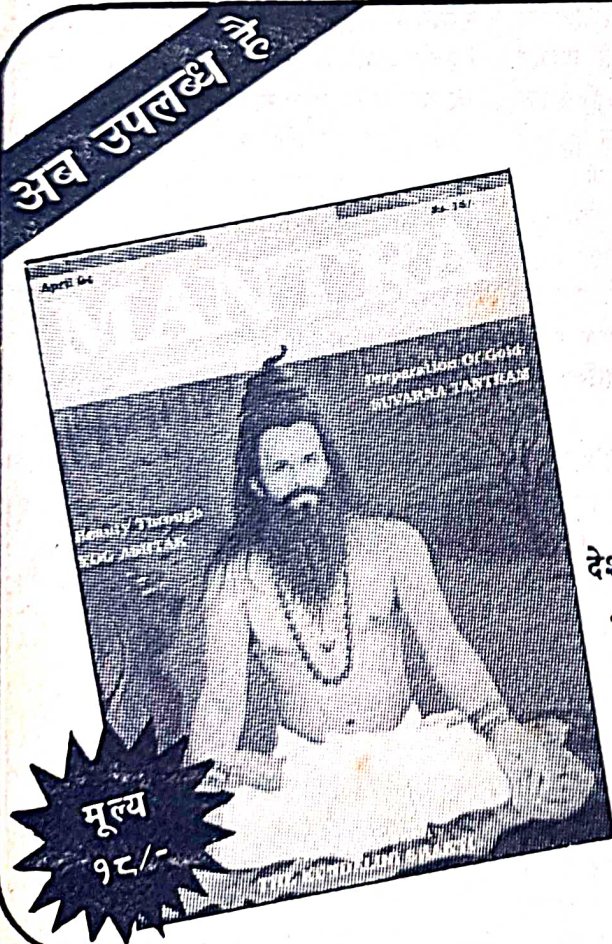
साधक साक्षी हैं

"साधक साक्षी हैं" के अन्तर्गत इस बार एक अनूठे पत्र का चयन किया गया है, जो यद्यपि व्यक्तिगत पत्र है किन्तु जिसमें निहित चिन्तन व्यक्तिगत नहीं है। योग्य साधक का यही यथार्थ साक्षीभाव होता है।

– *सहा० सम्पादक*

. . . मुझे लग रहा है तुम्हारा चिन्तन गलत दिशा की ओर जा रहा है। अपने चिन्तन को ऋणात्मक मत होने दो। जब तक पाने की भाषा में सोचोगे तब तक सन्तोष नहीं मिलेगा। जो है वह कम नहीं है. . . तुम्हें जो जीवन मिला है, इस प्यारे से जीवन के लिए कभी गुरुदेव जी को धन्यवाद दिया है? ये आंखे दी हैं जिससे इस जगत का सौन्दर्य देखा है, परमात्मा का दर्शन किया है पूज्य गुरुदेव के रूप में! ये कान दिये हैं ब्रह्म की आवाज सुनने के लिये पर क्या कभी गुरुदेव जी के चरणों में कृतज्ञता से झुके हो? जिसने ये संवेदनशील हृदय दिया है, क्या इसके लिए कभी दो आंसू गिराए हैं।

सन्तोष का एक छोटा से अर्थ बता रहा हूं . . . जो मेरे पास है वह मेरी पात्रता से ज्यादा है, न मेरी योग्यता है! न पात्रता. . . और गुरुदेव बरसाते चले गये इसी का नाम सन्तोष है और जिसके पास संतोष है उसे और मिलेगा।

तुम्हारे पास यदि सन्तोष है तो हमेशा आनन्द की अनुभूति होती रहेगी और तब सन्यास का भी विशेष अर्थ नहीं रह जाता, और यूं भी सन्यास तो एक भाव है, वस्त्रों का रंग-परिवर्तन ही सन्यास नहीं। जितना मिला इतना भी बहुत है, इतना क्यों. . .यह भी आश्चर्य होनी चाहिये, जितना मुझे मिला इतना भी नहीं मिलना चाहिए। मैंने अर्जित तो किया नहीं, मेरी कोई योग्यता नहीं है, पात्रता नहीं है, तेरी भेंट है. . . मैं कृतज्ञ हूं।

तुमने यदि गुरु स्वीकार किया है तो यह भूल कर भी मत सोचना कि गुरु पर कोई अहसान किया है। गुरु को तुम्हारे या तुम्हारे अहसान की कोई जरूरत नहीं है। तुम शिष्य रहो या न रहो। उन्हें क्या फर्क पड़ता है? लाभ है तो तुम्हारा, हानि है तो तुम्हारी।
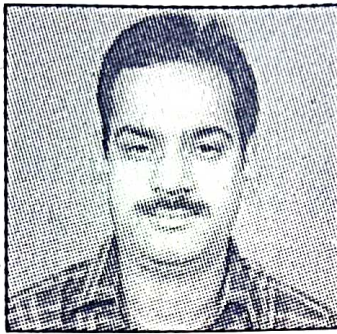
सद्‌गुरु का क्या काम है? बस इतना ही कि तुम्हारे भीतर जो सोया है उसे जगा दे! और एक जागा व्यक्ति ही सोये को जगा सकता है। एक सोया व्यक्ति किसी को नहीं जगा सकता है। जब उठ जाओगे तब बात होगी गुरु से! **गुरु दो तरह से बातें करते हैं ९९ प्रतिशत जगाने की बातें होती हैं एक प्रतिशत जगे हुए से बात होती है, और ये एक प्रतिशत बातें मुंह से नहीं होती। वह तो चुपचाप मौन में कह दी जाती है।** जगाने के लिए काफी प्रयत्न करना पड़ता है, लेकिन यदि एक बार जग गये तो उनकी आंखों में देख लेना काफी है! उनके पास बैठ लेना काफी है. . . यही उपनिषद है।

गुरु के पास बैठकर जो मिला कहा नहीं गया, बोला नहीं गया, बस पास बैठ कर जो मिला वही उपनिषद है।

तुम्हारे पास एक चिराग है, उससे जुड़ कर स्वयं को भी प्रकाशवान करो। अक्सर देखा गया है जब भी सद्‌गुरु उपस्थित हुए हैं और उनके जाते ही उनकी छाया में राजनीति के अड्डे जम जाते हैं चिराग के नीचे अंधेरा रहता है . . . अंधेरा मत बनों। हर सद्‌गुरु के पीछे लोग इकट्ठे हो जाते हैं जो राजनीति चलाने लगते हैं उनसे सावधान होना जरूरी है।

मयंक जोशी
नोएडा, गाजियाबाद

मैंने पूज्यपाद गुरुदेव से मात्र तीन माह पूर्व **समय दीक्षा** ली है। उस समय गुरुदेव शिष्यों पर कुछ विशेष ही प्रसन्न थे अतः उन्होंने **सहस्त्र-लक्ष्मी तथा सर्व मनोकामना सिद्धि प्रयोग** कराया। मैंने पूर्ण विश्वास और श्रद्धा के साथ पूजा घर में सहस्रलक्ष्मी यंत्र स्थापित कर पंचोपचार से पूजन कर, नित्य नियमपूर्वक जप प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार २१ दिन का जप पूरा किया। परन्तु मुझे इन इक्कीस दिनों में निराशा ही हाथ लगी।

साधना समाप्ति के दूसरे - तीसरे दिन की बात है कि मैं प्रातः अपना नित्य कर्म निपटाने के बाद मायूसियत के साथ सोचते-सोचते सो गया। करीब ३-४ बजे प्रातः का समय होगा। स्वप्न में अचानक गुरुदेव आए और कहने लगे **"अरे! तू हथेली पर ही सरसों जमाना चाहता है, थोड़ा तो धैर्य रख। खैर तू घबरा मत मैं जो तेरे साथ हूं।"** गुरुदेव की मुद्रा एकदम गम्भीर थी जबकि परिधान श्वेत था। मेरी हड़बड़ा कर नींद खुल गई। देखा वहां कोई नहीं था।

मैं उस दिन एक विचित्र सी उधेड़-बुन में कार्यालय गया और वहां पहुंचते ही चपरासी मुझे यह कहने आया कि शर्मा साहब आपका कुछ पैसा आया है, आप एकाउन्टस् में जाकर ले ले। मैं हतप्रभ था। पहले तो मुझे विश्वास नहीं हुआ लेकिन यह सत्य था। मैंने देखा कि मेरा कई दिनों से लम्बित पैसा, रुपये तेरह हजार आया हुआ है। मैंने उसे प्राप्त किया और मन ही मन सोचा, हो न हो मेरी साधना और गुरु वचन सही हुआ है। मैंने उसी समय गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और उनसे अनर्गल शब्दों के लिये क्षमा याचना की। अब यह क्रम यहीं समाप्त नहीं हुआ था। दूसरे दिन पुराना एरियर जो साल भर से झूल रहा था (रु० २७७४/-) मिल गया। तीसरे दिन मकान का किरायेदार रूका पैसा लेकर स्वतः ही घर आ गया और उसी के साथ अन्य एक नया किरायेदार अग्रिम राशि भुगतान कर गया और भी कई छोटे-मोटे बिल, जो पेंडिंग में पड़े थे एक के बाद एक कैश होने प्रारम्भ हो गये। इसी बीच मेरे द्वारा मंगायी सुकेशी लक्ष्मी प्रयोग की सामग्री भी जोधपुर से प्राप्त हो गई। मैंने अब पूर्ण आस्था के साथ होली की रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न कर लिया। **मुझे और भी अधिक आश्चर्य तब हुआ जब दूसरे दिन मुझे पदोन्नति के आदेश मिल गये।**

आज स्थिति में काफी सुधार आ गया है, सभी विषमताएं अनुकूलताओं में परिवर्तित होनी प्रारम्भ हो गई हैं। कई ऐसे कार्य सम्पन्न हुए हैं जिन्हें स्थानाभाव के कारण नहीं दे पा रहा हूं जैसे शासन से वाहन अनुमति मिलना, इत्यादि।

डा० महेश प्रकाश शर्मा
जी-३, रामनगर कालोनी,
शाहजानाबाद, भोपाल

पुरुषों में नपुंसकता का कारण

● डॉ० साधना
भोपाल (म.प्र.)

प्रस्तुत है प्रख्यात चिकित्सिका डॉ० साधना द्वारा इस क्षेत्र में की गई शोध एवं विस्तृत उपचार का सम्पूर्ण विवरण

वर्तमान समय में पुरुषों की नपुंसकता दिन - प्रतिदिन जिस प्रकार से एक सामान्य रोग बनती जा रही है उससे यह दैनिक जीवन में होने वाले मौसमी रोग खांसी, बुखार जैसा आम रोग बन गया है और यह स्थिति शोचनीय है क्योंकि इससे जहां एक ओर व्यक्ति का जीवन नष्ट हो जाता है वहीं समाज में भी एक प्रकार की दुर्बलता और हीनता व्याप्त हो जाती है।

होम्योपैथी में पुरुषों के इस रोग एवं इसके उपायों की व्यापक चर्चा की गई है। अभी कुछ माह पूर्व हमने होम्योपैथी की सुप्रसिद्ध चिकित्सका **डॉ० साधना (भोपाल)** से इस विषय में जानकारी प्राप्त करनी चाही थी। पत्रिका के **मई अंक** में डॉ० साधना ने **'यौन रोग'** पर एक प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत किया था, जिससे प्रभावित होकर लगभग बीस बाइस सौ पाठकों ने हमसे पत्राचार द्वारा इस सम्बन्ध में अपनी विविध जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करना चाहा।

हीरक जयन्ती महोत्सव के अवसर पर दिनांक २१-४-६४ को डॉ० साधना भोपाल से पूज्य गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी का जन्मोत्सव मनाने इलाहावाद आई थीं। हमने उस अवसर पर यह उचित समझा कि डॉ० साधना से संक्षेप में पाठकों की समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जाय। यद्यपि अवसर कम था और समस्यायें अनेक थी फिर भी डॉ० साधना ने अपनी प्रखर शैली द्वारा सभी समस्याओं का सटीक विवेचन प्रदान किया।

डॉ० साधना की यह विशेषता है कि उन्होंने जहां एक ओर होम्योपैथी की परम्परागत औषधियों को अपने रोगियों को देकर उनका भलीभांति उपचार किया है वहीं स्वयं अपने शोध से भी ऐसी अनेक औषधियां विकसित की हैं जिनके द्वारा उन्होंने अनेक समस्याग्रस्त रोगियों (जिनमें स्त्री व पुरुष दोनों ही हैं) को पूर्ण उपचार प्रदान किया है और वे सन्तुष्ट होकर अपना वैवाहिक जीवन भली-भांति व्यतीत कर पा रहे हैं।

डॉ० साधना अपने व्यक्तित्व से पूरे भारत में प्रसिद्ध होने के साथ ही साथ अत्यंत कुशल, मृदुभाषी, सौम्य एवं किसी भी रोग की गहनता तक जाकर उपचार करने में विश्वास करने वाली चिकित्सिका हैं तथा उनका यही प्रयास रहता है कि जो भी रोगी उनके सम्पर्क में आए वह औषधियों, योग की पद्धतियों एवं व्यक्तिगत परामर्श के द्वारा जैसे भी हो पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर ही वापस जाए।

डॉ० साधना की इसी अध्ययनशील प्रवृत्ति का फल है कि जो उन्होंने पुरुषों में निरन्तर बढ़ती जा रही नपुंसकता का विवेचन कर यह ज्ञात किया कि इसके मूल में वस्तुतः शुक्रमेह की बीमारी ही प्रमुख होती है। हमें कार्यालय में जो पत्र मिले थे। उनमें भी अधिकांश व्यक्तियों ने कुछ इसी प्रकार का प्रवृत्ति का उल्लेख किया था।

पत्रिका टीम की ओर से **कनक पांडे** ने डॉ० साधना से इस विषय में बातचीत की और यह कनक पांडे की कुशलता थी कि उन्होंने पाठकों के अनगिनत पत्रों में से चुनकर महत्वपूर्ण प्रश्नों की एक संक्षिप्त सूची बनाकर कम समय में ही पूर्ण विवरण प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। आशा है हमारे पाठकों को यह ज्ञान लाभप्रद और उपचार देने में समर्थ होगा, विशेषतयः उन पाठकों को जिन्होंने पत्रों द्वारा हमसे समाधान प्राप्त करने चाहे थे।

कनक पांडे एवं डॉ० साधना के मध्य हुए वार्तालाप को हम सम्पादन की दृष्टि से संक्षिप्त करके प्रस्तुत कर रहे हैं किन्तु इस प्रकार डॉ० साधना द्वारा दिए गए किसी भी महत्वपूर्ण तथ्य की उपेक्षा नहीं हुई है . . .

कनकः डॉ० साधना सर्वप्रथम तो मैं आपको इस बात की बधाई देती हूं कि 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के मई अंक में प्रकाशित यौन रोग लेख पढ़कर हमारे अनेक पाठकों ने प्रामाणिक ज्ञान व उपचार प्राप्त किया और इसी क्रम में मैं आपसे कुछ और भी प्रश्न पूछना चाहूंगी।

डॉ० साधनाः धन्यवाद! मैंने तो केवल पूज्य गुरुदेव के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन किया था इससे **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका के पाठकों को लाभ पहुंचा, यह मेरे लिए एक चिकित्सिका के रूप में भी संतोष का विषय है। पाठकों की जो भी जिज्ञासाएं है, आप उन्हें कृपया निःसंकोच पूछें।

सामान्यतः एक सी. सी. वीर्य में १२५ मीलियन शुक्राणु होने पर सामान्य माना जाता है। इससे कम होने पर ही कहा जा सकता है कि व्यक्ति के अन्दर असामान्यता है। वास्तव में शुक्रमेह का निर्धारण योग्य चिकित्सक से सम्पर्क कर ही निश्चित करना चाहिए।

कनकः डॉ० साहिबा, पुरुषों में नपुंसकता का मूल कारण आपकी दृष्टि में क्या हो सकता है?

डॉ० साधनाः यदि आप मेरे प्रोफेशन की दृष्टि से पूछिए तो होम्योपैथी में इसे व्यापक अर्थ में लिया गया है और केवल शरीर तक सीमित रोग नहीं माना गया है, लेकिन जिस संदर्भ में आप जानने की इच्छुक हैं उसके अनुसार आज पुरुष जिस प्रकार यौन संसर्ग में दिन- प्रतिदिन अक्षम होता जा रहा है वही नपुंसकता की व्यवहारिक परिभाषा है और होम्योपैथी में इसका अर्थ मुख्य रूप से **शुक्रमेह** से किया गया है। यह शब्द सामान्य लोगों के मध्य बहुत अधिक जाना-पहचाना नहीं है लेकिन **डॉक्टरों की दृष्टि में शुक्रमेह या स्पर्मटोरिया ही नपुसंकता अथवा नपुंसकता की पूर्व स्थिति माना गया है।** प्रसंगवश आपको यह भी बता दूं कि कुछ लोग इसका तात्पर्य केवल स्वप्नदोष से ही लगाते है जबकि स्वप्नदोष में तो केवल स्वप्नावस्था में ही अनैच्छिक रूप से वीर्यपात हो जाता है जबकि शुक्रमेह हो जाने की दशा में मल- त्याग करते समय, पेशाब करते समय, ट्रेन या बस में किसी स्त्री-शरीर से घर्षण हो जाते समय, उत्तेजक उपन्यास पढ़ते समय या यौन संसर्गों से भरी फिल्म देखते समय भी विना पूर्ण लिंगोद्रेक हुए वीर्य-स्खलन हो जाता है। फलस्वरूप व्यक्ति की मूल जैविक शक्ति का ह्रास होने लगता है।

कनकः क्या इस ह्रास का प्रथम प्रभाव ही नपुंसकता है?

डॉ० साधनाः ऐसा आवश्यक नहीं है लेकिन रोग की एडवान्स कंडीशन में या रोग के देर में पता लगने पर नपुंसकता पनप जाती है। रोग की प्रारम्भिक अवस्था सामान्य स्वास्थ्य को प्रभावित करना प्रारम्भ करती है। व्यक्ति दुर्बल होना प्रारम्भ हो जाता है, उसकी आंखों के नीचे काले गड्ढे पड़ने लगते हैं, बालों में सफेदी बढ़ती जाती है, मन बुझा-बुझा रहता है, स्मरण-शक्ति कम हो जाती है, एक प्रकार का मानसिक अवसाद निरन्तर हावी रहता है और वह अनुभव करता है कि उसके अन्दर तेज और साहस घटता जा रहा है। **यदि ऐसी स्थिति में वह स्वयं का उपचार नहीं कराता तो एक दिन अपने-आप को नपुंसकता के दलदल में फंसा पाता है।** ऐसी स्थिति आ जाने पर उसका स्नायुमंडल कमजोर हो चुका होता है और वह वीर्य का पतन अपनी इच्छा के अनुसार रोक न पाने के कारण जीवनी-शक्ति से हाथ धो बैठता है।

यहां पर मैं एक बात मैं और स्पष्ट कर देना चाहूंगी कि जिस व्यक्ति को शुक्रमेह होता है आवश्यक नहीं कि वह सम्भोग क्रिया में भी अक्षम हो वरन् उसके शुक्राणुओं का क्षय इस प्रकार होता रहता है जिससे वह कालान्तर में पूर्ण रूप से अथवा आंशिक रूप से नपुंसक हो सकता है।

कनकः आपके दृष्टि में इसके क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

डॉ० साधनाः युवावस्था में अत्यधिक हस्तमैथुन, मांस, अण्डा या गरम मसालों से भरा भोजन, अत्यधिक स्त्री संसर्ग, अत्यधिक सोना, उत्तेजक उपन्यास पढ़ना, यौन संसर्गों से भरी फिल्म देखना, अश्लील हंसी मजाक करने वाले व्यक्तियों के संग रहना, सदैव कामुकता पूर्ण चिन्तन करते रहना जैसे चारित्रिक कारण तो मुख्य होते ही है, कब्ज, पेट मे कीड़े होना, डिस्पेप्सीसया तथा शरीर में किसी क्षय कारक बीमारी का होना भी इसके अन्य कारण होते हैं। **जिस प्रकार मधुमेह एक प्रकार का प्रमेह है उसी प्रकार शुक्रमेह अर्थात् स्पर्मटोरिया भी एक प्रमेह ही है। जिसमें शरीर की धातु तरल होकर बिना किसी नियंत्रण के अथवा बिना सम्भोग क्रिया के स्वतः ही बहनी प्रारम्भ हो जाती है।**

पुरुष अपनी यौन क्षमता के सही निर्धारक नहीं हो सकते वरन् उनकी पत्नी ही इस विषय में सर्वश्रेष्ठ निर्णय दे सकती है। महिला चिकित्सक होने से मुझे अनेक पत्नियों द्वारा पुरुषों के काम पक्ष सम्बन्धी अनेक जटिल पक्ष समझने का अवसर मिला है।

वर्तमान समय में पुरुष नपुंसकता को लेकर बहुत अधिक चिंतित रहता है, मेरे पास ऐसे कई युवक आते हैं जो पूर्ण स्वस्थ रहते हुए भी शंकित रहते हैं कि क्या वे विवाहोपरान्त अपने पत्नी को संतुष्ट कर पायेंगे अथवा नहीं? मेरी दृष्टि में इस प्रकार

की विचार धारा, अत्यधिक संयम और बलात् मन की प्रवृत्तियों को दबाते रहने पर भी यह रोग हो जाता है।

कनकः डॉ० साधना, होम्योपैथी का क्षेत्र तो अत्यन्त व्यापक है, आपने अपने अनुभव से किन औषधियों को प्रामाणिक पाया है?

डॉ० साधनाः आपका यह प्रश्न बहुत अधिक उपयोगी है क्योंकि सचमुच होम्योपैथी में इस विषय पर इतनी अधिक औषधियां है कि सामान्यतः उचित औषधि का चुनाव करना चिकित्सक के लिए भी कठिन कार्य है फिर भी **मैंने अपने व्यवहारिक अनुभव से जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसके अनुसार कुछ वर्ग बनाये है** और उन वर्गो के अनुरूप औषधियां निर्धारित की है।

> **शुक्रमेह मानसिक-शारीरिक असन्तुलन का भी परिणाम हो सकता है। अतः आवश्यक है कि पीड़ित व्यक्ति को औषधियों पर आधारित उपचार के साथ-साथ उसके जीवन साथी की ओर से भी पूर्ण आत्मीयता मिले।**

१. युवावस्था में जिन्होंने अत्यधिक हस्तमैथुन किया है एवं शुक्रमेह के साथ-साथ जो मानसिक अवसाद के भी रोगी हो गए हैं उन्हें मैं conium 30 देना अधिक उचित समझती हूं। फाय दान होने पर ६ या ३० नम्बर की ६-७ गोली दिन में तीन बार चार-चार घंटे के अन्तर पर लेनी चाहिए।

२. अत्यधिक शुक्रक्षय हो जाने से शरीर क्षीण, दुबला और जर्जर हो गया हो तथा गाल भी पिचक गए हों, शरीर का वेग कम पड़ गया हो किन्तु कामोत्तेजक चिन्तनों में कोई अन्तर न आया हो तब **स्टेफिसेग्रिया ३०** की छः गोली दिन में चार बार लेना लाभप्रद रहता है।

३. जिनके लिंग में अत्यधिक शिथिलता आ गई हो और लिंगोद्रेक होते ही शुक्र स्खलन हो जाता हो उनहें **लाईकोपोडियम ३०** अधिक लाभप्रद होती है। मेरा अनुभव है कि वृद्धों एवं यकृत के रोगियों को इसी दवा का प्रयोग करना चाहिए।

४. जिन्हे कम उम्र में हस्तमैथुन करने के कारण आगे चलकर यह रोग हो गया हो, शराब पीने की लत हो, यकृत दोष हो, लिंगोद्रेक तो होता हो किन्तु आलिंगन के समय शिथिलता आ जाती हो तथा रात के अन्तिम प्रहर में स्वप्नदोष हो जाता हो तो उन्हें **नक्स वामिका ३०** बहुत अधिक लाभकारी होती है।

५. रात्रि में उत्तेजक स्वप्न देखा हो अथवा न देखा हो किन्तु वीर्यपात हो जाता हो, दिल रह-रहकर बहुत अधिक धड़कता हो और प्रायः वीर्यपात पर नियंत्रण न रह पाता हो, तो तब भी शुक्रमेह का ही प्रकोप माना जाता है और ऐसे में **डिजिटेलिस ३०** एक लाभप्रद औषधि है।

६. मल त्याग के समय जोर लगाने पर वीर्यपात हो जाना भी एक आम समस्या है ऐसी स्थिति में **सैलिक्स नाइग्रा** औषधि का प्रयोग करना चाहिए।

७. **ब्यूफोराना ३०, साइलीशिमा १०००, केलकेरिया फॉस, नेट्रम फॉस** आदि भी इस विकट रोग की श्रेष्ठ औषधियां मानी गई हैं जिनका उचित निर्धारण कुशल चिकित्सक द्वारा परीक्षण कराकर किया जा सकता है।

कनकः आपने अल्प समय में ही जो जानकारी दी उसके लिए हम आपके आभारी हैं, क्या हमारे पाठक भी पत्रों द्वारा आपसे व्यक्तिगत सम्पर्क कर इस विषय में अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं?

डॉ० साधनाः यद्यपि प्रस्तुत उपाय अपने-आप में प्रामाणिक और सम्पूर्ण है फिर भी यदि कोई संदेह रह जाता है तो **मुझसे व्यक्तिगत रूप से भी उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।** मेरा व्यक्तिगत अनुभव तो यह है कि पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी स्वयं एक उत्कृष्ट आयुर्वेदज्ञ है और उनके पास एक से एक दुर्लभ 'कल्प' प्रयोग छुपे है। उदाहरण के लिए डॉ० श्रीमाली जी ने मुझे गंगोत्री के पास पाए जाने वाले एक दुर्लभ पौधे **आमतरी** के बारे में बताया था। **डॉ० श्रीमाली जी** के पास मैंने एक सूखा हुआ यह पौधा देखा भी जिसके पत्ते हल्के सिन्दूरी रंग के थे। उन्होंने बताया था इसके पत्ते का चूर्ण एक माह तक दूध में मिलाकर लेने पर कैसी भी दुःसाध्य नपुंसकता हो या धातु सम्बन्धी रोग हो समाप्त होता ही है। उनके ज्ञान के समझ तो मेरा ज्ञान नगण्य है फिर भी उनकी आज्ञा के फलस्वरूप मुझसे जो भी सहयोग सम्भव हो सकेगा, मैं देने के लिए सदैव तत्पर हूं।

पताः
डॉ० (श्रीमती) साधना
साधना होम्यो क्लीनिक,
शॉप नं० २५, छठा बस स्टॉप,
सुभाष मार्केट, शिवाजी नगर, भोपाल (म० प्र०)
फोनः ५५४६२५

अपना भविष्य आप भी पढ़ सकते हैं

ज्योतिष विद्या गणितीय पक्ष एवं प्रज्ञा- चेतना से मिलकर निर्मित हुई विद्या विशेष ही है, जहां किसी भाव विशेष में या किसी निर्धारित भाव में दो या दो से अधिक ग्रह संयुक्त होते हैं तो उन्हें ज्योतिष की दृष्टि से "योग" के रूप में जाना जाता है।

भिन्न - भिन्न परिस्थितियों में ये योग अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और इनके आधार पर यदि कुण्डली का विवेचन किया जाए तो अनेक रोचक तथ्य स्पष्ट होते हैं।

भिन्न - भिन्न परिस्थितियों में इनकी क्या विशेषता होती है, आइए इसे कुछ विशेष योगों के सन्दर्भ में देखने का प्रयास करें. . .

जीवन की किशोरावस्था में शिक्षा की चिन्ता, कुछ वयस्क हो जाने पर कारोबार के सम्हालने की या कारोबार के चुनने की चिन्ता अथवा नौकरी प्राप्ति के लिए एड़ी चोड़ी का जोर लगाना, विवाह की उत्कण्ठा, योग्य जीवन साथी का चुनाव, सन्तान सुख के लिए लालायित होना, सन्तानों का स्वास्थ्य. . . जीवन का चक्र निरन्तर और तीव्रता से गतिशील रहते हुए व्यक्ति को व्यस्त व चिन्तातुर बनाए ही रखता है किन्तु इन सभी की न तो उपेक्षा की जा सकती है न कोई आसान पगडन्डी पकड़ कर छोटा मार्ग ही ढूंढा जा सकता है। एक प्रकार से देखा जाए तो व्यक्ति इन चक्रों के मध्य निरन्तर उलझते रहने के कारण जीवन के प्रति वह आस्था और विश्वास खो देता है जो कि अन्यथा गति और आनन्द का आधार होता है। व्यक्ति को जब तक जीवन में स्थायित्व और निश्चिंतता प्राप्त नहीं होती तब तक उसकी प्रगति नहीं हो पाती और पूर्ण चैतन्यता भी विकसित नहीं हो सकती।

ज्योतिष शास्त्र का व्यवहारिक पक्ष व्यक्ति की इसी दिशा में सहायता करता है और उसे उसके जीवन चक्र से परिचित कराता है। ज्योतिष शास्त्र का गणितीय पक्ष अत्यन्त जटिल और श्रम साध्य है जिसे सामान्य व्यक्ति गणनाओं के आधार पर सहज नहीं समझ सकता किन्तु वहीं विभिन्न योगों के माध्यम से ज्योतिष के क्षेत्र में सामान्य ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी अपने भविष्य और उपलब्धियों को समझ सकता है, उतार - चढ़ावों का अनुमान लगा सकता है।

आगे ऐसे ही कुछ विशेष योग दिए जा रहे हैं जिसके माध्यम से आप भी अपने आप को टटोल सकते हैं और ऐसा करना आपके लिए उपयोगी होने के साथ - साथ ज्ञानवर्धक भी होगा।

पूर्णायु योग -

प्रत्येक व्यक्ति की यह चिन्ता रहती है कि क्या वह अपने भाग्य में पूर्ण आयु का सुख लेकर आया है अथवा नहीं। पूर्ण आयु का निश्चय लग्नेश के बली होने से निर्धारित होता है।

यदि लग्नेश बली होकर केन्द्र में स्थित हो तथा गुरु व शुक्र द्वारा संयुक्ति प्राप्त (अथवा बल प्राप्त हो) अथवा लग्नेश बली होकर केन्द्र में हो, साथ ही सभी पाप ग्रह कुण्डली के छठे अथवा आठवें भाव में हो, तब भी व्यक्ति पूर्ण आयु का सुख प्राप्त करता है। पूर्णायु योग से युक्त व्यक्ति सत्तर से उपर की आयु अवश्य प्राप्त करता है। यदि उसकी कुण्डली में गुरु का पूर्ण बल होता है तो वह सौ वर्ष के आस-पास तक भी जीवित रह सकता है।

लक्ष्मी योग -

नवम भाव का स्वामी उच्च राशि का हो अथवा स्व राशि का होकर केन्द्र में स्थित हो या उसकी किसी भी प्रकार से लग्न पर दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसी दशाओं में पूर्णता से **लक्ष्मी योग** निर्मित होता है। लक्ष्मी योग के निर्धारण में शुक्र की स्थिति का

भी विशेष महत्व होता है। ऐसा योग सम्पन्न व्यक्ति अपने जीवन में बाधा रहित ढंग से सभी सुखों व ऐश्वर्य का उपभोग करता है तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से सदैव पूर्ण व सन्तुष्ट बना रहता है। यश, ख्याति, मित्र आदि की उसके जीवन में कोई भी कमी नहीं रहती।

गन्धर्व योग-

तुला अथवा वृषभ लग्न हो और शुक्र स्वराशि का होता हुआ केन्द्र में स्थित हो तो **गन्धर्व योग** निर्मित होता है। यह योग इन दोनो लग्नों के अतिरिक्त किसी अन्य लग्न में घटित नहीं होता और ऐसा व्यक्ति गायन व संगीत में विशेष निपुण होता है, जिसकी ख्याति देश की सीमाओं को भी लांघ जाती है और वह अपने इस योग के माध्यम से अतुलनीय वैभव व ख्याति प्राप्त करता है।

विदेश यात्रा योग -

मनुष्य की यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि वह विदेशों का भ्रमण कर नए-नए स्थान देखने को आतुर होता है, किन्तु जीवन की अन्य स्थितियों के साथ ही साथ मनुष्य के जीवन में यह स्थिति भी विशेष ग्रह योग के आधीन होती है। विदेश यात्रा का निर्णय व्यक्ति के नवम भाव से किया जाता है। यदि नवमेश स्वगृही हो एवं लग्नेश लग्न में हो तो **विदेश यात्रा का प्रबल योग** बनता है । इसके अतिरिक्त लग्नेश के नवम भाव में होने से एवं नवमेश के लग्न में होने से भी विदेश यात्रा की सम्भावनाएं पुष्ट होती हैं।

विमल योग -

द्वादश भाव का स्वामी यदि अपने ही भाव में अर्थात् द्वादशभाव में ही स्थित हो तो **विमल योग** निर्मित होता है। ऐसे जातक का सम्पूर्ण जीवन सुखी, सम्पन्न, निडर, निर्मल एवं प्रसन्नता से भरा होता है। ऐसा व्यक्ति सभी के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय होता है तथा सद्गुणी व चरित्रवान होता है।

शुक्र योग -

उपरोक्त विमल योग के समान ही, किन्तु द्वादशेश के शुक्र ग्रह होने पर और उसके बारहवें भाव में स्थित होने से **शुक्र योग** का निर्माण होता है, जो व्यक्ति को जीवन में भोग की प्रचुरता देता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन कला, सौन्दर्य, आमोद - प्रमोद से भरा होता है। उसकी दीर्घायु होती है और अनेक स्त्रियों से उसका सम्पर्क होता है।

अचल सम्पत्ति योग -

यदि व्यक्ति की कुण्डली में द्वितीय भाग का स्वामी अर्थात् धनेश एवं निर्माण भाव का स्वामी अर्थात् नवमेश परस्पर संयुक्ति कर रहे हों और किसी अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट न हों तो व्यक्ति अपने जीवन में बिना किसी झगड़े- झंझट के आवास, भवन, कारखाने या फैक्ट्री का निर्माण करता है और अचल सम्पत्ति का स्वामी बनता है।

सर्प योग -

यदि केन्द्र (अर्थात् कुण्डली के १, ४, ७, १० भाव) में किसी भी शुभ ग्रह की उपस्थिति न हो और उसके विपरीत पाप ग्रह ही इन भावों में हों तब दुःसाध्य **सर्प योग** की उत्पत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन निरन्तर आपा- धापी, दैन्य, विषमता और अभाव से भरा होता है। साथ ही उसके अन्दर छिछलापन, वाचालता और कामुकता का अतिरेक होता है।

प्रेत योग -

अकाल मृत्यु से ग्रसित होने वाले की मुक्ति सहजता से सम्भव नहीं होती और वह मृत्योपरान्त प्रेत योनि में जाकर किसी विशेष व्यक्ति को ही पीड़ित करते देखा जाता है। ज्योतिष शास्त्र ने इस क्षेत्र में यह तथ्य पाया कि जिन व्यक्तियों की कुण्डली में राहु की प्रबलता होती है अथवा राहु ग्रह लग्नेश के साथ संयुक्त होकर केन्द्र में स्थापित हो जाता है तो ऐसा व्यक्ति प्रेत बाधा से निश्चय ही ग्रसित होता है।

संन्यास योग-

व्यक्ति का सन्यास धारण करना भी उसके पूर्व जन्म कृत संस्कारों एवं उसी के अनुसार निर्मित योग के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है। व्यक्ति की कुण्डली में यदि उसका लग्न स्थान पृथकता जनक ग्रहों - सूर्य, मंगल अथवा शनि में से किन्हीं दो द्वारा दृष्ट होता है तब व्यक्ति के मन में संसार के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो जाती है। अष्टमेश एवं द्वादशेश भी पृथकता जनक प्रभाव उत्पन्न करने वाले माने गए हैं। जिन व्यक्तियों के कुण्डली में इनका केन्द्रीय प्रभाव होता है अथवा इनका मन के कारक ग्रह चन्द्रमा पर प्रभाव होने से भी व्यक्ति की सांसारिक कार्यों से विरक्ति हो जाती है और वह सब कुछ त्याग कर संन्यास की उन्मुख हो जाता है।

ग्रहों के परस्पर संयोग से अनेक योग बनते हैं और ऐसे योगों का ज्ञान होने से कुण्डली में उनको पहचान कर व्यक्ति प्रारम्भ से ही सचेत होकर अपना प्रयास प्रारम्भ कर सकता है, साधनात्मक उपाय द्वारा उनका फल घटा- बढ़ा सकता है अथवा समाप्त भी कर सकता है।

वस्तुतः ज्योतिष ज्ञान अत्यन्त गहन ज्ञान है और इसके द्वारा व्यक्ति जीवन की ऐसी अनेक स्थितियों को समझ सकता है अथवा किसी कुण्डली देखकर उसके चरित्र को समझ सकता है जो कि अन्यथा आचरण से स्पष्ट नहीं होता है।

राशिफल

मेष - एकाएक किसी कार्य में हाथ न डालें। मित्रों एवं सहयोगियों पर अंधविश्वास समझदारी नहीं होगी। यद्यपि इस माह आपके समक्ष अनेक सुअवसर उपस्थित होंगे किंतु आप विशेष सतर्कता के बाद ही उनका पूरा-पूरा लाभ उठा सकेंगे। दायित्व पूर्ण कार्यों को प्राथमिकता दें स्वास्थ्य में थोड़ी गिरावट आ सकती है किंतु उसका कारण शारीरिक न होकर मानसिक ही होगा। राज्यपक्ष से उलझाव की स्थिति को टालने का प्रयास करें। यात्राएं न करें। धन का सदुपयोग करने में सफल रहेंगे। आर्थिक स्थिति बस सामान्य ही रहेगी। प्रेम-प्रसंगों में असफलता। सम्पूर्ण रूप से अति व्यस्त माह।

वृषभ - कठिन परिश्रम व लगन से कार्य करने का माह है। स्थितियों को आप अपने पौरुष से अपने पक्ष में मोड़ने में सफल हो पाएंगे। सामाजिक कार्यों में असफल रहेंगे। यह माह आपको किसी एक विशेष बिन्दु पर ही केन्द्रित रखेगा—चाहे वह आपके व्यवसाय का हो अथवा कार्यालय की समस्याओं का। परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा जीवन साथी से विशेष मानसिक बल की प्राप्ति होगी। इस माह दुर्घटना का योग है अतः सावधानी रखे। शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। स्वभाव में किंचित कठोरता बनी रहेगी।

मिथुन - इस माह दाम्पत्य जीवन पर विशेष ध्यान देना पड़ सकता है। जीवन साथी के स्वास्थ्य की गड़बड़ी, उसके मानसिक तनाव अथवा किसी अन्य कारण से उसे आपका प्रबल सहयोग अपेक्षित रहेगा। इस कारणवश अन्य कर्त्तव्यों की पूर्ति में बाधा भी संभावित है। कार्यालय में अधिकारी वर्ग अनुकूल रहेगा। व्यवसायी वर्ग को भी प्रसन्नता का वातावरण प्राप्त होगा। धन की स्थिति सामान्य से कुछ ही श्रेष्ठ रहेगी, जबकि पूंजी-निवेश करने की दृष्टि से एवं आगामी समय को ध्यान में रखते हुए आर्थिक योजनाएं बना लेना लाभप्रद रहेगा। शत्रु-पक्ष की गतिविधियां समाप्त होंगी। यात्राएं अति आवश्यक होने पर ही करें।

कर्क - मन में रूमानी विचारों की अधिकता रहेगी। कल्पना लोक में विचरण करने की प्रवृत्ति भी बढ़ेगी। प्रेम-प्रसंगों में विशेष सक्रिय रहेंगे। कार्यों को सुचारु रूप से कर सकेंगे तथा लोकप्रियता बढ़ेगी। आर्थिक रूप से स्थिति संतोषजनक रहेगी। व्यवसायी वर्ग को विशेष लाभ होगा। किसी गुप्त चिंता का अंत होगा। स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। मित्रों से अनबन होगी। मास के अंत में विशेष सावधानी के साथ कर्त्तव्यों की ओर ध्यान दें, क्योंकि इस समय लाभ के अनेक अवसर उपलब्ध होंगे जिनके दूरगामी परिणाम होंगे।

सिंह - योग्य सहयोगी के अभाव में कार्यों को उचित गति देने में स्वयं को असमर्थ पायेंगे। आपकी स्पष्टवादिता हानिकारक सिद्ध हो सकती है भले ही आपका मन्तव्य किसी को क्लेश पहुंचाना न रहा हो। कार्यालय में तालमेल बिठाने में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं। स्थान परिवर्तन एवं यात्राओं की स्थिति लाभदायक सिद्ध होंगी। स्वास्थ्य सामान्य तौर पर ठीक रहेगा, किंतु थोड़ी सी उत्तेजना भी हानिकारक व पीड़ादायक सिद्ध हो सकती है। धन के अपव्यय से बचें। माह के अंत तक आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। पारिवारिक दृष्टि से स्थिति सामान्य ही रहेगी।

कन्या - काफी समय से मन में चली आ रही कोई विशेष इच्छा पूर्ण होगी। मन में उल्लास रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठता पुनः प्राप्त होगी। पुत्र-सुख मिलेगा। दाम्पत्य जीवन सामान्य ही रहेगा। जमा-पूंजी में वृद्धि होगी। हीनता की स्थिति समाप्ति होगी तथा नये कार्यों के लिए मन में संकल्प प्रबल होगा। बुध की गोचरीय स्थिति से सम्पूर्ण माह संतुलन बना रहेगा। मित्रों की ओर विशेष सहयोग नहीं मिलेगा। शत्रुपक्ष पीड़ा देने के प्रयास में रहेगा। माह के अंत में कुछ विपरीत परिस्थिति देखनी पड़ सकती है।

तुला - मन असंयमित रहेगा। कार्यों को व्यवस्थित रूप देने में कठिनाई अनुभव करेंगे। परस्पर विरोधी विचारों के द्वन्द्व में उलझाव बना ही रहेगा। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता। आय की स्थिति सामान्य से कुछ अच्छी रहेगी। व्यय पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित होगा। घर-परिवार से वैमनस्य बढ़ेगा। छोटे भाई द्वारा कष्ट प्राप्त होना भी सम्भावित हैं। यात्राओं की दशा बन-बन कर बिगड़ेगी। मित्रों के व्यवहार से आघात लगेगा। सरकारी कार्यों में बार-बार बाधाएं आएंगी। एकांतिकता की प्रवृत्ति बढ़ेगी। माह के अंतिम सप्ताह में सुधार अनुभव करेंगे।

धनु - बृहस्पति की गोचर में स्थिति के कारण यह माह अत्यंत प्रसन्नता व मानसिक संतोष देने वाला सिद्ध होगा। मनचाहे कार्य स्वयंमेव बनते चले जाएंगे। धनागम का कोई स्रोत प्राप्त होगा तथा जो व्यक्ति रोजगार प्राप्ति की दिशा में बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं, उन्हें मनोनुकूल कार्य प्राप्त होगा। धन की स्थिति बहुत प्रबल तो नहीं रहेगी, किंतु विशिष्ट अवश्य बनी रहेगी। विवाह की दशा में किए जा रहे प्रयासों को निश्चित रूप से इस माह साकार रूप मिलेगा। मन में विश्वास पनपेगा तथा नये कार्य करने के विचार सूझेंगे। माह के अन्त में स्वास्थ्य की सामान्य गड़बड़ी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ - जीवन की मनोवांछित स्थितियों में पर्याप्त उन्नति नहीं प्राप्त हो सकेगी। चिन्तातुरता में ही सम्पूर्ण माह व्यतीत होगा। राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय लोगों को कड़ी स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। महत्वपूर्ण सौदों में जोखिम उठाने के लिए तैयार रहें। प्रेम-प्रसंगों में प्रगाढ़ता आयेगी, दाम्पत्य जीवन में व्यस्तता रहेगी। आर्थिक रूप से स्थिति प्रबल रहेगी। धन का संचय होगा। दुर्घटनाओं से सावधान रहे, विशेष रूप से वाहन प्रयोग में। आवश्यकता से अधिक किसी पर भी विश्वास न करें। यात्राएं लाभदायक सिद्ध होंगी।

वृश्चिक - मन में क्रोध बना रहेगा। कार्यों में अड़चने आती रहेंगी। किसी महत्वपूर्ण कार्य को आरम्भ करने के बाद उसके विकास में अवरोध उत्पन्न हो जायेगा। गृह-निर्माण आदि कार्यों में धन को नियोजित न करें। १७ तारीख के आसपास शेयर आदि माध्यम से प्रबल आकस्मिक धन-लाभ होगा। पुत्र की उन्नति से मन में विशेष हर्ष रहेगा। सरकारी कामकाज में व्यवहारिक कठिनाइयों से जूझना पड़ेगा। शत्रु हताश होंगे। व्यवसायी वर्ग को किञ्चित हानि का सामना करना पड़ सकता है जबकि नौकरी पेशा व्यक्तियों को अपने कार्य से अरुचि होगी।

मकर - विभिन्न दायित्वपूर्ण कार्यों में धन का व्यय होगा। नये अधिकारों की प्राप्ति के साथ-साथ कार्यों का दायित्व भी उतना ही सघन होगा, व्यापार से मुनाफा होगा। नवीन सम्बन्ध बनेंगे तथा पुराने सम्बन्धों में बिखराव आयेगा। इस माह एकदम से महत्वाकांक्षाएं बढ़ेगी तथा उनकी पूर्ति के मार्ग भी प्राप्त होंगे। धन को नियोजित अवश्य करें किन्तु सट्टे आदि से बचें। दिनांक ४, १८, २२ इस दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। परिवार का संग, आनन्द व मनोरंजन के क्षण विरल ही रहेंगे।

मीन - गम्भीरता बढ़ेगी, मन में उद्वग्निता रहेगी, किसी गुप्त चिन्ता के कारण चिन्तातुर रहेंगे। आर्थिक विषमताएं बढ़ने की भी प्रबल संभावनाएं हैं। स्वास्थ्य में ढीलापन व आलस्य बना रहेगा। कार्य-क्षमता घटेगी। अकेले रहने की प्रवृत्ति पुनः बलवती होगी। सामाजिक रूप से तालमेल बैठाने में कठिनाई अनुभव करेंगे। शत्रुपक्ष गतिशील रहेगा। किसी विशेष सहयोग से समस्याओं के समाधान प्राप्त होंगे। प्रियजनों का संग कम ही रहेगा। अध्यात्मिकता की प्रवृत्तियां बढ़ेंगी। माह के अन्त में स्थितियां एकदम से अनुकूल होंगीं।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०१.०६.९४	ज्येष्ठ कृष्ण ८	सर्व सिद्धि दिवस
०४.०६.९४	ज्येष्ठ कृष्ण ११	अपरा एकादशी
०९.०६.९४	ज्येष्ठ १५	शनि जयन्ती
१२.०६.९४	ज्येष्ठ शुक्ल ३	राहु जयन्ती (रवि पुष्य)
१७.०६.९४	ज्येष्ठ शुक्ल ८	धूमावती जयन्ती
१९.०६.९४	ज्येष्ठ शुक्ल १०	बटुक भैरव जयन्ती
२५.०६.९४	**आषाढ़ कृष्ण २**	**संन्यास जयन्ती**
२६.०६.९४	आषाढ़ कृष्ण ३	पाप मोचनी तृतियां
०२.०७.९४	आषाढ़ कृष्ण ९	सिद्धाश्रम जयन्ती
०४.०७.९४	आषाढ़ कृष्ण ११	योगिनी एकादशी
०८.०७.९४	**आषाढ़ अमावस्या**	**निश्चित सिद्धि दिवस**
१०.०७.९४	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया	जगन्नाथ दिवस
१७.०७.९४	आषाढ़ शुक्ल नवमी	केतु सिद्धि दिवस
२२.०७.९४	**आषाढ़ पूर्णिमा**	**गुरु पूर्णिमा**
२३.०७.९४	श्रावण कृष्ण प्रतिप्रदा	शून्य सिद्धि दिवस
२७.०७.९४	श्रावण कृष्ण पंचमी	महालक्ष्मी जयन्ती

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

प्रश्न— **महाविद्याओं में से कौन सी साधना करूं?**
उत्तर— त्रिपुर भैरवी महाविद्या।

अशोक कुमार, दुर्ग
प्रश्न— **कौन सा रत्न धारण करूं?**
उत्तर— माणिक्य।

नन्दकिशोर गुप्ता, सोलन
प्रश्न— **स्वभाव की कमियां कैसे दूर होंगी?**
उत्तर— महाविद्या कमला साधना सम्पन्न करें।

अशोक कुमार, रेवाड़ी
प्रश्न— **क्या मुझे तंत्र में सफलता मिलेगी?**
उत्तर— अत्यंत कठिन परिश्रम के बाद।

सुरेश चन्द्र गुप्ता, इलाहाबाद
प्रश्न— **ऋण मुक्ति कब तक?**
उत्तर— जमा पूंजी व्यय करके ही ऋण मुक्ति शीघ्र संभव होगी।

अशोक कुमार गुप्ता, झांसी
प्रश्न— **पुत्र प्रप्ति क्या संभव है?**
उत्तर— पुत्र प्राप्ति का योग है किन्तु गर्भ रक्षा प्रयोग अवश्य सम्पन्न करवा लें।

अनिल कुमार, पटियाला
प्रश्न— **सुख-शांति से जीवन व्यतीत हो, क्या करूं?**
उत्तर— छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न करें।

निर्मला देवी, संगरूर
प्रश्न— **आंखों से दो-दो दिखाई देता है तथा हृदय कष्ट भी है।**
उत्तर— प्रबल तांत्रिक प्रयोग है। निवारक प्रयोग सम्पन्न करें।

कु० सुरेखा भगत, भोपाल
प्रश्न— **नौकरी कब लगेगी?**
उत्तर— नौकरी प्राप्ति कठिन है।

संजीव कुमार माहेश्वरी, भटिंडा
प्रश्न— **भविष्य कथन हेतु कौन सी साधना सम्पन्न करूं?**
उत्तर— फरवरी अंक में प्रकाशित पंचांगुली साधना।

मनोज त्यागी, गाजियाबाद
प्रश्न— **दाम्पत्य जीवन व प्रमोशन के विषय में बताएं।**
उत्तर— दाम्पत्य जीवन में स्थिति सुधार कठिन, प्रमोशन नवम्बर माह तक।

राजीव, नई दिल्ली
प्रश्न— **व्यवसाय कब और कैसा होगा?**
उत्तर— कन्सल्टेंसी फर्म का व्यवसाय लाभदायक रहेगा।

हुक्म सिंह, गाजियाबाद
प्रश्न— **पुश्तैनी जायदाद कब तक प्राप्त होगी?**
उत्तर— लगभग सात वर्ष बाद, किन्तु सम्पूर्ण रूप से आपको ही।

मनोहर लाल, अम्बाला
प्रश्न— **आर्थिक उन्नति कब तक और कैसे?**
उत्तर— फरवरी अंक में प्रकाशित कामाख्या तंत्र द्वारा धन प्राप्ति प्रयोग ही एकमात्र उपाय।

दिनेश कुमार गुप्ता, डोम्बीवली
प्रश्न— **भविष्य उज्ज्वल करने के लिए मैं क्या करूं?**
उत्तर— भाग्योदय साधना।

अशोक कुमार, रोपड़
प्रश्न— **कुण्डलिनी साधना में सफलता कब तक मिलेगी?**
उत्तर— तांत्रोक्त गुरु साधना करें, अत्यन्त शीघ्रता से लाभ होगा।

विक्रम एच० सोनी, बम्बई
प्रश्न— **शाश्वत धन प्राप्ति के लिए कौन-सी साधना सम्पन्न करूं?**
उत्तर— महाविद्या तारा साधना।

चन्द्रप्रकाश, रायबरेली
प्रश्न— **आर्थिक स्थिति का सुधार कैसे?**
उत्तर— प्रबल तांत्रिक प्रयोग। भैरव साधना सम्पन्न करें।

सुव्रत कुमार पटेल, सुंदरगढ़ (उड़ीसा)
प्रश्न— **मैं इंजीनियरिंग में प्रवेश पाऊंगा या नहीं।**
उत्तर— नहीं।

नवीन कुमार, गुड़गांव
प्रश्न— **क्या मैं परीक्षा में सफल रहूंगा?**
उत्तर— कड़े परिश्रम के बाद ही सफलता सम्भावित है।

मुकेश चन्द्र वर्मा, एटा
प्रश्न— **मुंसिफ परीक्षा में सफलता कब तक?**
उत्तर— सफलता संदिग्ध है

संजीव आर० शर्मा, नवसारी
प्रश्न— **मेरे लिए व्यापार लाभदायक है या नौकरी?**
उत्तर— व्यापार।

सुनील कुमार पी० सी०, बुरहानपुर
प्रश्न— **कौन सी साधना करूं?**
उत्तर— नर्मदेश्वर प्रयोग को पुनः करें।

धर्मेन्द्र पाण्डेय, गोरखपुर
प्रश्न— **क्या मैं प्रशासनिक अधिकारी बनूंगा?**
उत्तर— पी० सी० एस० में सम्भावनाएं प्रबल हैं।

विलाश वी०, संजाण
प्रश्न— **पिता की ऋण मुक्ति का उपाय बताएं?**
उत्तर— पन्ना रत्न (३ रत्ती का) धारण कराएं।

अवधेश कुमार झा, समस्तीपुर
प्रश्न— **सर्वांगीण विकास कैसे होगा?**
उत्तर— नियमपूर्वक तांत्रोक्त गुरु साधना करें।

जय कुमार, सतना
प्रश्न— **व्यापार में लाभ कब तक?**
उत्तर— इसी वर्ष सितम्बर तक स्थितियों में सुधार होगा।

Vasant V. Puranik
Dubai
Q. Shiping Business will success to me?
A. No.

Paarwati Berthier
Mautitus
Q. **Will my personal Problem be solved.**
A. No.

कूपन क्रमांक :- १२० (**कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे**)

नाम :-..
जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............
जन्म स्थान .... जन्म समय ....
पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..
....
आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-११००३४

केवल साधनात्मक उत्तर प्राप्त करने के लिए पोस्ट कार्ड(पता लिखा) प्रेषित करें

व्यापार में सफलता कैसे मिले?

जीवन के व्यवहारिक पक्ष अर्थात् अर्थोपार्जन को यदि जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया गया अथवा उसकी उपेक्षा की गयी तो जीवन का दूसरा पक्ष अर्थात् पारलौकिक भी नहीं संवर सकता, क्योंकि जिस आधार पर खड़े होकर हम क्रियाशील हैं, वह भौतिक ही तो है . . .

व्यापार में सफलता कैसे मिले? अर्थात् इस जगत-व्यापार में सफलता कैसे मिले, यह जान लेना और भली-भांति आत्मसात कर लेना भी एक साधना ही है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन के इस पक्ष को नहीं समझ पाता और न अपने जीवन में वे सूत्र उतार पाता है जिनसे उसे सहज आर्थिक सफलता प्राप्ति की दशा बन सके। **जिस प्रकार आध्यात्मिक जगत में साधना के निश्चित सूत्र होते हैं, सफलता-प्राप्ति के सरल उपाय होते हैं, उसी प्रकार व्यवहारिक जगत में भी सरल सूत्रों को प्राप्त किया जा सकता है** और उन्हें अपने दैनिक जीवन में एक स्थान देकर अपना भौतिक जीवन संवारा जा सकता है।

यह भी एक साधना है, यह भी तो एक योग है। निरन्तर गतिशील रहते हुए भी आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सचेत रहना, यही वास्तविक कर्मयोग है। और ऐसे कर्मयोगी के समक्ष साधना और सिद्धियां एक प्रकार से आत्मसमर्पण करने को विवश हो जाती हैं। व्यक्ति न तो इस संसार के व्यवहारिक चक्र से अलग हो सकता है और न उसे ऐसा करने की मिथ्या धारणा ही दी जा सकती है। इस प्रकार के कोरे उपदेश देने से व्यक्ति का न तो भरण-पोषण हो सकता है, न ही उसके अन्य आवश्यक खर्चों की पूर्ति हो सकती है और जो भी इस प्रकार का उपदेश देते हैं वे एक प्रकार से मिथ्याचार को ही बढ़ावा देते हैं। ऐसे मिथ्याचारों से ही विसंगतियां, छल, पाखण्ड, धूर्तता और व्यभिचार का जन्म होता है। ध्यान, धारणा और समाधि की स्थितियों को प्राप्त करने के भी पहले की साधना अर्थ-साधना ही है जो देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से प्रमुख स्वरूप महालक्ष्मी की ही आराधना है।

जीवन में महालक्ष्मी की साधना-आराधना प्रत्येक साधक को करनी पड़ती ही है। दैनिक रूप से जीवन-यापन करने वाले साधक को भी और नियमित रूप से आय प्राप्ति का साधन रखने वाले अर्थात् वेतन भोगी साधक को भी, क्योंकि जीवन की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति केवल अर्थ की उपासना से ही सम्भव है। **अर्थ की साधना वास्तव में जीवन की एक प्रबल आवश्यकता है न कि भोग-विलास, ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु की गयी साधना।** महालक्ष्मी का वरदायक स्वरूप प्राप्त किए बिना कोई भी तो अपने जीवन को परिपूर्ण नहीं कर सकता। व्यवसायी वर्ग के लिए महालक्ष्मी की साधना का विशेष अर्थ होता है। केवल व्यापार की वृद्धि के लिए अथवा धन की प्रबल प्राप्ति के लिए ही नहीं वरन् इस रूप में भी कि उसके दैनिक क्रिया-कलाप में पग-पग पर कठिनाइयां और अड़चने न आएं। व्यवसायी वर्ग को चौतरफा ध्यान देकर अपने को निरन्तर गतिशील बनाए रखना पड़ता है। व्यापार में

प्रतिद्वन्द्विता और दामों में उतार-चढ़ाव को सहना तो उसके लिए रोजमर्रा की बात ही होती है किन्तु उसका मन तब टूट जाता है, जब उसके ग्राहक टूट जाते हैं या किसी कारणवश साख पर कोई विपरीत बात आ जाती है अथवा वह ऋण के लेन-देन में फंस जाए। ऐसी कठिन परिस्थितियों के पीछे कारण केवल यही होता है कि उसकी **दुकान अथवा व्यवसाय स्थल में 'श्री' का वास नहीं होता, 'श्री' की स्थापना एवं साधना नहीं होती।**

व्यापार से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के कार्य स्थल पर लक्ष्मी का स्थापन और पूजन तो अवश्य होता है, विघ्न-विनाशक श्री गणपति का भी पूजन होता है तथा श्रद्धा के अनुसार अन्य देवी-देवताओं के भी चित्र लगे होते हैं, जिनका नियमित पूजन करके ही वे अपना दैनिक व्यापार आरम्भ करते हैं किन्तु केवल इतने से ही व्यवसाय में सफलता मिल जाए, यह सुनिश्चित और बाध्यकारी नहीं होता जबकि सफलता और अर्थ प्राप्ति का ऐसा उपाय होना चाहिए जो एक प्रकार से बाध्यकारी हो अर्थात् ग्राहक को जहां अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ हो वही लक्ष्मी को विवश कर दे कि वह उसके व्यापार स्थल में आकर स्थापित ही हों। यह बाध्यकारी उपाय या विवश कर देना किसी वल प्रयोग से नहीं विशिष्ट प्रक्रिया द्वारा ही किया जा सकता है। अधिकांश व्यवसायी बंधु इस बात का रहस्य नहीं जानते अतः उन्हें नित्य-प्रति के जीवन में अभाव व तनाव का सामना करना ही पड़ता है।

लक्ष्मी की इस रूप में स्थापना, **'श्री'** का आह्वान सम्भव करने की युगों-युगों से केवल एक ही विधि, एक ही उपाय प्रामाणिक माना गया है और वह है **'श्री यंत्र'**। श्री यंत्र एक प्रकार से भारतीय साधना-चिन्तन का पर्यायवाची बनकर केवल भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में विख्यात हो चुका है और प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान, भारतीय यंत्र विद्या के अन्वेषक **सर जॉन वुडरोफ** ने इसकी सम्भावनाओं और शक्तियों का विश्लेषण करने के पश्चात् हतप्रभ होकर स्वयं को केवल इतना ही कहने में सक्षम पाया कि **जिस देश में ऐसे दुर्लभ यंत्र का निर्माण किया गया हो वह भला सोने की चिड़िया क्यों न कहलाता** और वास्तव में सत्य भी यही है। भारत के वैभवशाली मंदिरों, प्रसिद्ध व्यवसायियों और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर श्रीयंत्र को उत्कीर्ण करना कोई नई बात नहीं रही। देश के सुविख्यात उद्योगपति घराने की सफलता का रहस्य भी यही श्री यंत्र है जो उनकी पुश्तैनी गद्दी में कई पीढ़ियों पूर्व किसी घुमक्कड़ साधु द्वारा स्थापित किया गया था। सर जॉन वुडरोफ की प्रेरणा पर ही इस यंत्र को पश्चिमी विद्वान अपने देश ले गये और जब वे इसके सामान्य अध्ययन में सफल नहीं हो पाए तब अत्याधुनिक कम्प्यूटरों की मदद से इसकी रचना को समझने का प्रयत्न किया। इसके विभिन्न त्रिकोणों में निहित शक्तियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया। और वे जितना ज्यादा इसको समझने का प्रयास कर रहे हैं, उतना ही अधिक आश्चर्य में भरते जा रहे हैं क्योंकि श्री यंत्र का स्वरूप इसी प्रकार से है।
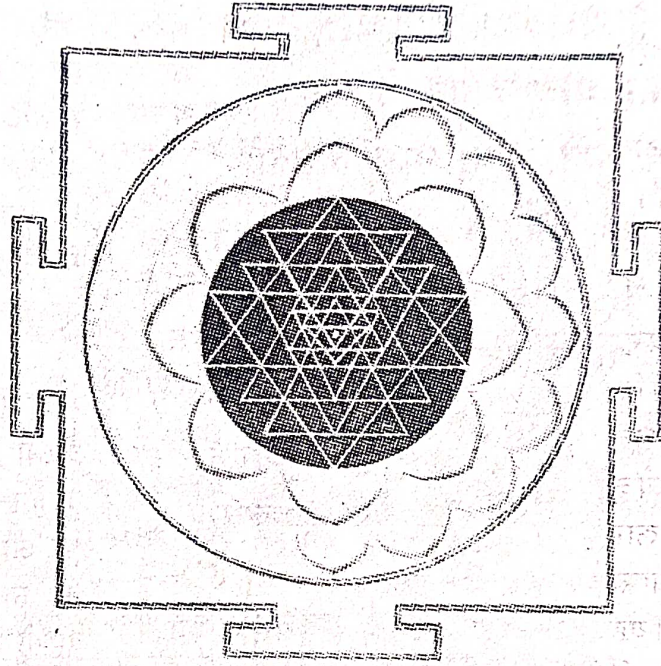
श्री यंत्र का स्वरूप

मध्य में बिन्दु- भगवती पराम्बा के प्रतीक स्वरूप में, उसके ऊपर त्रिकोण- जो लक्ष्मी का प्रतीक है, त्रिकोण के ऊपर अष्ट त्रिकोण- अष्ट लक्ष्मियों का प्रतीक, अष्ट त्रिकोण के ऊपर दस त्रिकोण- दस सम्पदाओं के प्रतीक तथा इसके भी ऊपर चतुर्दश त्रिकोण जो १४ शक्तियों के प्रतीक हैं। तदुपरान्त अष्टदल एवं अष्टदल के ऊपर षोडश पद्मदल जीवन की आठ सम्पत्तियों और षोडश कलाओं के प्रतीक हैं। यंत्र के चतुर्दिक तीन शक्तियों के प्रतीक में तीन परिधियां। **यदि गणना करके देखा जाए तो श्री यंत्र में २८१६ शक्तियों का समन्वित स्वरूप है।** श्री यंत्र का रहस्य केवल उसके स्वरूप में ही नहीं उसके निर्माण में भी छुपा है। सिद्धि प्राप्ति के लिये अलग ढंग से तथा दारिद्र्यनाश के लिये सर्वथा भिन्न प्रकार से श्री यंत्र का अंकन किया जाता है। जब तक इसको सही ढंग से उत्कीर्ण नहीं किया जाता तब तक इसका प्रभाव भी प्राप्त नहीं होता।

जीवन की विभिन्न दशाओं

हेतु मुख्यतः आठ प्रकार के श्रीयंत्र माने गए हैं।

१. मेरु पृष्ठीय श्रीयंत्र २. कूर्मपृष्ठीय श्रीयंत्र ३. धरा पृष्ठीय श्रीयंत्र ४. मत्स्य पृष्ठीय श्रीयंत्र ५. ऊर्ध्व रूपीय श्रीयंत्र ६. मातंगीय श्रीयंत्र ७. नवनिधि श्रीयंत्र ८. वाराहीय श्रीयंत्र।

भिन्न-भिन्न कार्यों के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के श्रीयंत्र का प्रयोग किया जाता है किन्तु गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तथा व्यवसाय स्थल पर स्थापित करने के हेतु कूर्मपृष्ठीय श्रीयंत्र ही सर्वोत्तम माना गया है।

केवल व्यवसाय स्थल में ही नहीं वरन् घर के पूजा-स्थान में भी ऐसे श्रेष्ठ यंत्र की स्थापना सौभाग्यदायक कही गयी है क्योंकि यह केवल लक्ष्मी का ही आधारभूत यंत्र नहीं वरन् 'श्री' का आधार यंत्र है, जिसकी स्थापना से विभिन्न प्रकार के तनाव, बाधाएं और अड़चनें समाप्त होने की स्थितियां बनने लगती हैं। यह यंत्र जहां एक ओर वरदायक है वहीं विघ्न-विनाशक भी है अतः व्यवसाय स्थल में इसका स्थापन तो निश्चित रूप से आवश्यक हो जाता है। साधक जहां कुबेर यंत्र की स्थापना करता है वहीं उसे श्रीयंत्र की स्थापना भी करनी ही चाहिए। **श्रीयंत्र, कुबेरयंत्र एवं कनकधारा यंत्र- इन तीनों यंत्रों की स्थापना से सौभाग्य का एक क्रम बनता है** और यदि श्रीयंत्र पर अष्टलक्ष्मी सम्पुट व प्राणसंजीवनी क्रिया सम्पन्न की गयी हो तो वह यंत्र भावी पीढ़ियों के लिये भी लाभदायक सिद्ध होता है। जो अपने व्यापार में धन, यश, मान, पद प्रतिष्ठा सभी कुछ प्राप्त करने के इच्छुक हों, समाज में अपना स्थान बनाने को आतुर हो उन्हें ऐसा धातु निर्मित यंत्र अवश्य ही स्थापित करना चाहिए।

❁ मैंने अपने उद्योग स्थल में श्रीयंत्र की स्थापना की और अनुभव किया कि इससे श्रेष्ट यंत्र कोई अन्य हो ही नहीं सकता।

– प्रसिद्ध उद्योगपति
श्री जे. के. मुरारका

❁ श्री यंत्र की संरचना द्वारा प्रकार से है कि एक त्रिकोण के उपर दूसरा त्रिकोण निर्मित होकर एक नयी शक्ति का निर्माण कर देता है जिससे यह जहां भी स्थापित होता है वहीं अपना प्रभाव, अपनी शक्ति प्रदर्शित करने लगता है।

– योगी नित्यानन्द
देव प्रयाग

❁ जिस देश ने श्रीयंत्र जैसी दुर्लभ रचना की हो जीवन की सभी २८१६ स्थितियों को इस प्रकार अंकित करने की चेष्टा की हो फिर भला वह देश दरिद्री रह भी कैसे सकता था?

– सर जॉन वुडरोफ
प्रख्यात पाश्चात्य तंत्र विशेषज्ञ

आगामी दिनों में एक अत्यन्त विशिष्ट मुहूर्त **महालक्ष्मी जयन्ती** का पर्व पड़ रहा है जो इस वर्ष **२७-७-९४** को घटित होगा। महालक्ष्मी का यह चैतन्य दिवस ऐसे यंत्र की स्थापना के लिये सर्वाधिक सिद्ध मुहूर्त माना गया है। यों तो ऐसे श्रेष्ठ यंत्र को किसी भी बुधवार को स्थापित किया जा सकता है किन्तु महालक्ष्मी दिवस के दिन स्थापित करने से तथा इसी यंत्र पर एक छोटा सा प्रयोग सम्पन्न कर लेने से अधिक अनुकूलता रहती है। साधक को चाहिए कि वह ऐसे यंत्र को बहुत पहले से ही प्राप्त कर लाल कपड़े पर स्थापित कर यदि **कमलगट्टे की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप कर तो यह यंत्र सम्पूर्ण रूप से भावी पीढ़ियों तक के लिए चैतन्य व परिवार से सम्बन्धित हो जाता है।

मंत्र

।।ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं
जगत्प्रसूत्यै नमः।।

बाजोट पर समतल भूमि पर या लाल कपड़े बिछाकर श्री यंत्र स्थापित कर दें। नित्य प्रति एक बार इसके दर्शन करना और श्रद्धाभाव से यदि सम्भव हो तो सामान्य पूजन कर लेना उपयोगी रहता है। इस यंत्र को बार-बार इधर से उधर नहीं ले जाना चाहिए। ऋण मुक्ति, रोग निवृत्ति, स्वास्थ्य लाभ, पारस्परिक सौजन्य, पारिवारिक सुख-संतोष के लिये भी इस यंत्र से श्रेष्ठ कोई भी यंत्र नहीं माना गया है।

कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
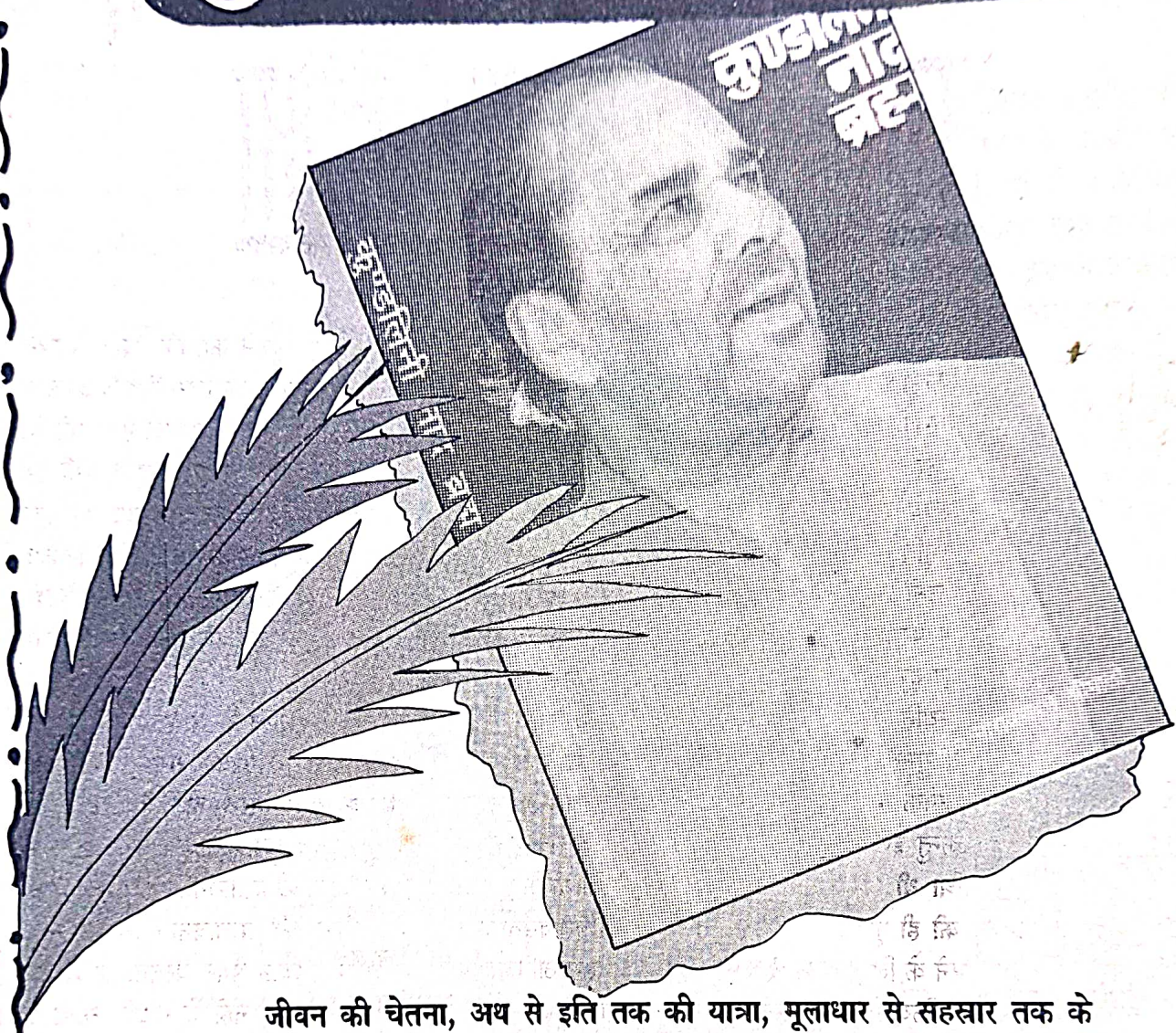
काहे री नलिनी तू कुम्हलानी

सहस्रार जागरण दीक्षा

श्री रामकृष्ण परमहंस ने आह्लाद के किन्हीं क्षणों में अपने समस्त शिष्यों को एकत्र कर उनके प्रति विशेष कृपालु होकर यह निश्चय किया कि वे उस रहस्य, उस दिव्य अनुभूति और उस आनन्द को बता ही देंगे, जो उन्हें प्रायः प्राप्त होता रहता था। रामकृष्ण परमहंस अपनी भाव समाधि के कारण दूर-दूर तक विख्यात हो गए थे और इस स्थिति तक पहुंच गए थे कि "काली" शब्द सुनते ही समाधिस्थ हो जाते थे। उनके अनेक भक्त इसे पाखण्ड भी समझते थे, किन्तु **इसके मूल में जो रहस्य व दिव्य यात्रा थी वह वास्तव में कुण्डलिनी जागरण की ही पूर्ण अवस्था थी।** इसी को व्यक्त करने के लिए रामकृष्ण ठाकुर ने बताना प्रारम्भ किया कि जब कुण्डलिनी मूलाधार से अपनी प्रसुप्ति छोड़कर आगे बढ़ती है, उसमें जागरण की अवस्था या स्फुरण प्रारम्भ होता है तब क्या अनुभूति होती है, और क्रमशः स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, एवं विशुद्ध चक्रों पर क्या-क्या दिव्य अनुभूतियां होती हैं, इसके बाद आज्ञा चक्र पर कैसा प्रकाश अनुभव होता है तथा यहां तक स्पष्ट करने के बाद उन्होंने कहना प्रारम्भ किया- **और जब यह कुण्डलिनी शक्ति आज्ञा चक्र से ऊपर बढ़ती है तो . . .** इतना कहते-कहते उनकी समाधि लग गयी। कुछ क्षणों बाद जब वे पुनः प्रकृतिस्थ हुए तब पुनः प्रारम्भ किया और वही वाक्य कहते-कहते समाधिस्थ हो गए। निरन्तर तीन बार इसी क्रम के होने पर वे अंत में विवश होकर आंखों में आंसू भरकर केवल इतना ही कह सके "शायद मां काली की इच्छा नहीं है कि यह रहस्य तुम सभी के समक्ष उद्‌घाटित हो।"

कालांतर में उनके प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानंद ने इस घटना को स्पष्ट किया कि, वे बाद में ही समझ सके कि यह तो अवर्णनीय सुख है, विलक्षण अनुभूति है इसे तो व्यक्त किया नहीं जा सकता, किन्तु उनके गुरुदेव का अपने शिष्यों के प्रति जो अनुग्रह था, वह उन्हें उद्वेलित करता रहता था कि अपने शिष्यों को उस अनिवर्चनीय आनन्द से परिचित करा दें।

कुण्डलिनी यात्रा ऐसे ही अनिवर्चनीय आनन्द की यात्रा है और इसका कोई भी वर्णन, कोई भी तथ्य, कोई भी रहस्य उद्‌घाटित किया ही नहीं जा सकता, क्योंकि जिस स्तर को प्राप्त करने के बाद वास्तविक आनन्द प्रारम्भ होता है, यथार्थ में सुख परिलक्षित होता है, उस स्तर तक पहुंचने के लिए कड़ा परिश्रम करना होता है। यह स्तर होता है मूलाधार से लेकर आज्ञा चक्र की यात्रा तक पूर्ण करने का अर्थात् शक्ति के उद्‌गम से लेकर शिव के स्थान तक पहुंचने का, फिर यहीं से शिव व शक्ति संयुक्त होकर जिस निर्द्वन्द्व आकाश में विचरण करने को सन्नद्ध हो जाती हैं, वह आकाश होता है इसी घट में, इसी देह में स्थित सहस्रार चक्र का- जहां एक-एक बिन्दु पर अमृत छलक रहा है, जिस सरोवर में आनन्द के सैकड़ों-सैकड़ों मोती बिखरे पड़े हैं, और जहां चिरमौन का शाश्वत साम्राज्य है।

कुण्डलिनी जागरण की यात्रा षट्‌चक्र भेदन के पश्चात् समाप्त नहीं होती वरन् यथार्थ में आरम्भ होती है। इसके पूर्व तो मानों सब कुछ प्रस्तावना जैसी थी- एक विराट यात्रा की प्रस्तावना, एक शाश्वत पथ पर चलने की प्रस्तावना। आध्यात्मिक जगत में षट्‌चक्र भेदन वस्तुतः अत्यधिक महत्वपूर्ण घटना नहीं है यद्यपि सामान्य जीवन क्रम को छोड़कर विशिष्ट बनने की प्रक्रिया अवश्य है। मूलाधार जहां प्रसुप्ति की अवस्था है, और आज्ञा चक्र जहां शिव-शक्ति सायुज्य की दशा है, वहीं फिर सहस्रार-भेदन और सहस्रार में अवस्थित होना जीवन का सर्वोच्च आनन्द है। जीवन की मूल शक्ति कुण्डलिनी शक्ति जब गुरु-कृपा से चैतन्य होती है तो अपना अधोगामी प्रवाह त्याग कर ऊर्ध्वगामी होती है तथा एक-एक चक्र पर विलक्षण अनुभूतियां प्रदान करती हुई अंत में आज्ञा चक्र पर

विश्राम करती है, किन्तु यह विश्राम मात्र ही होना चाहिए, यह पड़ाव नहीं है। एक प्रकार से भावी उन्मुक्त यात्रा को सम्पन्न करने के लिए ऊर्जा का संग्रहण है और इस रूप से भी अधिक वह स्थिति है जहां व्यक्ति पहली बार तनाव मुक्त होने का रहस्य सीखता है, द्वंद्व रहित होना सीखता है, दबाबों से सर्वथा निर्विकल्प होने की कला जानता है और समस्त राग, द्वेष, विकार से एक ही पल में मुक्त होकर उस आकाश में विस्तृत होकर उड़ान भरने की कला सीख लेता है, जिसे योगियों की भाषा में चिदाकाश कहा गया है। तब उसका चित्त आकाश सदृश्य होकर सभी के चित्त को अपने में समाहित कर लेता है, फलस्वरूप ऐसा व्यक्ति सहज ही त्रिकालदर्शी, गोपनीय तथ्यों को जानने वाला होता हुआ साक्षात् ब्रह्म स्वरूप बनने की क्रिया में संलग्न हो जाता है।

कुण्डलिनी जागरण जीवन की अत्यावश्यक यात्रा है किन्तु इतनी सहज भी नहीं। ऊर्ध्वगामिता की यात्रा इतनी सहज हो भी नही सकती किन्तु यही उर्ध्वगामिता ही अन्ततोगत्वा जीवन में ऐसी सुगन्ध और निर्मलता लाने में समर्थ होती है जो प्रेम, शान्ति, दया, ममता, जैसी भावनाओं का मूल है। मूलाधार से ऊपर उठने के पश्चात्, प्रबुद्ध (या शक्ति - युक्त) कुण्डलिनी निरन्तर छटपटाती हुई अपने प्रवाह को व्यक्त करना चाहती है। **यदि वैज्ञानिक भाषा में कहें तो शरीर की जैविक ऊर्जा प्रस्फुटित होकर उन क्षेत्रों में जाने को व्यग्र हो उठती है जिनसे सहज सुखानुभूति होती है** और ये स्थितियां काम, क्षुधा की है, किन्तु जब सद्गुरु के निर्देशन में इन्हें ऊर्ध्वगामी किया जाता है तब एक स्वतः स्फूर्त प्रवाह से यही शक्ति क्रमशः एक के बाद एक चक्र का भेदन करती जाती है।

कुण्डलिनी जागरण के क्रम में इसी कारणवश पग-पग पर साधक को जरूरत से ज्याद तनाव और द्वंद्व सहन करने पड़ते हैं, धैर्य रखने के पश्चात् जब कुण्डलिनी जागरण के उच्चतम सोपान पर आज्ञा चक्र का स्पर्श हो जाए तब साधक को प्रयास करके इसके आगे का क्रम अवश्य प्राप्त करना चाहिए। **प्रायः यह भी होता है कि साधक को आज्ञा चक्र का स्पर्श प्राप्त कर लेने के बाद एक विचित्र सी सुखद अनुभूति होती है लेकिन यही सुखानुभूति उसके पतन कारण भी बन सकती है।** इस स्तर तक साधक में वह क्षमता नहीं आ पायी होती है कि वह कुण्डलिनी जागरण के वेग को, उसके प्रभावों को धारण कर सके अतः कुण्डलिनी जागरण दीक्षा अथवा षट्चक्र जागरण दीक्षा के पश्चात् योग्य साधक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह सहस्रार जागरण दीक्षा भी प्राप्त करें।

वस्तुतः कुण्डलिनी यात्रा का पथिक यह स्पष्ट जानता ही नहीं कि वह किस लक्ष्य के लिए गतिशील है। वह जिस आध्यात्मिक लाभ की चर्चा करता है उसका निश्चित तात्पर्य क्या है? वह आनन्द कैसा है? वह अलौकिक अनुभूति कैसी है? क्योंकि जो इस अलौकिक आनन्द का वर्णन करके बता सके वे स्वयं श्री रामकृष्ण परमहंस की तरह भावविभोर हो जाते हैं और जिन्होंने इसका स्पर्श भी नहीं किया वे तो केवल संकेत मात्र कर सकते है, अनुभूतियों की चर्चा कर सकते हैं, किन्तु अनुभूतियां और विवरण उस सुख का एक अंश भी नहीं बता सकतीं। क्योंकि वह तो एक ज्योति की यात्रा है, अपने-आप में ही अवस्थित अलौकिक प्रकाश का अनुभव है और जो गुरु-कृपा से सहस्रार जागरण के पश्चात् प्रकट होता है तो साधक का सारा तन-मन अनोखी उर्जा से भर जाता है।

सहस्रार की स्थिति मानव मस्तिष्क में मधुमक्खी के छत्ते की भांति बतायी गई है जो सिर में उल्टे कमलदल के समान स्थित है और उसमें से टपकता अमृत का एक-एक कण साधक की देह को तो यौवनवान बनाता ही है उसे निरन्तर ऐसी अलौकिक अनुभूतियां कराता रहता है, ऐसे अनोखे रस का पान कराता रहता है जिससे साधक सदैव मुदित और तनाव रहित रहता हुआ आत्मलीन बना रहता है। क्योंकि इस सुख के आगे संसार का प्रत्येक सुख क्षीण है और यही ब्रह्मानंद है। यहीं तक पहुंच जाने के बाद फिर योगी के वापस सांसारिक चक्रों में पड़ने की आशंका समाप्त हो जाती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह विरक्त हो जाता है वरन् तब उसके अन्दर साक्षीभाव और द्रष्टाभाव पनप जाता है और ऐसे भाव के बाद द्वन्द्व व तनाव शेष रह भी कैसे सकता है?

यही हंसों का वास है, यहीं वह योगियों का शांत कुहर है, यहीं चिरमौन है, यहीं आनन्द है और यहीं पूर्णत्व है। **मूलाधार से लेकर आज्ञा चक्र तक सम्पन्न हुई एक यात्रा का पूर्णत्व सहस्रार जागरण ही है।** आज्ञा चक्र जागरण के बाद जितनी भी शीघ्र सम्भव हो सके सद्गुरु की कृपा प्राप्त कर हुए **सहस्रार जागरण दीक्षा** प्राप्त कर ही लेनी चाहिये जिससे जीवन में स्खलन का भय न रहे, च्युत हो जाने की सम्भावनाएं समाप्त हो जाएं, मन में कोई तर्क-वितर्क ऊहापोह न रह जाए और एक प्रकार से अपने इस जीवन को ही नहीं अपने आगामी जन्मों को भी निश्चिंत कर लिया जाए क्योंकि आज्ञा चक्र तक पहुंचा हुआ साधक जहां वासना के वशीभूत होकर दुर्घटनावश किसी प्रकार से स्खलित होकर पुनः मूलाधार पर वापस जा सकता है वहीं सहस्रार जागरण की अवस्था प्राप्त कर चुका साधक अपने आगामी जन्मों में भी जाग्रत सहस्रार के साथ ही जन्म लेता है। तब उसे प्रायः आठ - दस वर्ष की आयु का होते-होते अपना सम्पूर्ण पिछला जीवन, साधनात्मक क्रियाएं, गुरु-साहचर्य सब कुछ स्मरण में आ जाता है और वह अगला जन्म, उससे भी अगला जन्म निरन्तर साक्षी बनकर निर्विकल्प रूप से, निर्द्वन्द्व रूप से जीने की क्रिया सीख लेता है।

आंखों देखा विवरण

हीरक जयन्ती महोत्सव
इलाहाबाद

पूज्यपाद गुरुदेव की हीरक जयन्ती का वर्ष एवं उत्तर प्रदेश की प्रमुख तीर्थ स्थली प्रयाग राज में यमुना के तट पर स्थित प्रसिद्ध मिन्टो पार्क का आयोजन स्थल लेकिन यह विशाल स्थान भी छोटा पड़ गया जब समारोह से एक दिन पूर्व अर्थात् १७ ता० की शाम तक सम्पूर्ण भारत, नेपाल, भूटान, मॉरीशस से आए साधकों की अपार समूह राशि उमड़ पड़ी। केवल इतना ही नहीं अमेरिका, इंग्लैड, कनाडा, सिंगापुर एवं थाईलैंड से भी अनेक प्रमुख शिष्यों ने इस समारोह में जिस प्रकार समय से पूर्व आकर अपनी शिष्यता स्पष्ट की, उससे यह भी लगने लगा कि सचमुच वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धान्त हमारे मनीषियों ने ऐसे ही वातावरण के लिए कहा होगा।

दिनांक १८ से २१ अप्रैल तक के इस चार दिवसीय शिविर में साधकों के मन में बस एक ही बात उमड़- घुमड़ रही थी कि इस बार वह कुछ घटित कर देना है जिससे यह इतिहास की एक अमिट घटना बन जाए और आने वाला युग साक्षी बन सके कि किस प्रकार एक अद्वितीय व्यक्तित्व को उसके शिष्यों ने अभिनंदित किया। यही इस समारोह की मूल भावना इसे अन्य शिविरों से स्पष्ट रूप से अलग कर रही थी। अन्य साधना शिविरों में जहां साधना एवं सिद्धियों पर ही ध्यान केंद्रित होता है, इस शिविर में उत्साह व उमंग पर ही ध्यान अधिक केंद्रित था जिससे मंगलमयता की अनोखी सृष्टि हो रही थी २१ अप्रैल की प्रातः कालीन बेला में जिस प्रकार से ६० साधिकाओं ने सिर पर कलश रख पंक्तिबद्ध हो पूज्य गुरुदेव का स्वागत किया उससे स्पष्ट दिख ही रहा था मानो देवगण इस रूप में उनके चरणों को पखारने व अभिषेक करने उपस्थित हुए हों।

पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत नंदकिशोर श्रीमाली जी के शुभवचनों से इस चिरस्मरणीय हीरक जयन्ती समारोह का प्रारम्भ हुआ एवं उन्होंने समस्त शिष्यों की ओर से पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में हजारों साधकों-साधिकाओं की करतल

ध्वनि के मध्य माल्यार्पण कर इस चार दिवसीय समारोह को एक गरिमा दी। **पूज्य गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली जी** अपने प्रवचन के मध्य उन दिनों को भाव-भीनी स्मृतियों में खो गए जब वे पूर्व में पूज्य गुरुदेव के जन्म दिवसों पर इसी प्रकार एक अलौकिक आनन्द में लीन हो जाया करते थे। उन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तव में यह एक ऐसा वर्ष है कि जिसका प्रत्येक दिवस २१ अप्रैल ही है और यदि साधक ने इस वर्ष के प्रत्येक दिवस को इस भावना से ग्रहण
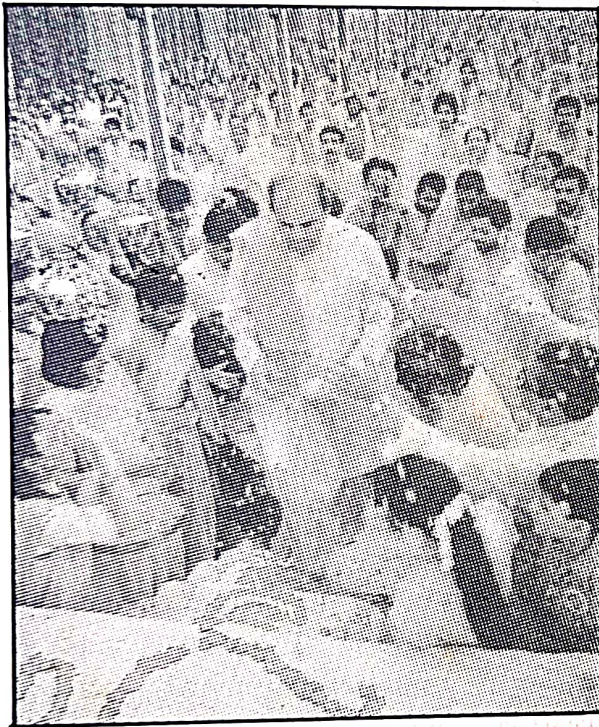
किया तो सम्भव ही नहीं कि उसके जीवन में श्री, ऐश्वर्य, सम्पदा के साथ-साथ सिद्धाश्रम - प्राप्ति भी न हो सके। **पूज्य गुरुदेव श्री नंदकिशोर जी** ने एक मनोरंजक उदाहरण के माध्यम से अपनी बात स्पष्ट की। उन्होंने स्मृतियों में खोते हुए बताया कि जब वे बचपन में इसी प्रकार पूज्य गुरुदेव के चरणों में फूलमाला अर्पित करते थे तो एक बार अपने जेब में पड़ा हुआ कुछ धन (जो एक या दो रुपये से अधिक नहीं रहा होगा उसे भी) अर्पित कर दिया बदले में पूज्य गुरुदेव ने उन्हें सौ रुपये दिए।।

श्री नंदकिशोर जी ने स्पष्ट किया कि यह घटना पिता-पुत्र के मध्य की घटना ही नहीं थी वरन जब भी कोई शिष्य इस प्रकार अपना कुछ भी अर्पित करता है तो पूज्य गुरुदेव उसे उसका सौ गुना लौटा देते ही है।

मध्याह्न में पूज्य गुरुदेव ने इसी बात को पुनः कहा कि मेरे जीवन में न कोई पुत्र है न पुत्री केवल मात्र शिष्यों के लिए ही स्थान है। न मेरा जन्म है न मृत्यु, मैं केवल एक लोक में कार्य सम्पूर्ण करने के बाद दूसरे लोक में जाकर वहां आध्यात्मिक चेतना प्रदान करता हुआ निरन्तर गतिशील हूं। हीरक जयन्ती पर्व वास्तव में युग परिवर्तन की एक घटना है जब पूज्यपाद गुरुदेव अपने भौतिक जीवन के दायित्वों से प्रायः मुक्त होते हुए पुनः उस जीवन में सघनता से प्रवेश कर रहे है जो साधनामयता, संन्यास-मयता एवं केवल मात्र शिष्यों के लिए ही एक प्रकार से समर्पित है। इस अवसर पर उन्होंने स्पष्ट किया कि अब वे गृहस्थ रूप में रहते हुए भी उसी संन्यस्त जीवन में जा रहे हैं, जो उनकी आत्मा का अभिन्न अंग रहा है।

केवल साधक और शिष्य ही नहीं शासन के वरिष्ठ पदाधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे **उत्तर प्रदेश रेलवे पुलिस के महानिरीक्षक श्री हाकिम सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक इलाहाबाद (नगर) श्री मुकेश बाबू शुक्ला, भारतीय वन सेवा के वरिष्ठ पदाधिकारी श्री अभयराज तिवारी** इस अवसर पर उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेश हाइकोर्ट के चीफ जस्टिस भी इस विशेष अवसर पर पधारे उनका स्वागत इस महोत्सव के स्थानीय आयोजक **श्री एस.के.मिश्रा** ने गुरु मंत्र की चादर ओढ़ा कर किया। वास्तव में इस श्रेष्ठ आयोजन के पीछे **श्री एस.के.मिश्रा, श्री एस.पी.बांगड़, डॉ. एस.के. बनर्जी** एवं **श्री एस. सी. कालरा** का संयुक्त- टीम वर्क ही था। साधकों के आवास की व्यवस्था हो या इतने विशाल जन समूह के भोजन आदि की व्यवस्था का अथवा मंच एवं पण्डाल की विशेष सुरुचि पूर्ण सज्जा – कदम - कदम पर आयोजकों की सूझ-बूझ झलक रही थी।

केवल साधना की गरिमा ही नहीं अथवा पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्रदान की जाने वाली दुर्लभ व विशेष दीक्षाओं की घटना ही नहीं सम्पूर्ण रूप से वातावरण में एक पवित्रता और आध्यात्मिकता ही व्याप्त थी। समस्त साधक इस प्रकार से स्वयं अपने - आप को संतुलित कर गतिशील थे, जिसको देखकर आश्चर्य होता था और यह समझने को बाध्य हो जाना पड़ता था कि अनुशासन और संयम तो अपने अन्दर से ही आता है। जिसकी जागृति केवल
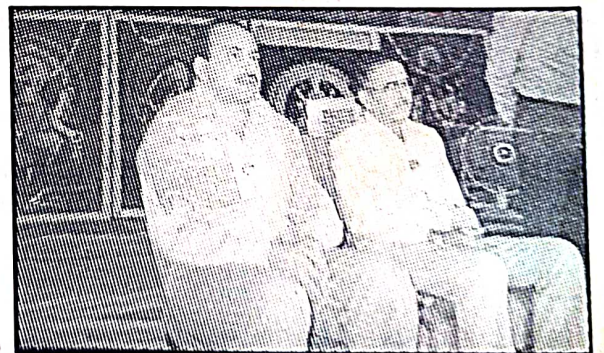
गुरु- कृपा से ही सम्भव होती है। स्थानीय आयोजकों एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ - साथ गुरुधाम दिल्ली से आए **शास्त्री जी, बहन वर्षा, श्री राजेश गुप्ता, श्री राकेश यादव, श्री रविन्द्र पाल, श्री सुशील गुप्ता, श्री के. के. तिवारी** ने जिस प्रकार दिन -रात अथक परिश्रम कर सामग्री वितरण, शिविर कार्यालय की जिम्मेदारी तथा साधकों की विभिन्न शंकाओं का निवारण बिना भूख, प्यास, निद्रा एवं विश्राम की चिन्ता किए हुए किया उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के **अंग्रेजी संस्करण** का विमोचन तथा पूज्यपाद गुरुदेव के महत्वपूर्ण ग्रन्थ **"कुण्डलिनी नाद ब्रह्म"** का विमोचन भी इसी ऐतिहासिक अवसर पर किया गया। **श्री सुभाष शर्मा** ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

इस साधना शिविर में जिन प्रयोगों को सम्पन्न कराया गया उनकी तो कोई तुलना ही नहीं की जा सकती — **गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग, मनोकामना सिद्धि प्रयोग, सर्व साधना सिद्धि प्रयोग, सिद्धाश्रम दीक्षा एवं पारदेश्वरी दुर्गा प्रयोग** के साथ - साथ **आकस्मिक धन प्रदायक वैचाक्षी साधना प्रयोग** भी सम्पन्न कराया गया। दीक्षाओं के अद्भुत क्रम में लगभग १२०० साधकों ने विभिन्न दीक्षाएं प्राप्त की। **सिद्धाश्रम दीक्षा** का तो क्रम ही विशेष था जब ६०० से भी अधिक साधकों ने प्रस्तुत होकर इस देव दुर्लभ दीक्षा को प्राप्त किया।
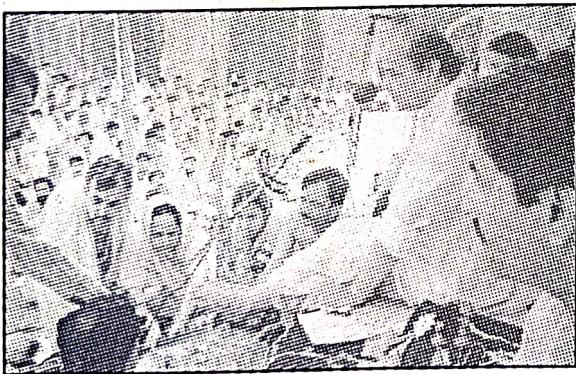
दीक्षा — जो कि पूज्यपाद गुरुदेव की असीम तपराशि का ही चैतन्य रूपान्तरण है, वह सहज क्रिया नहीं है। साधकों ने इसकी गम्भीरता को उस समय अनुभूत किया जब रायबरेली के **श्री एस. सी. कालरा** को मंच पर ही पूज्य गुरुदेव ने **शक्तिपात द्वारा कुण्डलिनी जागरण के सातों चरण की दीक्षा** एक साथ प्रदान की। इस अवसर पर जिस प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव का सारा चेहरा ओज और लालिमा से भर गया था तथा जिस प्रकार श्री कालरा अपनी सुध बुध खो बैठे थे उससे इस तप- ऊर्जा के परिवर्तन का समग्र रूप साधकों की दृष्टि के सामने झलक उठा। इस दीक्षा के उपरान्त श्री कालरा के वक्ष स्थल पर जहां पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने दाहिने पांव का अंगूठा रख कर शक्तिपात किया था वहां तीन सुर्ख लाल रेखाएं त्रिपुण्ड की भांति झलक उठी थी। योग्य साधक, जो दीक्षा की गरिमा को समझ सके हैं और जिनके सौभाग्य उदित हुए हैं वे आगे बढ़कर १०८ दीक्षाओं की प्राप्ति के लिए सन्नद्ध हो चुके हैं ऐसे साधकों में **कर्नल गणपति, श्री के. वी. द्विवेदी, श्री रणजीत कुमार बनर्जी** एवं **श्री अशोक कुमार सरागी** का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

श्री वासुदेव पाण्डे एवं **श्रीमती कनक पाण्डे** ने जिस प्रकार पूज्य गुरुदेव की सेवा में अपने को संलग्न रखा वह अनुकरणीय उदाहरण था। जिस प्रकार से केवल इस चार दिवसीय समारोह में ही नहीं वरन पूरे वर्ष भर पूरे भारत वर्ष भर में शिविरों की एक अटूट श्रृंखला आयोजित करने का प्रस्ताव सभी प्रान्त के साधकों ने मिल-जुल कर रखा वही उनकी शिष्यता है और इसी प्रकार से एक हीरक जयन्ती महोत्सव को ही नहीं वरन सम्पूर्ण हीरक जयन्ती वर्ष को मनाया जा सकेगा। **श्री एस. के. मिश्रा** ने प्रत्येक माह उत्तर प्रदेश में एक शिविर करने का, **श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव जी** ने मध्य प्रदेश में प्रति माह एक साधनात्मक शिविर आयोजित करने का तथा **श्री गणेश वटाणी** ने बम्बई एवं समीपवर्ती नगरों में प्रति माह एक साधनात्मक शिविर आयोजित करने का संकल्प सार्वजनिक रूप से प्रकट किया। पूरे शिविर में अर्थ प्राप्ति एवं व्यय संयोजन उत्तर प्रदेशसिद्धाश्रम साधक परिवार के अन्तर्गत रहा।

इस वर्ष ऐसे ही योग्य शिष्यों के सामूहिक प्रयास से **अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार** अपने अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को पूर्णता के साथ विस्तारित और स्पष्ट कर ही सकेगा।

वे साधक जो जबान के धनी और पक्के हैं

संकल्प लेने के साथ ही आवश्यक है उस संकल्प को पूरा करना। **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली इन्टरनेशनल फाउण्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)"** के अन्तर्गत बनने वाले समाजोपयोगी जन हितार्थ **सिद्धाश्रम** एवं अन्य विशेष भवन जिन्हें पूरा करने के लिए पूज्य गुरुदेव के सभी शिष्य कृत संकल्प है। यह केवल स्वप्न नहीं वास्तविकता है और जिस कार्य को पूरा करने के लिए संकल्प आप सब शिष्यों ने लिया है जिसे गुरुदेव ने स्वीकृति प्रदान की है वह कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस श्रृंखला में जिन शिष्यों ने अपना संकल्प पूरा किया है उनकी द्वितीय सूची दी जा रही है। आप भी अपना वचन निभाएं और संकल्प धनराशि **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली इन्टरनेशनल फाउण्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)"** के नाम से क्रासड ड्राफ्ट द्वारा जोधपुर पते पर भेजें। आप द्वारा भेजी हुई धनराशि आयकर अधिनियम ८०- जी. के अन्तर्गत कर- मुक्त है।

गुरु पूर्णिमा पर हम संकल्प के धनी इन सभी शिष्यों का सम्मान करेंगे।

नाम	स्थान	नाम	स्थान	नाम	स्थान
के. आर. कुर्रे	रायपुर	अवध कुमारी	इटारसी	गिरीश कुमार सोनी	क्योंझर
बी. पी. कौशिक	बिलासपुर	शिव कुमार	आस्ट्रिया	ज्ञानेश टी. पटेल	यावतमाल
सिद्धाश्रम साधक परिवार	बालाघाट	अरूण	भोपाल	राहुल सन्तोष	मद्रास
यदुवीर सिंह	अलीगढ़	एस. वी. श्रीवास्तव	दुर्ग	अनीता फौदार	मॉरीशस
बी. पी. धोलप	ग्वालियर	श्री एवं श्रीमती रंगलाल	मॉरीशस	टी. एम. ध्रुवे	भण्डारा
परमानन्द वाधवानी	राजनांदगांव	श्रीमती जी. कावेरी	राजनांदगांव	राजेश कुमार	बहरीन
के. के. यादव	गुडगांव	सरवेन्दर सिंह	मोहाली	सुभाष बी. पटेल	बलसार
उर्मिला शुक्ला	रोहतास	सुभा गोपाल	मॉरीशस	वी. के. झरिया	सरगुजा
श्रीमती लता बनर्जी	रोहतास	शशीकांत	यू. के.	पवन कुमार खेतान	भोपाल
श्रीमती हनुमानी देवी	रोहतास	रोजेन जेम्स	लुधियाना	सुनीता श्रीवास्तव	रायपुर
धन कुमार अग्रवाल	खडगपुर	मनीष श्रीवास्तव	शहडोल	राम कृष्ण इसरानी	थाने
वी. सी. जोशी	अलमोड़ा	नकुल दास बनर्जी	रायपुर	एच. एस. सिंह	मोहिन्दरगढ़
राजेन्द्र बी. वर्मा	होशंगाबाद	राजेन्द्र के. चौबे	दुर्ग	परदेश राम देवांगन	राजनांदगांव
रमनीक लाल पारेख	बम्बई	सुरजीत सिंह कोमल	कलकत्ता	प्रकाश शास्त्री	मोहिन्दरगढ़
सुभाष चन्द्र मिश्रा	९९ ए.पी.ओ.	पी. एस. बिष्ट	टूटीकोरिन	अनीस गर्ग	पानीपत
नरेन्द्र सिंह	इलाहाबाद	टी. सिंगम	मलेशिया	एम. लाल	दिल्ली
देवन्द्र सिंह	फैजाबाद	एम. धरम राजन	कृष्णागिरी	सुरजन राय	दिल्ली
पुष्कर सिंह विष्ट	अलमोड़ा	जे. जे. शाह	बड़ौदा	एल. मोहन जी	जुनागढ़
लल्लन कुमार	धनवाद	राजकुमार यादव	अम्बिकापुर	लखन लाल साहू	दुर्ग
एन. डी. वन्जारे	रायपुर	ववलू गोस्वामी	बिलासपुर	जी. के. मैसी	नई दिल्ली
अरूण गहलौत	भोपाल	मालिक राज	धारवार	राजेन्द्र कुमार अग्रवाल	उत्तरकाशी
कुसुम वागड़ी	कलकत्ता	संजय जैसवाल	कलकत्ता	हरिनाथ अशोक	मॉरीशस
मूल चन्द कुल्हारा	रायगढ़	संजय के. साहू	सम्बलपुर	आर. सी. वर्मा	बिलासपुर
शील सिंह	लखनऊ	के. बी. अग्रवाल	बिलासपुर		
अनिल कुमार दुवे	लखनऊ	रमेश चन्द्र वर्मा	बिलासपुर		

दिनांक : ३ व ४ जून ९४ : प्रत्यक्ष लक्ष्मी साधना एवं सिद्धि
मनाली शिविर : आयोजन स्थल
सराय शियाली, महादेव मंदिर, मनाली (हि.प्र.)

शून्य में से . . . कोई भी पदार्थ . . . . . . प्राप्त कीजिये

तन पर पड़े हुए केवल एक या दो वस्त्र, सामान्य सी कुटिया, जीवन यापन की किसी भी आवश्यक सामग्री की कोई भी दृष्टि गोचरता नहीं . . .
फिर भी न तो कोई अभाव न किसी बात का कष्ट!
शून्य साधना से योगी ऐसी ही मस्ती में जीते हैं

कोई भी साधना या कोई भी रहस्य तभी तक रहस्य है, जब तक वह हमारी समझ में नहीं आता। प्रत्येक यंत्र, मोटर, मशीन, या कार्य की एक गुप्त कुञ्जी होती है, एक मूल रहस्य होता है और जब तक वह मूल रहस्य प्राप्त नहीं होता, तब तक वह कार्य असंभव लगता है। हमारी बुद्धि उस स्तर तक सोच ही नहीं पाती कि ऐसा हो सकता है, और जब बुद्धि ऐसा सोच नहीं पाती, तो हम मान लेते हैं कि यह सब ढोंग है, पाखण्ड है, छलावा है।

गुप्त रहस्य

और इसका कारण यह है, कि अधिकांश साधना रहस्य गोपनीय ही रहे, इनके जो जानकर थे, वे हिमालय में अपनी साधनाओं में व्यस्त थे, उन्हें दुनिया से कोई लेना-देना नहीं था इसलिए प्रामाणिक रहस्य प्राप्त नहीं हो पाते थे।

ऐसे संन्यासी भी इस प्रकार की साधनाएं और सिद्धियां प्रत्येक व्यक्ति को बताते नहीं थे। मरते समय तक अपने एक - आध शिष्य को ही उस प्रकार की साधना का रहस्य बता देते थे, और इसलिये एक प्रकार से बहुत ही कम योगियों के पास ऐसी जानकारी रही।

शंकराचार्य इस साधना के अद्वितीय सिद्ध योगी थे और वे अपने जीवन में हजारों बार शून्य में से कोई भी पदार्थ प्राप्त कर लोगों के सामने रख देते थे, इस सामग्री में खाद्य पदार्थ, रुपये-पैसे, वस्तु, द्रव्य, या अन्य कोई भी वस्तु या पदार्थ हो सकता था।

यह साधना निश्चय ही गोपनीय रही, परन्तु शंकराचार्य की परम्परा में ही उच्चकोटि के **योगी प्रणवाचार्य** जी एक विभूति हैं, उनका आश्रम केदारनाथ के पास कोई भी देख सकता है, उन्होंने

इस क्षेत्र में अद्वितीयता प्राप्त की है और सृष्टि विज्ञान या पदार्थ विज्ञान के वे अन्यतम आचार्य हैं।

यह मेरा सौभाग्य रहा कि मैं लगभग तीन वर्ष तक उनके आश्रम में रहा, और उनकी कृपा से ही मुझे शून्य में से पदार्थ प्राप्ति की साधना प्राप्त हुई। मैंने इसे सार्वजनिक रूप से सैकड़ों स्थानों पर दिखाया है और हर बार पूर्णता के साथ सम्पन्न हुई है।

आज मैं घनघोर जंगल में ताजा और स्वादिष्ट भोजन प्राप्त कर सकता हूं मनोवाच्छित द्रव्य या रुपये-पैसे शून्य में से प्राप्त कर सकता हूं, दूसरे शब्दों में जो कुछ भी चाहूं वह सामग्री हवा में मुट्ठी लहराते ही प्राप्त हो जाती है, जिसका उपयोग मैं तो करता ही हूं, मेरे अन्य परिचित भी लाभ उठाते हैं।

पत्रिका के लगभग एक वर्ष के अनुरोध पर मैं पहली बार इस गुप्त और दुर्लभ साधना रहस्य को आगे ही पंक्तियों में दे रहा हूं जो कि सर्वथा प्रामाणिक है—

सर्वप्रथम साधक स्नान कर, पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाएं और अपने सामने जल पात्र, अगरबत्ती, शुद्ध घृत का दीपक रख ले, तत्पश्चात् **''शून्य सिद्धि यन्त्र''** को लाल वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित कर दें, साधना में निश्चित सफलता हेतु इस मंत्र को २१ गोमती चक्रों पर स्थापित करना आवश्यक माना गया है।यह यंत्र विन्ध्यवासिनी कीलक से सिद्ध एवं सिद्ध बीज से सम्पुटित हो।

विनियोग

ॐ अस्य श्री विन्ध्यवासिनीविशालाक्षी-महालक्ष्मी अष्टाक्षर-मन्त्रस्य श्री सदाशिव ऋषिः, पंक्तिछन्दः, श्री महालक्ष्मी देवता, ह्रीं बीजं, ॐ शक्तिः, चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

श्रीसदाशिव-ऋषये नमः शिरसि
पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे
विशालाक्षी-श्रीमहालक्ष्म्यै-देवतायै नमः हृदि,
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये,
ॐ शक्तये नमः पादयोः,
चतुर्वर्ग-सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे

ध्यान

ध्यायेद् देवीं विशालाक्षीं तत्प-दाम्बू-नद प्रभां,
द्विभुजामम्बिकां चण्डीं खड्ग खर्पर-धारिणीम्।
नानालंकार-सुभगां रक्ताम्बर-धरां शुभां
सदा षोडश-वर्षीयां प्रसन्नास्यां त्रिलोचनाम्।
मुण्ड-मालावली-रम्यां पीनोन्नत-पयोधरां
वर-दाताम् महा-देवीं जटा-मुकुट-मण्डिताम्
शत्रु-क्षयंकरीं देवीं साधकाभीष्ट-दायिकां,
सर्व-सौभाग्य-जननीं महासम्प्रदां स्मरेत्।

इसके बाद साधक मूल मंत्र का जप करें। और नित्य २१ माला मंत्र जाप करें, इस कार्य में लगभग दो घण्टे लगते हैं। मंत्र जप केकाल में बाएं हाथ में सियार सिंगी को दबा कर रखें।

मंत्र

ॐ ह्रौं कालि महाकालि महाकालि
किले किले फट् स्वाहा।

नियम

१. इस साधना में साधक पीली धोती पहिने और पीले आसन पर ही बैठे।
२. पुरुष या स्त्री कोई भी इस साधना में भाग ले सकता है।
३. यह पांच दिन की साधना है, और **हकीक माला** से या **स्फटिक माला** से यह मंत्र जप किया जाना चाहिए जिसके पास **गुरु चैतन्य सिद्ध माला** हो वह उस माला का प्रयोग करे।
४. सामने शून्य सिद्धि यंत्र को लाल वस्त्र पर रखकर उस पर नजर रखते हुए, मन्त्र जप करें।

जब साधना समाप्त हो जाय तो सवा किलो आटा, तीन पाव गुड़ तथा एक पाव घी मिला कर हलवे की तरह बना ले, और किसी मिट्टी के बर्तन में वह हलवा रख दे, फिर उस पर चार दीये लगा दें, और उन चारों दीयों के आस-पास पांच लाल मिर्च, पांच कोयले के टुकड़े तथा पांच लोहे की कीलें, २१ गोमती चक्र, सियार सिंगी रख दें और साधक इस सामग्री को रात्रि में जहां तीन या चार रास्ते मिलते हो वहां रख दें अथवा जंगल में जाकर रख दें। रखकर लौटते समय पीछे मुड़कर न देखें, घर आकर स्नान कर लें। इसमें किसी प्रकार का भय नहीं है और साधक को चिन्ता करने की जरूरत नहीं हैं।

यह पूर्णतः सौम्य साधना है, तथा गायत्री उपासक अथवा ब्राह्मण इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

जब यह कार्य सम्पन्न हो जाए तो यह साधना सिद्ध हो जाती है और बाद में साधक अपनी बायीं मुट्ठी में उस यन्त्र को पकड़ लें और दाहिनी मुट्ठी को हवा में घुमा कर मूल मंत्र का तीन बार उच्चारण कर जिस वस्तु की भी कामना करेगा, वह वस्तु उसकी मुट्ठी में स्वतः प्राप्त हो जाएगी **अथवा अपने शरीर को बड़ी चादर से ढक ले और अपने पास थोड़ी सी जगह रखे** और फिर मन्त्र पढ़ कर जिस वस्तु की भी इच्छा करेगा, वह वस्तु चादर में ही उसके पास प्राप्त हो जायेगी।

साधना के २१ दिन बाद यंत्र एवं माला विसर्जित कर दें

यह मेरा आजमाया हुआ, सिद्ध प्रयोग है और सर्वथा गोपनीय हैं, जिसे मैंने अपने जीवन में पहली बार साधकों के लिये स्पष्ट किया है।

– गोकुलानन्द

दुःसाध्य एवं गोपनीय मानसिक चिन्ता निवारक
केतु साधना

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव का व्यक्तित्व इस जड़ और चेतन जगत में सर्वाधिक रहस्यमय बना हुआ है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ व्यक्ति ने अनेक रहस्यों का उद्‌घाटन किया किन्तु स्वयं अपने ही अंदर के अनेक तथ्यों का पता नहीं लगा सका। केवल इस मानव शरीर की रचना ही नहीं वरन् इनके मनोवैज्ञानिक पक्षों का भी कोई स्थायी हल नहीं मिल सका तथा विज्ञान जिस प्रकार निरन्तर शोधरत है उससे वह यही समझ सका है कि वास्तव में वह अभी एक प्रकार से अनभिज्ञता के प्रथम चरण में ही खड़ा है।

ऐसे ही अनेक पक्षों में मानव जीवन के 'स्व' से सम्बन्धित रहस्यों में सर्वाधिक जटिल और दुष्कर स्थिति मनुष्य के स्वभाव को लेकर रही है। मनुष्य का स्वभाव इतना अधिक जटिल माना गया है कि उसके विभिन्न पक्ष पूर्ण रूप से समझे ही नहीं जा सकते। **एक ही व्यक्ति एक साथ दो विरोधी भावनाओं को साथ लेकर इस प्रकार जीवन जीता है कि आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है** और तब सारे अनुमान, सारा ज्ञान एक प्रकार से व्यर्थ होने लगता है, किन्तु इन्हीं अनिश्चितताओं के मध्य भारतीय ज्ञान-विज्ञान ने वे सूत्र भी खोज़े जिनसे किसी प्रकार से मानव जीवन के इस सर्वाधिक जटिल पक्ष की खोज की जा सके। भारतीय ज्ञान-विज्ञान की ही सर्वाधिक तेजस्वी ज्ञान परम्परा ज्योतिर्विज्ञान के माध्यम से इसके कुछ सूत्र मिले। ज्योतिष के निष्पादन के क्रम में ज्ञात हो सका कि मानव जीवन के स्वभाव को प्रभावित करने वाला जो ग्रह विशेष होता है वह है केतु। केतु की उत्पत्ति कथा किसी के लिए भी अज्ञात नहीं है। समुद्र मंथन के समय अमृत पान करने के फल स्वरूप राहु के वध से जो उसका धड़ शेष रह गया वही केतु कहलाया और इन दोनों भागों को भी ग्रहों की संज्ञा प्राप्त हुई। ये ग्रह सदृश्य न होते हुए भी ग्रह की संज्ञा से विभूषित हैं। जो वास्तव में सघन गैस के पुञ्ज हैं और जिनका विषैला प्रभाव प्रत्येक मानव के जीवन पर पड़ता है। ड्रेगन्स हेड एवं ड्रेगन्स टेल के नाम से दी गई इनकी संज्ञा इनके इसी स्वरूप को भली-भांति स्पष्ट करती है।

राहु व केतु एक दूसरे सहयोगी तथा पूरक स्थितियां हैं और इनके तालमेल द्वारा ही मनुष्य के जीवन में अनेक स्थितियों का बनना बिगड़ना सम्भव होता है। जहां राहु एक प्रबल विघटनकारी ग्रह है वही केतु का प्रभाव मानव जीवन पर आंतरिक रूप से सर्वाधिक पड़ता है। मानसिक चिन्ताओं, कलह, कोई गुप्त चिन्ता, समस्या, परेशानी, अड़चन अथवा मानहानि जैसे विषय में केवल केतु के अध्ययन से ही स्पष्ट हो सकता है कि व्यक्ति को एक विशेष प्रकार की मानसिक बाधा अथवा तनाव क्यों व्याप्त है। मानसिक चिन्ताओं का अध्ययन प्रायः चन्द्रमा की स्थिति से किया जाता है **किन्तु मेरा मत है कि यदि केतु की कुण्डली में स्थिति को आधार बनाकर इस सम्बन्ध में अध्ययन किया जाए तो सफलता की सम्भावनाएं अधिक प्रबल हो जाती हैं।**

केतु का जन्मकुण्डली में विभिन्न स्थानों पर अवस्थित होना, ग्रह विशेष से संयुक्त होना तो ज्योतिषीय अध्ययन की विशद भावभूमि है। उसके स्थान पर यदि साधक मानसिक चिन्ता की दशा में केतु से सम्बन्धित एक लघु प्रयोग सम्पन्न कर लेता है तो उसे अत्यन्त शीघ्र अनुकूलता मिलनी प्रारम्भ हो जाती है। इसके लिए आवश्यक नहीं कि उसे अपनी कुण्डली में केतु की स्थिति का ज्ञान हो अथवा केतु ग्रह उसकी कुण्डली में किन ग्रहों से संयुक्त है, इसका बोध हो। जब भी कोई दुःसाध्य मानसिक समस्या आकर घेर ले अथवा ऐसी उलझन में पड़ जाए कि कोई मार्ग न सूझ रहा हो तथा सामान्य रूप से प्रयोग में लाए जाने वाले उपाय व्यर्थ सिद्ध हो रहे हों तब निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि ऐसा केतु की बाधा के कारण हो रहा है। **चन्द्रमा की स्थिति अनुकूल न होने पर मिलने वाले मानसिक क्लेश एवं केतु द्वारा मानसिक तनाव में सूक्ष्म भेद यह है कि केतु की विपरीत अवस्था में किसी गुप्त चिन्ता का अथवा मानहानि का प्रकोप अधिक रहता है। मुकदमेंबाजी, पड़ोसियों से अनावश्यक तनाव, कलह का भी मुख्य कारक ग्रह केतु ही माना गया है।**

ऐसे पीड़ित साधक के लिए उपयुक्त रहता है कि वह किसी भी शुक्रवार को एक लघु केतु शांति प्रयोग सम्पन्न कर ले। इस साधना की विधि सरल एवं केवल एक दिवसीय ही है। किन्तु इस एक दिवसीय प्रयोग में जो सफलता मिलती है उनकी प्राप्ति तो बहुमूल्य रत्नों के धारण आदि से भी नहीं सम्भव हो पाती। साधक स्नान आदि से पवित्र होकर काले तिलों की ढेरी पर **केतु महायंत्र** स्थापित कर यदि **नीली हकीक माला** से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप सम्पन्न कर लेता है तो उसके जीवन में मानसिक कष्टों व बाधाओं की समाप्ति स्वतः प्रारम्भ हो जाती है।

मंत्र

केतवे ऐं सौ स्वाहा

मंत्र जप के उपरान्त केतु महायंत्र एवं हकीक माला को जल में विसर्जित करने का विधान है। यह प्रयोग एक विशिष्ट बाधा निवारक प्रयोग है अतः इसको सम्पन्न करते समय इसकी चर्चा कम से कम ही करनी चाहिए।

भीजै चुनरिया प्रेम रस बूंदन

गुरुदेव का आह्वान : शिष्यों के नाम

प्रिय आत्मन्,

शुभ आशीर्वाद,

गुरु-पूर्णिमा का अवसर समीप आ ही गया। तुम शिष्यों के पूरे वर्ष भर का पर्व, तुम्हारे हृदय की चैतन्यता का प्रतीक और तुम्हारे जीवन की गति का आधार, आषाढ़ की इस पूर्णिमा में, अपने गुरु की कृपाओं की रिमझिम फुहार में भीगने का पर्व आ ही गया अर्थात् इस उत्सव वर्ष का दूसरा प्रमुख पर्व! अभी जब कि तुम कुछ दिन ही पूर्व मुझसे इलाहाबाद में २१ अप्रैल के पर्व पर, अपने गुरु की हीरक जयन्ती के प्रारम्भ के अवसर पर मिल कर इस गुरु-पूर्णिमा में आने का वादा कर ही चुके हो।

प्रिय! मेरे तुम्हारे मध्य जो अभी तक संशय की दीवारें थीं, जो भेद की सीमा रेखायें थी, जो परिवार के दिये तुम्हारे नाम थे, तुम्हारी बेड़ियां थीं, ऐसा बहुत कुछ क्रमशः समाप्त होते हुए उस स्थिति पर आ गया है, जहां तुम मेरे और केवल मेरे हो गये हो, जहां द्वैत समाप्त हो गया है और केवल मैं ही तुम्हारे अन्दर स्थापित होकर तुम्हें निरन्तर गतिशील कर रहा हूं। इस बात का मुझे असीम संतोष और गर्व है। तुम्हें इसी पूर्णत्व तक लाने के लिये मैंने अथक प्रयास किया था। गुरु तुम्हारी इसी पूर्णत्व की यात्रा के साक्षीभूत होते हैं और मैं तुम्हारा गुरु होने के नाते अपने जीवन-धर्म का निर्वाह कर अत्यन्त आह्लादित हूं, क्योंकि मैंने इसी के लिये तो अपने समस्त संन्यस्त शिष्यों और सिद्धाश्रम का विछोह सहा था।

निरन्तर चालीस वर्षों से तुम सभी के मध्य आलोचनाओं और प्रबल झंझावातों में चलता हुआ जीवन की सभी स्थितियों से गुजरता हुआ मैं एक ऐसे आयाम पर खड़ा हूं जहां कालखण्ड मेरे समक्ष तुच्छ और नगण्य है। जन्म और मृत्यु मेरे जीवन का अंग नहीं है, क्योंकि इन सभी से ऊपर उठकर मैं जिस स्थिति में हूं , उसे तुम अपनी चैतन्यता से, अपनी बुद्धि से समझ नहीं सकते और उसे शब्दों में मैं व्यक्त नहीं कर सकता, किन्तु जिस रूप में तुम्हारे सामने उपस्थित हुआ हूं उस रूप में अर्थात् अपने गृहस्थ स्वरूप **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली** के रूप में इस भौतिक देह का साठवां वर्ष प्रारम्भ कर चुका हूं। मैं काल की सीमाओं में बंधा व्यक्तित्व नहीं हूं वरन् इस सदी के परिवर्तन की संधि पर खड़ा मैं काल को ही अपना साक्षी बना रहा हूं। जिस प्रकार मैं पीछे दृष्टि डाल कर व्यतीत हुए वर्षों को देख रहा हूं उसी प्रकार आने वाले वर्षों में जो परिवर्तन और उथल-पुथल हो रही है उसको भी भली-भांति देख रहा हूं। **यह तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम मेरी उपस्थिति के साक्षीभूत बने हो**। मेरे प्रेम, मेरी करुणा, मेरी चेतना के विस्तार के साक्षीभूत बने हो और इस बात का निर्णय तो आने वाला युग ही कर सकेगा कि मैंने किस प्रकार से और कितना कुछ विस्तारित करने का प्रयास किया है, संवारने और सजाने में अथक परिश्रम किया है।

तुम शिष्य रूपी एक-एक पुष्प को संवारने में कितनी बार तुम्हारे दामन पर उगे कांटों को अपनी ऊंगलियों पर सहा है, कितनी-कितनी बार उन छलछला आई लहू की बूंदों को चुपचाप अपने दामन से पोंछ दिया है, इसका कोई लेखा-जोखा ही नहीं, फिर भी मेरा संतोष होगा कि तुम्हारी सुगन्ध फैले, तुम खुद भी सुवासित हो और दूसरों को भी सुवासित करो। तुम सभी शिष्यों से मुखरित होते, सुगन्धित होते और रंग बिखेरते उपवन की एक कल्पना मैंने की है, और तुम! मेरे रोपे पौधे, मेरे संवारे बीज आज इसी क्रिया में अब खिलने को तैयार हो। आज मेरे इस भौतिक स्वरूप को, मेरे इस देहगत स्वरूप से किये गये कार्यों को तुम साठ वर्षों के दायरे में बांध कर आंकने का प्रयास कर रहे हो किन्तु मैं तो तुम्हें इसके भी कई गुने से अधिक समय से अपने प्रेम की भुजाओं में बांधकर

रखे हूं। इस जन्म से नहीं पिछले कई-कई जन्मों से। मेरी कामना, मेरी इच्छा और मेरा प्रयास केवल इतना ही है कि मैं तुम्हें अपनी प्रेम की भुजाओं में बांध कर अपने वक्षस्थल के पास ला रहा हूं, जिससे कि वहां स्थित अमृत के कुंड में तुमको आकण्ठ तृप्त करा दूं। अन्तर केवल इतना है कि बार-बार मेरे और तुम्हारे शरीर बदल रहे हैं और प्रत्येक बार नये सिरे से परिचय प्रारम्भ करना पड़ रहा है। क्योंकि जब तक परिचय प्रगाढ़ हो और तुम निश्चित हो कर मेरे अन्दर आकर उस आनन्द के कुंड, अमृतकुंड, मेरे उस प्रेम के कुंड में निमग्न हो पाओ, उससे पहले ही किसी भ्रम और संदेह में फंस कर, किसी कुतर्क में उलझ कर , आंख की कोर में कोई मलिनता भरकर मुझसे बिछुड़ जाते हो।

खेद है वत्स! यही क्रिया पुनः इस जन्म में भी दोहरायी जा रही है। तुम मेरे पास आते हो, मेरे प्रेम की ऊष्मा से कुनमुना कर जगते हो, मेरी देह से परे कुछ और भी देख लेते हो, एक सुगन्ध तुम्हारी नाभि तक उतर जाती है, एक अनोखी आभा तुम्हारी आत्मा को आलोकित कर देती है, तुम्हारे प्राण एक अनहद सुनकर नाचने लग जाते हैं और तब स्वतः ही अश्रुकण निकल कर तुम्हारे कपोलों पर ढुलकने लगते हैं। लेकिन तुम्हारे अश्रु तुम्हारे कपोलों से भी आगे बढ़कर गुरु के चरण पखारें, उसके पहले ही जगत-प्रपंच तुमको अपने में समेट लेते हैं। तुम उस आनन्द और उत्सव में निमग्न नहीं हो पाते जिसकी मैं तुम्हें बार-बार धारणा दे रहा हूं। मेरी उत्सव की धारणा यही है कि तुम्हारा गुरु से क्या आत्मीय सम्बन्ध बना है। मैं तो तभी तुम्हारा उत्सव मानता हूं जब गुरु को देखते ही तुम्हारी आंखें भर आयें और कंठ भावविह्वल हो जाय। जब तुम्हारे हृदय में इतना कुछ छलछलाने लगे कि तुम उसे बांट देने को व्यग्र हो उठो, तो उस समय मैं तुम्हारी वास्तविक उत्सवमयता मानता हूं। जब तुम्हारे पांव थिरक कर सभी को अपने गुरु के बारे में बता आने को घर से निकल पड़ें तो उसे ही मैं नृत्य समझता हूं। जब तुम अपने-आप में डूब जाते हो, तुम्हारी आंखें खोई-खोई हो जाती हैं, तुम्हारे होठों पर गुरु शब्द स्वतः ही तैरने लगता है, तब मैं चाहे कहीं पर भी बैठा रहूं, तुम्हारे उस मौन गीत को चुपचाप सुनता रहता हूं।

प्रिय! यह पुनः गीतों का ही उत्सव हो रहा है, तुम्हारे मौन गीतों का भी और तुम्हारे होठों से निकलते गीतों का भी, क्योंकि यह पूर्णिमा का पर्व है। **सामान्य पूर्णिमा नहीं गुरु की पूर्णिमा, तुम्हारे जीवित जाग्रत गुरु की पूर्णिमा।** विशाल फलक पर फैले हुए तुम शिष्य रूपी तारों के उत्सव की पूर्णिमा, क्योंकि यही गुरु-शिष्य सम्बन्ध है और मेरी इच्छा मात्र यही है कि तुम अपने व मेरे सम्बन्धों को पहिचानों। जिस क्षण तुमने सम्बन्ध पहिचान लिए जिस क्षण तुमने जान लिया यह देह के भीतर कोई अलग चैतन्यता, कोई अलग प्रवाह है उस क्षण तुम मुझसे अलग होने की कल्पना भी नहीं कर सकोगे। फिर तुमको टोहके दे-देकर बार-बार जगाना नहीं पड़ेगा, फिर तुमको बार-बार इस तरह निमन्त्रण देकर बुलाना नहीं पड़ेगा क्योंकि फिर तो तुम मेरी ही चांदनी में जगमगाने वाले नन्हें टिमटिमाते तारे जो बन जाओगे, मुझसे अलग रहने की कल्पना ही नहीं कर सकोगे और इतना ही कुछ कहने के लिये, बस इतनी सी बात तुम्हारे हृदय में उतार देने के लिये एक प्रकार से तुमको खींच कर अपने आकाश सदृश्य विस्तृत वक्षस्थल में छुपा लेने के लिये ही तो मैं तुमको आमन्त्रण दे रहा हूं। आमंत्रण मेरे संग जगमगाने का, मेरे प्रकाश में नहाने का!

तुम्हारे जीवन की रातों को उजाले से भर देने का पर्व है यह, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम इसी भौतिक संसार में अपने परिवार के साथ गतिशील हो। कर्त्तव्य तुम्हारे ऊपर आरोपित है और तुम इन सबमें फंसे होते हुए भी अपने गुरु के प्रति ललक से भरे और आग्रहशील हो। बदले में जो मेरी गुरु-दक्षिणा है वह मात्र इतनी ही है कि तुम भी प्रकाशवान बन सको, अपने आसपास एक शीतलता बिखेर सको, सुवासित हो सको और प्रेम में आपूरित होते हुए अपने गुरु के प्रतीक बन सको। गंगोत्री से जब गंगा निकलती है तो उसका दुग्ध धवल फेन सभी को स्पर्श नहीं कर पाता, कुछ एक ही उस उद्गम तक पहुँच पाते हैं, शेष सभी तो उसे गंगा की गंगासागर तक की यात्रा में पड़ने वाले स्थानों पर ही उसका परिचय प्राप्त कर पाते हैं। तुम सभी ऐसे ही हो! वे जो मुझ तक नहीं पहुंच पाये हैं, जो गुरु का स्पर्श नहीं प्राप्त कर पाये हैं उनके लिये तुम्हीं परिचय हो। क्योंकि तुम्हारा उछाह, तुम्हारी जीवन जीने की शैली, तुम्हारी आत्मीयता, तुम्हारी चैतन्यता और तुम्हारी निमग्नता देखकर ही वे समझ सकते हैं कि जीवन में पवित्रता क्या होती है, गुरु-साहचर्य का अर्थ क्या होता है।

अभी मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, बहुत कुछ समझाना है, मेरी दृष्टि में तुम सब अभी भी अबोध शिशु ही हो, मैं तुम्हें देखता हूं तो मेरे हृदय में स्नेह का ज्वार उमड़ पड़ता है, जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता और उसे तुम मेरी निगाहों की भाषा से ही कुछ-कुछ समझ पाओगे। मेरे प्रेम और मेरे अश्रुओं में भीग कर ही अनुभव कर पाओगे। मैं ऐसा ही तुम सभी को भिगोने के लिये, तुम पर अपनी रसमयता की वर्षा करने के लिये, तुम्हें तृप्त कर देने के लिये, तुम्हें चैतन्य कर देने के लिये, तुम्हें पवित्र, उदात्त, सुखी और सम्पन्न बना देने के लिये ही आषाढ़ की पहली फुहार की तरह यह नेह निमन्त्रण भेज रहा हूं।

. . . इस आशा और विश्वास के साथ कि तुम्हारे सूखे दिलों में एक हलचल होगी, प्रेम की सोंधी महक उठेगी और तुम गुरु-कृपा की वर्षा में भीगने के लिये नाचते हुए निकल पड़ोगे।

असीम प्रेम के साथ

तुम्हारा गुरुदेव

"सिद्धाश्रम गुरु गुटिका" पर मेरे सिद्ध सफल प्रयोग

- यदि साधना में सफलता नहीं मिल रही हो तो सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को कुंकुम की डिब्बी में रख कर साधना स्थल पर रखें तो सफलता प्राप्त होती है।
- भाग्योदय के लिए चार गुटिका प्राप्त कर घर के चारों कोनों में रखें।
- सम्मान प्रप्ति के लिए सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को शिवलिंग पर चढ़ाएं।
- वशीकरण प्रयोग करने से पूर्व गुरु पूजन करते समय गुरु चित्र के आगे इस गुटिका को रखने से कार्य में सफलता मिलती ही है।
- व्यापार में वृद्धि के लिए सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को बहीखाते वाले स्थान में लाल कपड़े में बांध कर रखें।
- सिद्धाश्रम गुरु गुटिका की नित्य पूजा करने से घर में शांति बनी रहती है।
- भूत या बेताल की साधना करते समय इस गुटिका को अपने सामने रखने पर भय नहीं लगता है और सफलता मिलती है।
- सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को एक पात्र में जल भर कर रात भर रखें, सुबह वह जल रोगी पर छिड़क दें ऐसा लगातार २१ दिन करने से रोग समाप्त होने लगता है।
- एक कागज पर प्रेमी या प्रेमिका का नाम लिखकर, उस कागज पर गुटिका को रख कर नित्य सिरहाने रखें, तो प्रेमी वश में हो जाता है।
- सिद्धाश्रम गुरु गुटिका को बृहस्पतिवार को पूजा स्थान में रखें, फिर लक्ष्मी साधना करें तो धन प्राप्ति होती ही है।
- इस गुटिका पर सूर्योदय के समय अर्घ्य देने से मनोवाच्छित कार्य पूरे होते हैं।
- यदि इस गुटिका को बालक के गले में पहना दें तो उसका पढ़ाई में मन लगने लगता है।
- यदि इस गुटिका को अपने वस्त्र में रखकर कचहरी जाएं तो मुकदमें में सफलता मिलती है।
- प्रत्येक महीने की २१ तारीख को इस गुटिका का पूजन करने से अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता तथा गुरु-सिद्धि प्राप्त होती है।
- इस गुटिका को तांत्रिक साधनाओं में अपने समक्ष रखने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

भाग्योदय साधना
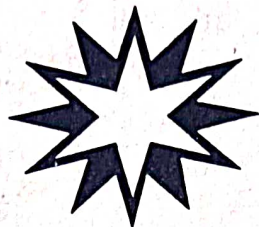
जीवन शैशव से निकल कर और यौवन की अठखेलियों से गुजर कर बहुत शीघ्र उस स्थान पर आ जाता है जहां से फिर कर्त्तव्य और जीवन-यापन की समस्या सामने आकर खड़ी हो जाती है। यदि इस स्थिति के लिये व्यक्ति पहले से सतर्क न हो या कोई प्रबन्ध न किया हो, तो उसका सारा जीवन अस्त-व्यस्त होकर रह जाता है।
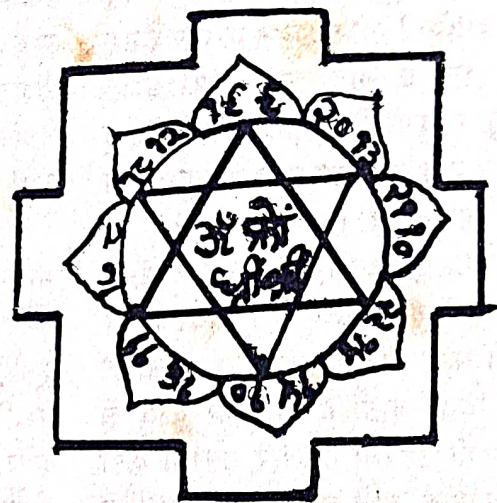
जीवन में कर्त्तव्य आवश्यक हो सकते हैं लेकिन जिस प्रकार से कर्त्तव्य आकर जीवन को ग्रसित कर लेते हैं वह न तो आवश्यक होता है न सहज।-- बचपन, बचपन के बाद किशोरावस्था, किशोरावस्था के बाद यौवन और इसी यौवन की प्रथम सीढ़ी पर पांव रखते ही कर्त्तव्यों का संसार भी प्रारम्भ हो ही जाता है। स्वयं खुद के भरण-पोषण के साथ-साथ माता-पिता का दायित्व छोटे भाई-बहिनों का परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से दायित्व एवं स्वयं अपने परिवार की जिम्मेदारी– यही लगभग पचहत्तर प्रतिशत व्यक्तियों के जीवन की कथा है। शेष पच्चीस प्रतिशत में हो सकता है कि उन्हें पैतृक सम्पदा मिली हो, पारिवारिक दायित्व, किन्हीं अन्य सुविधाओं से या तो न हो अथवा सीमित हो, किन्तु फिर भी जीवन-यात्रा तो शेष रह ही जाती है,

प्रायः २०-२२ वर्ष की अवस्था आते-आते व्यक्ति को अपने भविष्य और भावी जीवन की चिन्तायें आकर घेर लेती ही हैं। **स्व व्यवसाय अथवा नौकरी– इनमें से किसका चुनाव किया जाय,** इस बात का द्वंद्व प्रारम्भ हो ही जाता है। कुछ सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें पैतृक रूप से जीवन-यापन का मार्ग मिल जाता है। घर का व्यवसाय या पैतृक सम्पत्ति मिल जाती है किन्तु सम्पत्ति प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता और सफलता नहीं मानी जा सकती, इसके बाद भी विवाह, खुद का स्वास्थ्य, शत्रु-निवारण, घर की शान्ति जैसे बहुत से पक्ष शेष रह जाते हैं दूसरी ओर सामान्य व्यक्ति को तो प्रारम्भिक बिन्दु अर्थात् धन के उपार्जन से ही अपने जीवन का प्रारम्भ करना पड़ता है।

जीवन के कर्त्तव्यों और इन

जीवन में कर्त्तव्य आवश्यक हो सकते हैं किन्तु जब कर्त्तव्य आकर जीवन को ग्रसित कर ले तब?

फिर कब व्यक्ति अपनी इच्छाओं का संसार रच पाएगा, अपने स्वप्नों को पूर्ण कर पाएगा। जिससे जीवन में प्रसन्नता आए।

आवश्यक प्राथमिक पक्षों को यदि क्षण भर के लिये परे रखकर देखें तो व्यक्ति की अपनी इच्छाओं और भावनाओं का भी संसार होता है और वह संसार ही उसके दैनिक जीवन में सरसता तथा गति का आधार होता है। **लेकिन कब जीवन कर्त्तव्य भावना और वास्तविकताओं के बीच गड्ड-मड्ड होकर बीत जाता है इसका पता ही नहीं चलता** और जब तक पता लगता है, जीवन में कुछ ठहराव आता है तब तक खुद ही संतान बड़ी हो गई लगती है। पता लगता ही नहीं कि यौवन की उस पहली सीढ़ी के बाद कब २०-२२ वर्ष बीत गये और जीवन के उस चरण तक आने के बाद मन मे उमंगें बची हों या न बची हों जीवन में आशा शेष रह गयी हो या न रह गयी हो, कुछ कहा नहीं जा सकता।

एक प्रकार से देखा जाय तो प्रायः पच्चीस वर्ष की अवस्था में कंधों पर कर्त्तव्यो का जो जुआ लाकर रख दिया जाता है वह फिर मृत्यु के साथ ही उतरता है और उतरता कहां है? व्यक्ति जाते-जाते अपनी संतानों के कंधे पर रखकर चला जाता है, इसका क्या कारण है, इसका क्या उपाय है, यह सोचने के अवसर जीवन में आते ही नहीं क्योंकि धन कमा कर कुछ फुर्सत पायी तो पत्नी की बीमारी सामने आकर खड़ी हो गयी पत्नी स्वस्थ हुई हो तो बेटा पढ़ाई में कमजोर पड़ने लगा उससे निपटे तो कहीं धन फंस गया ज्यों-त्यों उसको भी निबटाया तो खुद का स्वास्थ्य . . .

साधक पत्रिका में वर्णित साधनायें पढ़ते हैं, उनका लाभ भी प्राप्त करते हैं किन्तु उनके **मन में एक प्रश्न शेष रह जाता है कि जीवन पूरी तरह से क्यों नहीं संवर रहा है?** उन्हें शंका होती है कि मैंने अमुक-अमुक साधनायें की, दीक्षायें भी ली किन्तु पूर्णरूप से लाभ नहीं मिल सका और एक प्रकार से उनका सोचना गलत भी नहीं है क्योंकि प्रत्येक जागरुक साधक अपनी ओर से अपनी क्षमता भर प्रयास करता ही है, इसमें कमी केवल यह रह जाती है कि उनके जीवन में प्रत्येक साधना आवश्यक होते हुए भी फल अपने विशेष स्वरूप के अनुसार ही देती है, जबकि जीवन की सफलताएं अनेक पक्षों से निर्मित होती हैं।

जीवन के अनेक पक्ष और वे भी पूर्णता से, प्रत्येक साधना नहीं समेट सकती जबकि एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा का जन्म होता ही है, एक स्थिति में सफलता मिलने के बाद दूसरी स्थिति सामने आती ही है और इनकी पूर्ति करना भी कोई दोषयुक्त कार्य नहीं है। जीवन के ऐसे चिन्तन को लेकर योगियों ने वे सूत्र ढूंढने चाहे जो जीवन के आवश्यक सूत्र हैं और उनके साथ ही साथ कोई ऐसी साधना भी प्राप्त करनी चाही जो जीवन के सभी प्रारम्भिक और आवश्यक तत्वों को अपने साथ समेटती हो। उन्होंने अपने निष्कर्षों में पाया कि जीवन के ऐसे पक्ष कुल १४ हैं जिनमें धन प्राप्ति, स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख, शत्रु बाधा निवारण, राज्य सम्मान, विदेश यात्रा योग, पुत्र सुख, इत्यादि सम्मिलित किये और यह निष्कर्ष निकला कि जीवन में इन चौदह स्थितियों को प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता है **जिसे उन्होंने भाग्योदय के नाम से वर्णित किया,** जिसके द्वारा जीवन की प्रारम्भिक स्थितियों को सुधारने के साथ ही साथ जीवन की भावी योजनाओं की पूर्ति भी हो सके।

जीवन में साधनायें तो महत्वपूर्ण होती ही हैं उनके साथ ही साथ वे दिवस भी महत्वपूर्ण होते हैं जिनका तादात्म्य साधना विशेष से किया जाय और जब ऐसा सम्भव हो सकता है अर्थात् उचित मुहूर्त का समन्वय उचित साधना से कर दिया जाता है तब तो विशेष कुछ घटित होता ही है। यों तो जीवन में कोई भी साधना कभी भी सम्पन्न की जा सकती है किन्तु जो साधनायें प्रारम्भ की, आधार एवं एक प्रकार से अंकुरण की साधनायें होती हैं उनके सन्दर्भ में मुहूर्त का महत्व सबसे अधिक होता है। ठीक यही बात उन साधनाओं के सन्दर्भ में भी कही जा सकती है जो सम्पूर्णता की साधनायें होती हैं। क्योंकि प्रारम्भिक साधनायें और सम्पूर्णता की साधनायें— इन दो दशाओं में साधना विशेष का महत्व काल के किन्हीं विशेष क्षणों से पूर्णतः बद्ध होता ही है।

भाग्योदय साधना एक ऐसी

जो भी साधना जीवन से दुर्भाग्य मिटा दे वही वास्तव में सौभाग्य प्रदायक साधना है सही अर्थों में भाग्योदय साधना है।

. . . और जहां भाग्योदय की बात आती है वहां लक्ष्मी की साधना ही अनिवार्य है, जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है।

ही विशिष्ट साधना है जिसका सम्बन्ध **निश्चित सिद्धि दिवस** . . . से किया गया है, जो इस वर्ष **८-७-६४** को घटित हो रहा है। सिद्धाश्रम पंचाग द्वारा प्रणीत यह मुहूर्त अत्यन्त उच्चकोटि का मुहूर्त है और जहां सिद्ध योगी इस दिवस का उपयोग किसी उच्चकोटि की साधना को सम्पन्न करने में करते हैं वहीं गृहस्थ व्यक्ति इस दिन का उपयोग **भाग्योदय साधना** में कर सकते हैं। उच्चकोटि की साधनाओं में प्रवेश लेने से पूर्व, महाविद्या साधना अथवा जगदम्बा साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने हेतु भी भाग्योदय साधना सम्पन्न करना अति आवश्यक माना गया है।

इस साधना की मूलशक्ति मां भगवती महालक्ष्मी है और जहां केवल महालक्ष्मी साधना सम्पन्न करने से साधक को धन, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है वहीं महालक्ष्मी को आधार बनाते हुए इस दिवस की भाग्योदय साधना सम्पन्न करने से उसे सर्व-विधि सौभाग्य प्राप्त होता है। एक प्रकार से महालक्ष्मी अपने एक हजार आठ वर्णित स्वरूपों के साथ पूर्ण कृपालु हो जाती है और विशेष यंत्रों के माध्यम से विशेष प्रक्रिया के द्वारा उनको चिरस्थायित्व दिया जा सकता है, जिससे साधक के जीवन में कदम-कदम पर बाधाएं और अड़चनें न आएं।

साधक को चाहिए कि इस दिवस की साधना सम्पन्न करने के लिये समय से बहुत पहले ही सचेत होकर इस साधना की सामग्री को प्राप्त कर लें, क्योंकि यह अवसर ऐसा विशिष्ट अवसर है जो वर्ष में केवल एक बार ही घटित होता है। अन्य साधनाएं तो किन्हीं भी शुभ दिवसों या नक्षत्रों में की जा सकती हैं किन्तु **भाग्योदय की यह साधना तो केवल निश्चित सिद्धि दिवस पर ही सम्पन्न की जा सकती है।** इस साधना में केवल तीन सामग्रियों की आवश्यकता होती है— **पारद श्रीयंत्र** , **सौभाग्य शंख** एवं **कमलगट्टे की माला** इसके अतिरिक्त इस साधना में किसी विशेष विधि - विधान या पूजन की आवश्यकता नहीं है। यदि साधक के पास **महालक्ष्मी का चित्र** हो तो वह उसे मढ़वा कर स्थापित कर दे अथवा महालक्ष्मी के किसी भी स्वरूप का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र प्राप्त कर उसे साधना हेतु मढ़वा कर स्थापित कर लें।

साधना दिवस के दिन प्रातः नौ बजे से दस बजे के मध्य साधना में अवश्य बैठ जाएं और समय को इस प्रकार से निश्चित कर लें कि साधना साढ़े दस के पहले-पहले अवश्य पूर्ण हो जाय। महालक्ष्मी के चित्र के सामने घी का बड़ा दीपक लगाएं कुंकुम, केसर, अक्षत, पुष्प की पंखुड़ियां एवं नैवेद्य से उनका पूजन करने के उपरान्त केसर से स्वस्तिक चिन्ह अंकित कर उस पर सौभाग्य शंख स्थापित करें और पहले से ही चुनकर रखे चावल के १०८ बिना टूटे दानों को मंत्रोच्चार पूर्वक सौभाग्य शंख पर समर्पित करें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मंदिरे तिष्ट तिष्ट स्वाहा

इस पूजन के उपरान्त **कमलगट्टे की माला** से **श्रीयंत्र** पर त्राटक करते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः

मंत्र जप के उपरान्त भगवती महालक्ष्मी की आरती करें और प्रार्थना पूर्वक अपने स्थान को छोड़ें। उस सम्पूर्ण दिवस पूजन को स्थापित रहने दें लेकिन ध्यान रखें कि चूहे आदि पूजा स्थान को अव्यवस्थित न करें। सांयकाल गोधूलि के पश्चात् उपरोक्त मंत्र की एक माला जप पुनः करें तथा सौभाग्य शंख चढ़ाए गये चावलों अथवा पुष्प की पंखुड़ियों को किसी रेशमी कपड़े में बांध लें जो आपके जीवन में स्थायी सौभाग्य के रूप में विद्यमान रहेंगे। सौभाग्य शंख एवं कमलगट्टे की माला को अगले दिन प्रातः विसर्जित कर दें और श्रीयंत्र को किसी भी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें।

सौभाग्य प्राप्ति की यह विशेष सिद्ध सफल साधना किसी भी आयु वर्ग का कोई भी साधक या साधिका सम्पन्न कर सकती है।

सिद्धाश्रम रहस्य

सिद्धाश्रम इस धरा की वह पावन स्थली है जिसका दर्शन करने की इच्छा प्रत्येक साधक और योगी के मन में विद्यमान रहती ही है किन्तु अत्यधिक पवित्र स्थली होने के कारण इसकी गोपनीयता इस प्रकार अक्षुण रखी गयी जिससे इसके रहस्य प्रकट न हो सके।

सिद्धाश्रम से सम्बन्धित जटिल प्रश्नों के उत्तर, जिनसे इस पावन भूमि का संक्षिप्त परिचय प्राप्त हो सकता है।

प्रश्न- ***सिद्धाश्रम कहां है, और इसका स्वरूप क्या है?***

उत्तर- यह शाश्वत अवर्णनीय अद्वितीय आश्रम है, जहां पिछले कई हजार वर्षों से उच्च कोटि के योगी तपस्यारत हैं, यह मानसरोवर के पास स्थित कैलाश पर्वत से आगे लगभग २०० मील की दूरी पर स्थित है, मानसरोवर के आगे का पूरा रास्ता बर्फीला है, और यहां किसी प्रकार का रास्ता या पगडंडी नहीं है, इसके आगे केवल वही व्यक्ति जा सकता है, जिसने उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न की हों, गुरु कृपा से जब ऐसी साधनाएं सम्पन्न होती हैं, तब गुरु अपने साथ उसे लेकर सिद्धाश्रम आते हैं, इसके बाद आगे सिद्धाश्रम के तपस्वियों द्वारा प्राप्त संकेतों से ही बढ़ना सम्भव है।

यह सैकड़ों मील लम्बा-चौड़ा परम, पावन, पवित्र, देव दुर्लभ आश्रम है, जिसमें आज भी उच्च कोटि के ऋषियों वशिष्ठ, विश्वामित्र, गोरखनाथ, शंकराचार्य, कृपाचार्य, भीष्म, अश्वत्थामा आदि पौराणिक ऋषियों को देखा जा सकता है, वे सशरीर वहां विद्यमान हैं, और उनके क्रिया-कलाप ठीक वैसे ही हैं, जैसे अन्य किसी आश्रम में साधु-संन्यासियों के होते हैं।

प्रश्न- ***विश्वास नहीं होता कि हजार दो हजार वर्ष प्राप्त साधु-सन्यासी इस समय विद्यमान हैं?***

उत्तर- हम स्थूल व्यक्ति हैं, हमारी बुद्धि के सोचने की एक सीमा है, हमने अभी तक ब्रह्माण्ड का एक बहुत छोटा-सा अंश देखा है, इसके अलावा समस्त ब्रह्माण्ड की अलौकिक शक्तियों को न तो हम अनुभव कर सके हैं, और न हम उन्हें देख सके हैं। ऐसी कई शक्तियां, मंत्र, साधना और तपस्या मार्ग हैं जिसके माध्यम से अनन्त काल तक व्यक्ति सशरीर जीवित रह सकता है, जिस प्रकार हमारी दुनिया में ४०-५० वर्ष जीवित रहना कोई आश्चर्यजनक बात प्रतीत नहीं होती, ठीक उसी प्रकार सिद्धाश्रम में भी हजार दो हजार वर्ष की आयु प्राप्त संन्यासी को देखना कोई कठिन या असम्भव बात प्रतीत नहीं होती, वहां पर तो दो हजार वर्ष आयु प्राप्त योगी भी हैं, कुछ योगी छः हजार से भी ज्यादा वर्षों के हैं, ये सब **अणु साधना** के माध्यम से सम्भव है, इस साधना के द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जीवित रह सकता है, इस साधना को कोई भी सम्पन्न कर उन्नत जीवन प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न- ***क्या कोई व्यक्ति सिद्धाश्रम जा सकता है?***

उत्तर- सिद्धाश्रम जैसे दिव्य आश्रम में जाने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। संन्यासी किसी वर्ण, जाति, रंग या भेद का नहीं होता, जो सही अर्थों में संन्यासी है वह सिद्धाश्रम जा सकता है, इसमें स्त्री और पुरुष का कोई भेद नहीं है, यह भी आवश्यक नहीं है, कि अधिक आयु वाला व्यक्ति ही सिद्धाश्रम में जा सकता हो, जो एक निश्चित साधना सम्पन्न कर लेता है, वह सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है, इसके लिए कुछ निश्चित नियम और साधनाएं हैं, जिनको सम्पन्न करना आवश्यक होता है, ऐसा करने पर ही वह गुरु कृपा से सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने का अधिकारी होता है।

प्रश्न- ***वे कौन से नियम हैं, जिनका पालन करना आवश्यक है, और जिनके द्वारा सिद्धाश्रम में प्रवेश पाया जा सकता है?***

उत्तर- १. सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने के लिए वह दीक्षा प्राप्त व्यक्ति हो, जिसे गुरु ने शाम्भवी दीक्षा प्रदान की हो।

२. उसने कम से कम दो महाविद्याओं तथा तीन अन्य साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त की हो।

३. जिसने नियमित रूप से कुछ समय गुरु के पास रहकर गुरु साधना या सिद्धाश्रम साधना सम्पन्न की हो।

सिद्धाश्रम जाने के लिए यह आवश्यक है, कि वह सिद्धाश्रम साधना या गुरु साधना में दक्षता और सफलता प्राप्त करे, साथ ही साथ दो महाविद्याओं में सिद्धि प्राप्त करना भी आवश्यक है, **परंतु यदि कोई साधक इन महाविद्याओं को सिद्ध न कर सके तो गुरु द्वारा दिव्य शक्तिपात प्राप्त होने से भी इन सिद्धियों में सफलता पाई जा सकती है,** पर वह पूर्ण रूप से दिव्य शक्तिपात तभी अपने अंदर समाहित कर सकता है, जब उसने कम से कम चौबीस लाख गुरु मंत्र-जप कर लिया हो।

इस प्रकार की उच्चकोटि की साधनाओं में गुरु- कृपा से ही सफलता मिल सकती है, और इसके लिए नियमित एवं निरन्तर गुरु से सम्पर्क बना रहना चाहिए।

प्रश्न- ***क्या सिद्धाश्रम जाने में गुरु का होना नितांत आवश्यक है?***

उत्तर- ऐसी साधनाओं में गुरु का होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि वही साधनाओं में मार्गदर्शन कर सकता है, उसी के द्वारा जीवन में सफलता पाई जा सकती है, इसके अलावा भी यह आवश्यक है, कि यदि साधक साधनाएं सिद्ध भी कर ले, तब भी सिद्धाश्रम जाने के लिए गुरु का साथ होना अनिवार्य माना गया है, उनके साथ ही सिद्धाश्रम जाना सम्भव हो सकता है।

प्रश्न- ***क्या आपके कुछ शिष्य सिद्धाश्रम गए हैं?***

उत्तर- यदि गृहस्थ जीवन और संन्यासी जीवन को देखा जाए तो सैकड़ों शिष्य अब तक सिद्धाश्रम में प्रवेश पा चुके हैं, यह मेरा सौभाग्य रहा है, कि मुझे सन्यास जीवन में भी और गृहस्थ जीवन में भी पूर्णतः सेवाभावी तत्पर और समर्पित व्यक्तित्व वाले शिष्य मिले हैं, और उनको जिस प्रकार से मार्गदर्शन दिया है, उसी प्रकार से चलकर उन्होंने अपने जीवन में सफलताएं पाई हैं, आज वे सिद्धाश्रम में उच्चकोटि की साधनाओं में रत हैं, और उन्होंने वहां पर जिन बुलन्दियों को छुआ है, जिस गति से आगे बढ़े हैं, वह अपने-आप में सराहनीय है, मुझे ऐसे शिष्यों पर गर्व है।

प्रश्न- ***क्या आप नित्य सिद्धाश्रम से सम्पर्क रखते हैं?***

उत्तर- इसके लिए यह आवश्यक नहीं होता कि आप पैदल चलकर सिद्धाश्रम पहुंचे, सूक्ष्म शरीर से भी सिद्धाश्रम में जाना सम्भव हो सकता है, और इस दिव्य स्थली से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है, जिस प्रकार स्थूल शरीर से जो क्रियाएं होती हैं, वे सारी क्रियाएं सूक्ष्म शरीर के द्वारा भी सम्भव हैं, अतः इस दृष्टि से मैं लगभग नित्य ही सिद्धाश्रम से और अपने शिष्यों से सम्पर्कित रहता हूं, और बराबर उन्हें मार्गदर्शन देता रहता हूं।
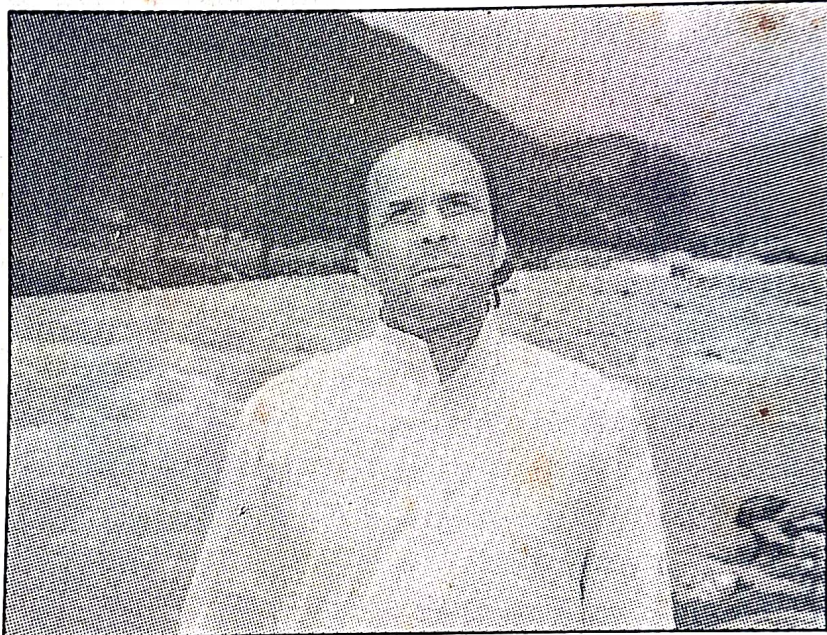
प्रश्न- ***कई ग्रंथों में सिद्ध योगा झील के बारे में पढ़ा है, यह क्या है?***

उत्तर- यह झील सिद्धाश्रम की विशेषता है, बहुत लम्बी-चौड़ी मीलों तक फैली हुई इस झील का पानी अत्यधिक पवित्र, दिव्य और स्वच्छ है, नील वर्ण का यह जल इतना स्वच्छ है कि इसकी तलहटी में कोई सिक्का पड़ा होता है तो वह भी आसानी से देखा जा सकता है, इस झील के जल से निःसृत सुगंध शरीर के समस्त पापों को मिटाने में सक्षम है।

सिद्ध योगा झील के जल की यह विशेषता है, कि इसमें स्नान करने पर व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति पा लेता है, यही नहीं अपितु यदि इस झील में आठ-दस बार स्नान कर लिया जाए तो उसकी वृद्धावस्था समाप्त हो जाती है, बालों में कालापन, चेहरे पर एक अलौकिक आभा, और शरीर में कसावट आ जाती है, कुछ ही दिनों में वह पूर्ण सुन्दर और आकर्षक बन जाता है। रोगों को मिटाने व यौवन प्रदान करने की दृष्टि से इसका पानी अपने-आप में अद्वितीय है, इसीलिए सिद्धाश्रम के सभी

योगी साधक एवं साधिकाएं यौवनवान, आकर्षक एवं दिव्य दिखाई देते हैं।

प्रश्न- ***वहां की जलवायु कैसी रहती है?***

उत्तर- वहां की जलवायु एक-सी बनी रहती है, जिसमें न तो सर्दी होती है, और न गर्मी। आनन्ददायक वसन्त ऋतुवत् मौसम ही निरन्तर बना रहता है।

प्रश्न- ***क्या सिद्धाश्रम में साधिकाओं का प्रवेश भी सम्भव है?***

उत्तर- सिद्धाश्रम में जाति, वर्ण - भेद, रंग आदि की दृष्टि से संकीर्ण मनोवृत्ति या भावना नहीं है, वहां कई उच्चकोटि की साधिकाएं हैं, जो कि गुरु के माध्यम से उच्चस्तरीय साधना में संलग्न हैं, जो सिद्धाश्रम को उन्नत बनाने में सहायक हैं, प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में उल्लिखित गार्गी, मैत्रेयी आदि देवियों को भी वहां देखा जा सकता है।

प्रश्न- ***यदि कोई साधक महाविद्याएं सिद्ध न कर सके और केवल गुरु साधना ही सम्पन्न करता रहे तो क्या वह सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है?***

उत्तर- ऐसा सम्भव है भी, नहीं भी। नहीं इसलिए कि नियमों के अन्तर्गत दो या तीन महाविद्याएं सिद्ध करना आवश्यक है, और हां, इसलिए कि शिष्य की अत्यधिक तीव्र लालसा एवं उच्चकोटि की गुरु -साधना, गुरु- सेवा या गुरु -भक्ति के द्वारा भी शिष्य या साधक गुरुमय हो सकता है, और गुरु की तपस्या का अंश प्राप्त कर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है।

प्रश्न- ***क्या गृहस्थ व्यक्ति वहां जा सकता है?***

उत्तर- गृहस्थ या संन्यासी को तो प्रश्न ही नहीं है, प्रश्न तो इस बात का है, कि क्या उसने साधना के उस स्तर को प्राप्त किया है जो इसके लिए अपेक्षित है, गृहस्थ व्यक्ति सिद्धाश्रम में गए हैं, और वहां रहे भी हैं, यह उनकी इच्छा पर निर्भर रहता है कि कितने समय तक सिद्धाश्रम में रहें और कब पुनः गृहस्थ आश्रम में लौट आएं, गृहस्थ इस प्रकार की साधना के लिए बाधाकारक नहीं है।

प्रश्न- ***क्या सिद्धाश्रम से कोई वस्तु प्राप्त की जा सकती है?***

उत्तर- उच्च कोटि के साधु-संन्यासी और साधक निरन्तर सिद्धाश्रम के सम्पर्क में रहते हैं, वे चाहें तो यहां से शून्य मार्ग द्वारा वहां तक पदार्थ या वस्तुएं पहुंचा सकते हैं, और यदि वे चाहें तो वहां से वस्तुएं प्राप्त कर सकते हैं, इसमें कुछ सेकण्डों से ज्यादा समय उन्हें नहीं लगता।

इस प्रकार की वस्तुएं अलौकिक और अद्वितीय होती हैं, **यदि कोई माला, वस्त्र या कोई पदार्थ जिसके भी पास होता है, उसका जीवन सही अर्थों में धन्य समझना चाहिए,** क्योंकि उसके माध्यम से उसके जीवन का एक नवीन निर्माण सम्भव होता है, और उसकी उन्नति के द्वार खुल जाते हैं।

प्रश्न- ***सुना है कि सिद्धाश्रम में देव अप्सराएं समय-समय पर नृत्य करती हैं? क्या यह सही है?***

उत्तर- यह एक शास्त्रीय विद्या है, जो कि पौराणिक काल से ही हमारे महत्वपूर्ण अवसरों पर प्रस्तुत की जाती रही है, यह मंगलाचरण कहलाता है, **अतः इस परम्परा को सिद्धाश्रम में भी नियमित किया गया तो यह भारतीय मर्यादा के अनुकूल ही है,** वास्तव में ही वहां पर नित्य कोई न कोई उत्सव या समारोह आयोजित होते रहते हैं, जो कि उच्च कोटि के ज्ञान से सम्बन्धित होते हैं, और इनमें से महत्वपूर्ण अवसरों पर इस प्रकार के नृत्य, संगीत व संस्कृति की अन्य विधाएं प्रस्तुत की जाती हैं।

प्रश्न- ***क्या सिद्धाश्रम में जाने पर कायाकल्प हो जाता है?***

उत्तर- इसका उत्तर मैं पहले ही दे चुका हूं, कि वहां के वातावरण और सिद्ध योगा झील के जल की यह विशेषता है कि उसमें स्नान करने मात्र से ही समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, और वह यौवनमय बन जाता है, वृद्ध, अशक्त और बीमार व्यक्ति इस प्रकार के वातावरण में यौवनमय बन जाता है, यह यहां के वातावरण की ही विशेषता है।

प्रश्न- ***आपके लगभग कितने शिष्य सिद्धाश्रम में हैं?***

उत्तर- सैकड़ों। इनमें संन्यासी शिष्य और गृहस्थ शिष्य दोनों ही हैं, मेरा तो निरन्तर प्रयास रहता है, कि वे शिष्य अपनी मानव जीवन की सार्थकता समझें और एक बार दृढ़ निश्चय कर लें कि सिद्धाश्रम में प्रवेश पाना ही है, तो दुनिया की कोई शक्ति उसके दृढ़ निश्चय को हिला नहीं सकती, इसी दृढ़ निश्चय के बल पर शिष्यों ने उच्च स्तरीय साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धाश्रम में प्रवेश पाया है।

प्रश्न - ***स्वामी विज्ञानानन्द जी ने किसी स्थान पर बताया कि आपने सिद्धाश्रम में काफी परिवर्तन करने में सफलता पाई है, ये परिवर्तन क्या हैं?***

उत्तर- मैं तो निमित्त मात्र हूं, पहले वहां केवल तपस्या और साधना पर ही ध्यान दिया जाता था, पर अब वहां समारोह मनाए जाते हैं, चहल-पहल, खुली-प्रसन्नता का वातावरण बना रहता है, पहले केवल भगवे वस्त्र ही धारण किए जा सकते थे, पर अब वस्त्रों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। सिद्धयोगा झील में पहले अंदर जाकर कोई स्नान नहीं कर सकता था, अब उसमें मीलों दूर तैर सकते हैं, नौकाओं के द्वारा जल विहार कर सकते हैं, झील के किनारे संगीत, नृत्य आदि का आयोजन कर सकते हैं, चारों तरफ का वातावरण उन्माद भरा, आनन्दप्रद और अद्वितीय है, पहली बार सही अर्थों में सिद्धाश्रम में आनन्द अनुभव होने लगा है, बार-बार वहां जाने को जी करता है, ज्यादा से ज्यादा वहां रहने की इच्छा होती है, और सब कुछ देख लेने की भावना मन में बनी रहती है।

मॉरीशस में गुरु मंदिर की स्थापना

अपने मूल स्थान की माटी की गंध व्यक्ति से कभी भुलायी जा ही नहीं सकती। उस परिवेश में जो कुछ भी उसके बचपन के संग जुड़ा होता है वह एक अमिट स्मृति और जीवन का अंग होता है। व्यक्ति जीवन पर्यन्त उसकी सुखद यादों में भीगता, डूबता, रीझता, अपने को चैतन्य और प्रफुल्लित बनाए रहता है। ऐसी ही अमिट यादें और बचपन जिस देश की माटी में रच-पच गया है वह है भारत से हजारों कि० मी० दूर हिन्द महासागर की अपार जलराशि के मध्य में स्थित छोटा सा द्वीप **मॉरीशस**। वर्षों पूर्व उत्तर भारत के सैकड़ों परिवार उस सुदूर अनजानी भूमि पर जाकर उतरे और फिर कालचक्र में वहीं के होकर रह गए लेकिन उनका मन और प्राण भारत में ही बसा रह गया। वहां की सोंधी गंध, दूर-दूर तक बिखरे हरे-भरे खेत, रीति-रिवाजों और अपने जीवन के आधार अपनी संस्कृति में ही बसा रह गया। वे जाते-जाते अपनी इसी स्मृति की पूंजी को अपनी संतानों को देते गए और जिस पीढ़ी ने अपने पूर्वजों की मातृभूमि को देखा तक भी नहीं था वह भी इसके दर्शन करने के लिए, इसकी माटी को माथे से लगाने के लिए तड़पती रही।

जो सम्बन्ध शाश्वत् होते हैं उनमें ऐसा ही होता है केवल मातृभूमि और परम्पराओं से ही नहीं, जीवन के आधार, अपने इष्ट और उसके मूर्तिमंत स्वरूप सद्गुरु से भी।

ऐसे ही अनेक जीवंतता से भरे साधकों ने आज से वर्षों पूर्व भारत आकर न केवल अपने पूर्वजों की मातृभूमि का दर्शन करके तृप्ति अनुभव की वरन पूज्य गुरुदेव से भेंटकर उनके चरणों में बैठ कर जाना कि उनकी पैतृक परम्परा किस विराट गुरु-शिष्य परम्परा का अंग भी हुआ करती थी। ऐसे योग्य समर्पित मॉरीशस वासी शिष्यों की सूची बहुत विशाल है। उनका आग्रह और अथक प्रयास ही रहा कि लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व पूज्यपाद गुरुदेव के पावन चरण मॉरीशस की धरती पर पड़े। इस विशेष अवसर पर प्रधानमंत्री **श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ** एवं उनके मंत्रिमण्डल के अनेक सहयोगियों ने पूज्य गुरुदेव से भेंट सम्पन्न कर कार्यक्रम को गरिमा दी, साथ ही उसी अवसर पर अनेक समर्पित शिष्यों ने पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्रदत्त चेतना का निरन्तर विस्तार करने का भी संकल्प लिया।

जिस चेतना का प्रारम्भ पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा **५ दिसम्बर १९९० को पोर्ट लुई** में किया गया उसी का परिणाम है कि आज वहां के योग्य साधक **श्री निर्दोष सिंह लड़ाई** के अथक परिश्रमों से **CAROLINE** (मॉरीशस) में **मॉरीशस सिद्धाश्रम साधक परिवार** के तत्वावधान में गुरु मंदिर की स्थापना का सफल कार्य सम्पन्न हुआ है। आश्रम के इस भवन एवं गुरु मंदिर की नींव तो १ नम्बर १९९१ को ही रख दी गई थी। जिसका विधिवत् उद्घाटन समारोह दिनांक **२५-०४-९३** को मॉरीशस के प्रमुख सनातन धर्मी व्यक्तित्व **श्री सुरेश रामवर्ण** द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री लड़ाई एवं अनेक प्रमुख शिष्यों ने जिस प्रकार से इस निर्माण कार्य को पूर्णता दी उसके लिए वे पूज्यपाद गुरुदेव के विशिष्ट आशीर्वाद के सुपात्र हैं। ऐसे समस्त साधकों ने पूज्यपाद गुरुदेव से हजारों किलोमीटर दूर रहते हुए भी एक ऐसे कार्य को सम्पन्न किया है, ऐसी धरोहर बनायी है जिससे उन्होंने अपने पूर्वजों की कड़ी में ही अपनी धर्म संस्कृति से जुड़ते हुए उनके प्रति वास्तविक पुष्पांजलि व्यक्त की है।

गौरवशाली हिन्दी
मासिक पत्रिका

की **आजीवन सदस्यता**

सुखद जीवन का आधार तो है ही साथ ही पूज्यपाद गुरुदेव के होंटों पर अपना नाम अंकित करा लेने की प्रक्रिया भी

उपहार

जो आजीवन सदस्य बनने पर मुफ्त में दिए जाते हैं-

- **पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा**
- **प्रथम साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी शिविर सिद्धि पैकेट (धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा सिद्धासन।**
- **अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक सूर्यकान्त उपरत्न**
- **समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी पारद शिवलिंग उपहार स्वरूप**
- **प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त गुरु यंत्र**
- **सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा सर्वथा मुफ्त**
- **एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य पूज्यपाद गुरुदेव का आकर्षक चित्र**
- **सिद्धाश्रम कैसेट, ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा।**

केवल **६६६६/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि
एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - विना उपरोक्त उपहारों के भी केवल २,४००/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : ०२६१-३२२०६, फेक्सः०११-७१८६७००

अपने शिशु को चेतना प्रदान करें इस प्रकार

प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है कि उसकी सन्तान योग्य और प्रखर हो तथा अपने जीवन में उन्नति कर उस स्थान तक पहुंच सके जो उनकी कामना व स्वप्न है। एक प्रकार से माता-पिता अपने जीवन की जिन अभिलाषाओं को पूर्ण नहीं कर पाते हैं उन्हीं की पूर्ति अपने वंशजों के माध्यम से करना चाहते हैं और अपने जीवन के स्वप्न को अपनी सन्तानों के माध्यम से साकार करना चाहते हैं।

उनकी ममता, स्नेह और अपनत्व उन्हें उद्वेलित करता रहता है किस प्रकार से इसके लिए उचित उपाय प्राप्त किया जाय। अच्छे से अच्छे से विद्यालय में प्रवेश, शिक्षा की सुविधाएं, अध्यापकों व ट्यूशन का अतिरिक्त प्रबन्ध तथा स्वयं को उनके साथ संलग्न रखना, उनके इसी प्रयास के रूप होते हैं, किन्तु आवश्यक नहीं कि इतने से ही निश्चिन्त हुआ जा सके और बालक को प्रखरता की ओर उन्मुख किया जा सके क्योंकि जिस चेतना के द्वारा बालक ज्ञान प्राप्त करता है, प्रखरता अर्जित करता है उसका केन्द्र विन्दु वाह्य रूप से नहीं वरन् आन्तरिक रूप से शिशु के मस्तिष्क में ही होता है जो सद्गुरु के स्पर्श एवं दीक्षा द्वारा जाग्रत किया जा सकता है। सद्गुरु के इसी कृपा स्पर्श का मूर्त स्वरूप है **सरस्वती दीक्षा** तथा **ज्ञान दीक्षा।**
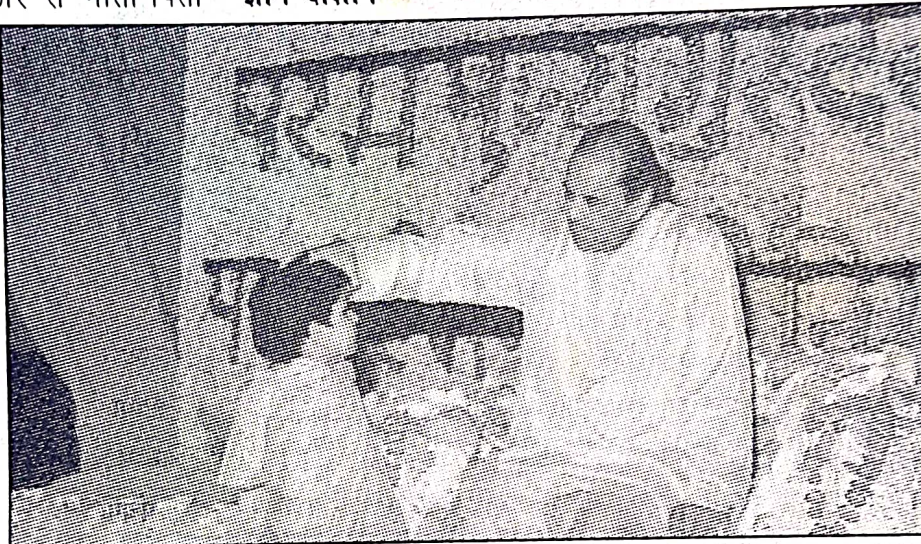
सरस्वती दीक्षा के माध्यम से जहां शिशु में ज्ञान चेतना का जागरण होता है वहीं **ज्ञान दीक्षा** के माध्यम से इस जीवन के तथा पूर्व जन्मों के अनेक मल, दोष, पाप समाप्त होकर प्रखरता आने की ऐसी क्रिया प्रारम्भ होती है जिसके फलस्वरूप शिशु को फिर पग-पग पर बाधाओं एवं अड़चनों का सामना नहीं करना पड़ता।

ऐसे बालक जो किसी मन्दता के कारण तीव्रता से न बढ़ पा रहे हों या जिन्हें चार - पांच वर्ष का हो जाने के बाद भी पर्याप्त चैतन्यता न आ पाई हो अथवा किसी ऐसे दोष के कारण गर्भ में उसका पूर्ण मानसिक विकास न हो पाया हो, उनके लिए तो ऐसे उपाय नितांत आवश्यक हो जाते हैं। यह एक सुस्थापित सत्य है कि बालक का पूर्ण मानसिक विकास नौ माह के पूर्ण गर्भ धारण के पश्चात ही सम्भव हो पाता है। जबकि इसका आजकल प्रतिवाद भी देखने को मिलता है। ऐसी समस्त स्थितियों में जबकि बालक का मानसिक विकास ऐसे कारणों से अवरुद्ध हो जाता है तब दीक्षात्मक उपाय ही सफलता की प्रामाणिक कसौटी सिद्ध होता है।

ऐसी विशेष दीक्षाओं में सद्गुरुदेव जब कृपा कर स्वयं अपने हाथ से बालक की जिह्वा पर गोपनीय बीज मंत्र एक विशेष पद्धति से अंकित करते हैं उसके बाद बालक में एकाएक ज्ञान- प्रतिभा का विस्फोट ही हो जाता है वह किसी भी विषय को मात्र एक बार पढ़ कर ही कण्ठस्थ करने की क्रिया में निष्णात हो जाता है तथा उस विषय पर धारा प्रवाह बोलने की क्षमता भी प्राप्त कर लेता है। एक प्रकार से देखा जाय तो सरस्वती का उसके कण्ठ में वास हो जाता है और →
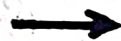
अहोभाव

हमारे पाठक प्रायः अपने पत्रों में पूज्यपाद गुरुदेव के प्रति अपनी मनोभावनाएं व्यक्त करने के क्रम में कोई लघु कविता या काव्यात्मक विवरण भेजते ही रहते हैं। *उनकी इसी प्रतिभा को हमने एक दिशा देने का प्रयास किया है "अहोभाव" के माध्यम से, क्योंकि यह शिष्य या पाठक का अहोभाव ही तो है. . .*

आपको पूज्यपाद गुरुदेव के प्रस्तुत चित्र के आधार पर अपनी भावनाएं काव्य की चार पंक्तियों में भेजनी है और पुरस्कार से भी अधिक आशीर्वाद स्वरूप में **प्रथम** आने पर **एस सीरीज** की छः पुस्तकों का सेट, **द्वितीय** स्तर पर तीन पुस्तकें अथवा **तृतीय** पुरस्कार के रूप में एक पुस्तक का पात्र भी बन जाता है। रचना मौलिक एवं अप्रकाशित तथा अप्रचारित होने का दायित्व आप को प्रविष्टि के साथ एक पन्ने पर घोषित करना होगा।

अपनी प्रविष्टि इस प्रकार प्रेषित करें --

सम्पर्क : अहोभाव (२६), गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,फोन-०११-७१८२२४८

परिणाम : अहोभाव (२४)

माह **मार्च** के अंक में प्रकाशित **अहोभाव(प्रविष्टि संख्या २४)** के प्रति पाठकों का उत्साह प्रशंसा योग्य रहा अनेक पाठकों ने अपनी मनोभावनाएं अत्यन्त सुन्दर शब्दों में छन्द बद्ध कर हमें प्रेषित की। भावनाओं की दृष्टि से किसी भी पाठक की रचना किसी दूसरे से कम नहीं थी किन्तु शैली, काव्य, कला और शब्दों के उचित चयन के आधार पर जिन्हें सम्पादक मण्डल ने पुरस्कार योग्य घोषित किया उनके नाम हैं –

प्रथम पुरस्कार

"क्या समर्पण करूं, इन शिव और शक्ति को,
क्या अर्पण करूं, सच्चिदानन्द की परम भक्ति को।
चंचल नयनों में जिनके, अपरिमित आशिष के भाव हैं,
वह शिष्य धन्य है, जिनके नारायण का आज अहोभाव है।।

श्रीमती पीयूष लता थवाइन(शिक्षिका)
घरघोड़ा, रायगढ़ (म.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

सतत चिन्तनीयम् अहोभाव नित्यम्
महेशं भवानि युतं तत्स्वरूपम्
स सिद्धाश्रमाधीशरुपं मुनीशम्
मया चिन्तनीयम् गुरोर्सावानित्यम्
मया चिन्तनीयम् अहोभाव नित्यम्।

श्री मोहन लाल उपाध्याय
नौहझील, मथुरा (उ.प्र.)

तृतीय पुरस्कार : **श्री एस. आर. मचली, ग्राम-पो०- ओरछा, अबूझमाड़, बस्तर, (म.प्र.)**

समस्त विजेताओं के पुरस्कार प्रेषित किए जा रहे हैं।
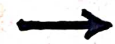
→
सरस्वती उसके जीवन में पूर्ण कृपालू हो जाती है। मां भगवती सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त शिशु आगे चलकर धन, मान, सम्मान सभी कुछ प्राप्त करने का अधिकारी बन ही जाता है। **विगत वर्ष में अनेक अभिभावकों ने अपनी सन्तानों को सरस्वती दीक्षा व ज्ञान दीक्षा दिलवायी और उसके सफल परिणामों से अब हमको सूचित भी कर रहे हैं।** ऐसे समस्त बालक बुद्धि प्रतिभा से सम्पन्न होने के साथ - साथ निरोगिता की प्राप्ति करने में भी सफल रहे हैं क्योंकि जिस बीज मंत्र का समाहिती- करण उसके शरीर में कराया जाता है वह जीवन में सभी प्रकार के दुर्भाग्यों को समाप्त करने में सहायक होता है।

इस प्रकार की गोपनीय क्रिया जो वास्तव में तिब्बत के लामाओं की गुह्य पद्धति है, को दीक्षा के माध्यम से प्रदान करना पूज्य गुरुदेव की विशेष कृपा है। ऐसे समस्त दीक्षा प्राप्त करने वाले बालकों के सर्वांगीण विकास एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह भी निश्चित किया गया है कि उन्हें इन दीक्षाओं के साथ - साथ संस्था द्वारा **निःशुल्क यज्ञोपवित संस्कार** प्रदान किया जायेगा। दीक्षा के अवसर पर ही संस्था की ओर से स्वामी जी ऐसे समस्त बालकों व बालिकाओं का उपनयन संस्कार (यज्ञोपवित) पूर्ण शास्त्रोक्त विधान से सम्पन्न करेंगे। दीक्षा के अतिरिक्त ऐसे समस्त बालक - बालिकाओं को जिनकी आयु छः से बारह वर्ष के मध्य है संस्था द्वारा निःशुल्क यज्ञोपवित संस्कार से भूषित करने की योजना के अन्तर्गत सैकड़ों बालक - बालिकाएं संस्कारित होते हुए उस जीवन शैली को अपना चुके हैं जो पूर्ण पवित्रता, तेजस्विता एवं निर्मलता के साथ प्रखर, ज्ञानवान बनाने की ओर ले जाने वाली है।

हम जायेंगे उस दूर देस. . . .
हम जायेंगे उस दूर देस. . . .
हम जायेंगे उस दूर देस. . . .

भोर का उजाला नहीं आया था पर उस छोटे पक्षी ने चिहुंक-चिहुंक कर न जाने किससे पूछा कि आज हम जाऐंगे किस देस . . . तुरन्त दूसरे अनजान कोने से गूंजती हुई आवाज आयी . . . आज हम जायेंगे उस दूर देस, आज हम जायेंगे उस दूर देस! बस इतने से ही सारा अंधेरा मिट गया, प्रातः वंदना हो गयी और वह वंदना ईश्वर के कानों तक भी पहुंच गयी।

देखते ही देखते चूं-चूं, चीं-चीं, चिहुंक और टिहुंक की घंटियां सूने जंगल में बज उठीं जो मन्दिर में बजने वाली घंटियों से भी अधिक पवित्र और मधुर बनकर सारे हृदय पर खिलने लगी, खनक और रुनझुन से गुंजाने लगी सारे वन प्रान्तर को। रात अपनी काली चादर समेट कर जाने को हो गयी और सूरज दौड़ा चला आया एक उत्सव देखने।

ईश्वर ऐसी ही वन्दना से रीझते हैं, देवता ऐसी ही घंटियों पर पधारते हैं क्योंकि उसमें किसी ने जीवन का कोई गीत गाया है कोई दूर देस चलने को गुनगुनाया है, छोटे डैने ही सही पर उन्हें हवा में तौल लेने को, सारे तूफानों से लड़ लेने के हौसले को लेकर आ खड़ा हुआ है, और ऐसा बस आज और कल नहीं, हर एक दिन ही तो।

चलेंगे गांव-गांव और उड़ेंगे डगर-डगर पंख पसार बस दो-दो दानों के लिये ही नहीं, बस जैसे-तैसे अपना पेट भरने के लिये नहीं, जीवन के गीत गाने के लिये, अनजानी से अनजानी जगह जाकर भी गुनगुनाने के लिये, पंखों को फड़फड़ाकर जीवन पर छाई धूल झाड़ देने के लिये और अकेले नहीं, बस दो-चार मिलकर ही नहीं, झुंड के झुंड बांहो में बांहें डाले, तैरते आसमानों में सपनों से, अलग-अलग स्वर में गाते लेकिन मिलकर एक संगीत गुंजाते, अपने सुरों से रंगो को बिखेरते, अपने नन्हें पंखों से रंग छलकाते और ऊपर उड़ते हुये धरा पर उन रंगों को छिड़कते हुए।

और देखो फिर भी कोई नारा नहीं, कोई भाई-चारे को संदेश नहीं और न बड़े बोल क्योंकि जो कहना है वह तो गुनगुना कर ही कहा जा सकेगा, और दिलों में उतरेगा भी तो गुनगुनाहटों से क्योंकि ये प्राणों के बोल है, ये नन्हें परिन्दे जो कुछ भी गा रहे हैं वही तो प्राणों का संगीत है, जो हौले से संकेत बनकर हमारे प्राणों को छू रहा है।

ये विश्व बन्धुत्व नहीं जानते, बन्धुत्व तो वहां होता जहां दो होते, इनके देस में 'दो' जैसी कोई बात ही नहीं इसी से ये अपनी बात को कहना - सुनना भी नहीं जानते, ये तो गुनगुनाना जानते हैं बिखेरना जानते है और बस यूं ही उड़ते-गाते फिरते रहना जानते है, इनका कोई एक ही ठिकाना नहीं, सभी लोग इनके अपने है, सभी जगह इनकी अपनी है। ये खुद भी जीना जानते है और वही कुछ कहना चाहते है, क्योंकि ये जीवन में रचे-पचे है, एक-एक पल पकड़ कर पता नहीं कहाँ अपनी सुध-बुध बिसार बैठे है। ये नन्हें पक्षी बस आज का जीवन जी लेने के लिये ही भोर में रच - पच गये हैं, और जब शाम आएगी

तो यूं ही शाम के रंगो में घुल-मिल जायेंगे, हाथों में हाथ डाले गीत गाते हल्की परछाई ओढ़े उस सुरमई आसमान के साए से लौटकर वापस आ जायेंगे। गीत गाकर सुबह गये और गीत गाकर ही वापस आयेंगे। भोर इनके लिये उत्सव थी तो सांझ भी उत्सव है, क्योंकि प्रकृति ही इनका डेरा-बसेरा-गीत और संगीत है, ये सब उस देश के वासी है जो जाति वर्ण कुल से नहीं बंधा है बंधा है तो बस सितार की तारों से, गुनगुनाने के लिये, दूसरों को कुछ सुनाने के लिये, छोटे ही सही लेकिन मीठे कंठों से रस बरसाने के लिये रस बरसाना ही इनका जो धरम है, वही इनके देस की पूजा पद्धति है।

जो रस बरसाने के लिये जनमते है वे यूं ही होते हैं और ऐसे ही अलग-अलग मीठे कंठों से निकले बोल मिलकर संगीत बनते हैं, रिम-झिम फुहार बनते है। बरसात यूं ही कई बूंदों से मिलकर ही तो आती है, मेघ एक ही तो होता है लेकिन बरसता है तो कितनी नन्हीं-नन्हीं बूंदों में बंटकर, और सारी मानवता भीग जाती है।

सच कहूं ये नन्हें पक्षी प्रार्थना भी नहीं करते, इन्हें ईश्वर का पता भी नहीं है। लेकिन जीवन के प्रति इनका आग्रह, भोर को देखकर इनका गुनगुनाना, दूर-दूर तक उड़ जाना, कड़ी मेहनत करना-मिलकर संगीत बन जाता है, गुंजरण कहलाने लगता है, प्रार्थना की पहली पंक्ति बन जाता है . . . मूक प्रार्थना जो जाकर ईश्वर के चित्त से मिलती है और लौटकर कोई रिम-झिम फुहार हो जाती है।

जो रस बरसाने के लिये ही जन्म लेते हैं वे सभी 'उस देस' के ही वासी होते है। उन्मुक्त, निर्द्वन्द्व और खो जाने के लिये तैयार, क्योंकि न तो संगीत ही बंध सकता है और न उसकी खोती हुई गूंज- जिसको जाकर शून्य में विलीन हो ही जाना है। दादू, मीरा, कबीर, रैदास और ऐसे कई पक्षी 'उसी देस' से आये, गुनगुनाये और लौट गये क्योंकि वे जिस दूर देस से आये थे, जहां से गुनगुनाहट लाये थे वह सबद का देस है, जहां देह का मिलन नहीं प्राणों का मिलन होता है और नित्य होता ही रहता है, प्राणों की टकराहट से ही वहां गीत जनमते है जो इस दुनियां में नहीं होता है और तब वे सांझ होते-होते अपनी उसी डाली पर 'उसी देस' में वापस लौट जाते हैं।

. . . एक रात बीती और फिर कुछ नन्हें पक्षियों ने आकर सुबह को जगा दिया, एक युग बीता और किसी ने सुबह-सुबह आकर हवाओं को महका दिया, लेकिन बस एक दिनभर के लिये! दिन भी तो उन्हीं से पैदा हुआ, सूरज भी तो उन्हीं का गीत सुनने के लिये उगा, धीमे-धीमे चला और क्या पता उन पक्षियों के जाने से ही फिर उसका मन डूब गया हो, क्या पता!

अब यह जीवन की दोपहर है सूरज अपनी प्रखरता पर है लेकिन जब प्रखरता प्रबल हो जाय तब समझ लेना चाहिये कि अब सांझ की यात्रा शुरू होगी, अब पंख-पसार कर वापस लौटने की तैयारियां होने लगेंगी और धीमे- धीमे भोर के आते हुये गीत सांझ के जाते हुये गीत होने लगेंगे। जब हवा कुछ थम गई और सूरज पीला पड़ गया तब जमीन से उठती हुई धूल ने उदासी को छुपाने के लिये एक कोशिश करी, चाँद ने कुछ आगे बढ़कर एक रंग छेड़ा और दिन के उत्सव का खालीपन अपने रंग से भरना चाहा। सितारों ने कुछ झिलमिला कर रात की उस अंधेरी नदी में कुछ लहरे पैदा करनी चाही लेकिन दिन का जो उत्सव था जो संगीत था, गुनगुनाहटो का, वह नहीं पैदा हो सका क्योंकि वह संगीत तो बिखेरा था प्राणों ने, जीते-जागते नन्हें परिंदों ने जो जानते थे कि उनका कंठ छोटा है फिर भी कुछ नृत्य कर कुछ परो को तौल कर जैसे भी हो एक उत्सव पैदा करना चाहा।

यह उत्सव पर थमेगा नहीं उत्सव तो चलते ही रहेंगे। यूं ही रातें भी आयेंगी, यूं ही भोर होगी लेकिन रात कहीं ज्यादा घनी न हो जाय, कहीं ज्यादा न लम्बी हो जाय और कहीं सूनी न हो जाय इसलिए हो सके तो तुम भी अपने पंख-पसार लो, हो सके तो साथ चलने की तैयारी कर लो। नन्हें पक्षी आये थे गीत सुनाने के लिये तो तुम्हें बुलाने के लिये भी, कि चलो उस देस जहां पर बसेरा ही डालियों पर और फिर से सुबह की प्रतीक्षा हो।

अब तुम्हारी ये धरा तो रात की कालिख से भी ज्यादा भयावह होती जा रही है, नकली रंगों से और भी फीकी होती जा रही है, चीखते संगीत से और भी गुमसुम हो गई है जहां तुम्हारी मुस्कराहटें, तुम्हारे ही अन्तस को मथ कर रख दे रही है।

तो आओ चलें उस देस जहां प्राणों का रंग हो, अपनेपन का संगीत हो और दो घड़ी मौन रहकर कुछ कहने-सुनने की मोहलत हो, तभी तो किसी नये अनोखे गीत की रचना होगी, किसी उत्सव का सृजन होगा, जीवन का प्रारम्भ होगा, फिर से अंधेरा कुछ कम पड़ेगा और हम तुम चिंहुक पूछेंगे . . . आज हम जायेंगे किस देस, आज हम जाएंगे किस देश? आज हम जायेंगे उस दूर देस!

यही तो उत्सव है!

गुरु पूर्णिमा

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायु
र्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे।।

"जो न पृथ्वी है, न जल है, न अग्नि है, न वायु है और न आकाश है। जो न तन्द्रा है, न निन्द्रा है, न ग्रीष्म है और न शीत है तथा जिनका न कोई देश है न वेश है, उन मूर्तिहीन त्रिमूर्ति की मैं स्तुति करता हूं।"

भगवान शिव के ही स्वरूप भगवत्पाद आद्यशंकराचार्य से अधिक श्रेष्ठ ढंग से कोई अन्य इस तत्व की व्याख्या कर भी नहीं सकता था, जो शिव तत्व है, जो गुरु तत्व है और जो मानव जीवन का वास्तविक आधार है। ज्ञान की चरम सीमा तक पहुंचकर ब्रह्म का साक्षात्कार कर भगवत्पाद भाव-विभोर होकर स्तुति में केवल इतना ही कह सके। **समस्त भाव व्यक्त करने के बाद भी जो अव्यक्त रह गया, वही तो गुरुतत्व है** और जिसकी ओर भगवत्पाद केवल इंगित करके रह गये क्योंकि स्वयं गुरुपद पर आसीन होने के कारण वे स्पष्टतः कह भी नहीं सकते थे कि 'वह' मूर्तिहीन-त्रिमूर्ति 'मैं' ही हूं। गुरुत्व का, गुरुपद का यथार्थ परिचय किन्तु यही है। परम शांत, निर्विकल्प, निश्चिंत, द्वंद्वों से सर्वथा रहित, निष्प्रपंच और अपने क्रियाशील स्वरूप में भी निरन्तर जीवों का उद्धार करते हुये इसी प्रकार आत्मीय और सरस।

क्योंकि 'गुरुत्व' केवल एक चिन्तन के वशीभूत होकर ही तो उद्भूत होता है, जो अपार करुणा से सम्बन्धित होता है, और जो जीवों के कल्याण मात्र से ही सम्बन्धित होता है, जो भगवान शिव की ही भांति निरन्तर कृपा-वृष्टि करने में समर्थ होता है और उसे किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए वह केवल और केवल 'शिव' ही होता है, अनुग्रहकारी और आत्मीय ही होता है।

भगवान शिव आत्मलीन और आत्मतृप्त होते हुये भी गुरुत्व के मूर्तरूप हैं। जीवन के सभी पक्षों को समेट वे जिस प्रकार से द्वंद्व रहित निजस्वरूप में स्थित हैं वही व्यक्तित्व 'गुरु' का व्यक्तित्व हो सकता है, क्योंकि इसी प्रकार गुरुदेव भी समस्त विश्व को अपने कंठ में समेटे, मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण कर शीतलता की प्रतिमूर्ति बने रहते हैं।

केवल अर्धचन्द्र ही नहीं, वरन् गुरु का स्वरूप तो पूर्ण चन्द्र की ही भांति प्रत्येक स्थिति में अमृत की वर्षा करने में तत्पर और प्रवाहमान रहता है, चाहे वह उनके नेत्रों से बहती अमृत धारा हो अथवा स्मित हास्य में छुपी ममता। **वास्तव में वे प्रतीक रूप में अर्धचन्द्र धारण कर पूर्ण चन्द्र ही हैं। प्रतीक रूप में गंगा धारण कर निरन्तर अपने शिष्यों को निर्मल और उज्ज्वल करने की क्रिया में संलग्न महादेव ही हैं।**

इसी कारणवश गुरुदेव का स्वरूप पूर्ण चन्द्रतुल्य आभा प्रदान करने वाला माना गया है और ऐसे शिवरूपी गुरुदेव के इसी पूर्णत्व का, आह्लाद का जो दिवस विशेष होता है, वह होता है भारतीय तिथि के अनुसार आषाढ़ पूर्णिमा का अवसर, जिसे **'गुरु पूर्णिमा'** की संज्ञा दी गई है। जब गुरुदेव मात्र आत्म स्वरूप में ही नहीं वरन् अपनी पूरी परम्परा के साथ इस धरा पर अवतरित, आलोकित व कृपावान होते हैं। गुरु पूर्णिमा तो ऐसा दिवस विशेष है जब

सम्पूर्ण गुरु परम्परा अपनी दिव्यता, करुणा और ममत्व के साथ इस धरा पर आवाहित होती है। जब पूज्यपाद गुरुदेव स्वयं ही नहीं वरन् **परम गुरुदेव परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी** तथा सिद्धाश्रम के विशिष्टतम महायोगी कपा पूर्वक अपनी दिव्य आभा से सूक्ष्म **बिम्ब अथवा प्रच्छन्न रूप में पधार कर अपने** समस्त शिष्यों एवं प्रशिष्यों को अपना वर और आशीर्वाद प्रदान कर ऐसी चैतन्यता से अभिभूत कर देते हैं जिसकी प्राप्ति तो जीवन में किसी अन्य दिवस पर सम्भव ही नहीं हो सकती, और यह भी निश्चित है कि जब इस प्रकार सम्पूर्ण गुरु-परम्परा अपनी अनुकम्पा के परिणामस्वरूप आवाहित हो, तो वह दिवस विशेष गुरुदेव का अत्यन्त आह्लादकारी दिवस होता है। ऐसे आह्लाद के क्षणों में ही, गुरुदेव की ऐसी शिवमयता के क्षणों में ही तो उनके उस लाभ को प्राप्त किया जा सकता है, उनकी उस कृपा का सान्निध्य ग्रहण किया जा सकता है, जिसे भगवान शिव की औढरदानी स्थिति कहा गया है।

गुरु पूर्णिमा इसी कारण शिष्यों के लिये पूरे वर्ष भर का पर्व कहा गया है, चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति का दुर्लभ क्षण माना गया है, जीवन में सर्वविध सम्पन्न होने का पर्व कहा गया है। गुरु पूर्णिमा का सीधा सा अर्थ है कि जो व्यक्ति समाज एवं गृहस्थ में है, जो साधनाओं की जटिलताओं में और शास्त्रीय पक्षों में उलझने की आवश्यकता नहीं समझता है अथवा जीवन की व्यस्तताओं के कारण जिसके समक्ष ऐसा अवसर नहीं होता है, वह भी अपने सामाजिक कर्त्तव्यों को पूर्ण करता हुआ अपने जीवन को पूर्णता दे सके। **यह पूर्णता तभी प्राप्त हो सकती है जब जीवन में चारों पुरुषार्थ हो क्योंकि जब तक जीवन में चारों पुरुषार्थ नहीं होंगे तब तक जीवन में चैतन्यता आ भी नहीं सकेगी।** धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष— ये जीवन के चार स्तम्भ हैं, इन्हीं से जीवन का विस्तार सन्तुलित होता है, किन्तु इन्हें किस प्रकार हस्तगत किया जाए, किस प्रकार सन्तुलित किया जाए कि कोई एक पक्ष आवश्यकता से अधिक बढ़कर असन्तुलन न पैदा कर दे? इसका रहस्य केवल गुरु-चरणों का आश्रय लेकर ही अपने जीवन में उतारा जा सकता है। इन चारों पुरुषार्थों को केवल प्राप्त करने का ही नहीं वरन् जीवन में आत्मसात कर लेने का पर्व ही तो गुरु पूर्णिमा है।

जो जीवन में सम्पूर्ण कलाओं से युक्त हो वही 'पूर्णिमा' है और जब जीवन भी समस्त कलाओं से युक्त हो, तब उसकी 'पूर्णिमा' है, षोडश कला युक्त जीवन का तात्पर्य भी यही है। **जीवन में चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति करना ही जीवन का वास्तविक लक्ष्य है, यही समस्त शास्त्रों का निचोड़ है और इस वर्ष पानीपत में सम्पन्न हो रही चार दिवसीय गुरु पूर्णिमा का गूढ़ रहस्य भी यही है,** कि जब साधक प्रत्येक दिन एक पुरुषार्थ की प्राप्ति कर, उसे क्रमबद्ध ढंग से अपने जीवन में उतार सकेगा।

जो वास्तव में साधक है, शिष्य है और जीवन में आगे बढ़कर इस रूप में सक्रिय है कि जीवन का यथार्थ सुख और लक्ष्य प्राप्त करना ही है, वे ही समझ सकते हैं कि ऐसे दिवस का क्या तात्पर्य होता है, क्या चैतन्यता होती है और किस प्रकार अपने-आप को एक सामान्य जीव की कोटि में न रखते हुए साक्षात् ब्रह्मतुल्य बनकर जीवन की उन सभी सम्पदाओं, ऐश्वर्य और उच्चताओं को प्राप्त किया जा सकता है, जिसकी प्राप्ति के लिये ही व्यक्ति गुरु की शरण में आता है, उनसे दीक्षित होता है, शिष्य बनने की क्रिया करता है और समाज के लाखों-करोड़ों लोगों से अलग हटकर जीवन जीने की एक नई शैली अपनाता है। छल-प्रपंच से हटकर, गुरु-चरणों में बैठकर उस आनन्द और दिव्यता की अनुभूति करता है, जिसकी सामान्य जन कल्पना ही नहीं कर सकते हैं।

ऐसे व्यक्ति के जीवन की ही सार्थकता होती है क्योंकि ऐसे व्यक्ति ही फिर आगे बढ़कर जीवन में किसी के लिये सार्थक बन सकते हैं, जिनके स्वयं के आनन्द से और जिनके स्वयं के प्रकाश से तथा जिनकी पूर्णिमा तुल्य आभा एवं निर्मलता से अनगिनत लोग प्रभावित व तृप्त होते हैं, यही गुरु पूर्णिमा की जीवन में आवश्यकता है और यही जीवन में गुरु पूर्णिमा का अर्थ है कि साधक अपने-आप को भीड़ से हटाकर, अपने-आप को प्रखर व्यक्तित्व बनाकर अपने जीवन की चैतन्यता को खुद अपने लिए भी और दूसरे के लिए भी सुस्पष्ट करता है।

इस वर्ष गुरु पूर्णिमा तो और भी अधिक महत्वपूर्ण, आवश्यक और अनिवार्य हो गई है क्योंकि **यह सम्पूर्ण वर्ष ही विशेष है।** यह पूज्यपाद गुरुदेव की षष्ठिपूर्ति का वर्ष है, हीरक जयन्ती का पावन पर्व है और 'उत्सव वर्ष' की संज्ञा से विभूषित वर्ष है। कुछ माह पूर्व समस्त भारत के शिष्यों और विदेश में भी रह रहे शिष्यों ने एक स्वर से २१ अप्रैल के अवसर पर प्रयाग में यह संकल्प लिया था कि वे सभी मिलकर न केवल इस गुरु पूर्णिमा को भव्य स्वरूप प्रदान करेंगे वरन् अपने प्रयासों से स्पष्ट कर देंगे कि वे उन सभी स्थितियों को प्राप्त करने की पात्रता रखते हैं, जिसकी भाव-भूमि पूज्य गुरुदेव के मानस में है।

शिष्यों के पक्ष से भी अब ऐसा कुछ दिखने लग गया है, और सही कहा जाए तो यह असम्भव है ही नहीं, क्योंकि **जिस प्रकार गुरु जन्मोत्सव के अवसर पर सारे देश के साधकों ने सभी भेदभाव भुलाकर, प्रान्त ओर क्षेत्र की सीमाओं को तोड़कर अपने-आप को प्रस्तुत किया, वह सम्भवतः गुरु पूर्णिमा के अवसर पर जो कुछ 'अलौकिक' घटेगा उसकी प्रस्तावना ही था।** पूज्यपाद गुरुदेव ने षष्ठिपूर्ति के इस वर्ष को एक परिवर्तनकारी क्षण घोषित किया है और ठीक ऐसे ही परिवर्तन के क्षण शिष्यों व साधकों के जीवन में घटित होने

के दिवस आ गए हैं क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव अपने व्यक्तित्व को अपने शिष्यों के व्यक्तित्व से अलग रखकर सार्थकता नहीं मानते। यह वर्ष विशेष पूज्यपाद गुरुदेव की हीरक जयन्ती समारोह से भी अधिक शिष्यों के सामारोह का वर्ष है और गुरु पूर्णिमा के चार दिन इसी समारोह का प्रकट स्वरूप प्रस्तुत करेंगे।

गुरु सान्निध्य में जो क्षण बीतेंगे वे काल के मापदंड पर नहीं नापे जा सकते, ये चार दिन भौतिक दृष्टि से **चार दिन नहीं अपितु चार युग होंगे, चार कल्प होंगे, जीवन के चार चरण होंगे,** जबकि समस्त भारत से आये शिष्य, साधक और साधिकाएं परस्पर मिल-जुल कर ऐसा वातावरण प्रस्तुत करेंगे, जो सही अर्थों में इनकी विशालता को प्रकट करने वाला होगा। जहां इस प्रकार प्रेम हो एक-दूसरे को देखकर दौड़कर मिलने की भावना हो, दूसरे के प्रति अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने की कामना हो, परस्पर मिल-जुल कर गुरुदेव के स्वप्न को पूरा कर देने की भावना हो, जाति, प्रांत, क्षेत्र, छल, प्रपंच, राजनीति सभी से कटकर केवल उस प्रेम के प्रवाह में निमग्न होने की धारणा हो, जो निर्मल प्रवाह पूज्य गुरुदेव द्वारा इस धरा पर प्रवाहित किया गया है वहीं तो 'संस्था' है, 'परिवार' है और शिष्यता है। इन्हीं जीवित भावनाओं से ही कुछ निर्मित होता है। विविध संस्कृतियां, विविध भाषाएं, विभिन्न जीवन शैलियां, प्रत्येक जीवन शैली में पर्याप्त भेद, किन्तु फिर भी प्रेम की एक अदृश्य डोर से सभी परस्पर बंधे हुये, सभी एक साथ एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए, एक ही भावना और चिन्तन से अनुप्राणित होते हुये- यही गुरु पूर्णिमा का अर्थ है। क्योंकि जैसा कि पूज्य गुरुदेव ने कहा था व्यक्ति के सुख अलग-अलग हो सकते हैं किन्तु आनन्द एक ही होता है और जहां इस प्रकार के आनन्द में भाव-विभोर हजारों साधक-साधिकाएं एकत्र होंगी, वहां उनके मूक अधरों से फूटता संगीत, उनकी देह से तरंगित होती नृत्य लहरियाँ मिलकर ही सही अर्थों में उत्सव की भाव-भूमि प्रस्तुत करेंगी। रंगीन कपड़ों से उत्सव नहीं होता, झंड़ियां लगाने, वंदनवार टांगने से भी उत्सव नहीं होता और न ही चीख-चीख कर भजन गाने से उत्सव सम्पन्न होता है। उत्सव एक अलग धारणा है, जो पूज्यपाद गुरुदेव ने हमारे-आपके बीच में प्रस्तुत की है और इसी कारणवश जहां अन्य संस्थाएं सामान्य चहल-पहल मनाकर रह जाती हैं, जिनके सदस्य थोड़ा सा गा-बजाकर अपने-अपने घर चले जाते हैं, वहीं **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** के सदस्य एक मिलन के बाद दूसरे मिलन की तैयारी में व्यस्त हो जाते हैं। उनका उत्सव, उनका आनन्द जीवित इकाई मनुष्य से होता है।

जहां ऐसे आह्लाद के क्षण होते हैं, जहां ऐसी शालीनता होती है, वहीं पूज्य गुरुदेव की शिवमयता भी प्रकट होकर पुण्यसलिला गंगा की भांति कलकल कर बहने लगती है क्योंकि शिव का वास तो आनन्द में ही है। हमारा-आपका कर्त्तव्य हो जाता है कि अपनी भावना, अपने चिन्तन से ऐसा ही कुछ निर्मित करें, जिसमें शिवरूपी गुरु का वास हो सके। जहां शिवरूपी गुरु का वास है, वहीं समस्त सिद्धियां भी होंगी।

वहीं जीवन की श्रेयता होगी और वहीं जीवन का सुख है, वैभव है, आनन्द है। वैराग्य, करुणा, ममता सब कुछ वहीं है क्योंकि भगवान शिव तो सब कुछ समेटे हैं। जीवन का कोई भी पक्ष उनसे अछूता है ही नहीं। वे 'मूर्तिहीन' हैं अर्थात् सबसे परे हैं और त्रिमूर्ति भी हैं अर्थात् सब कुछ समेटे हैं।

गुरु तत्व दीक्षायें हों, प्रत्यक्ष सिद्धियों का स्पष्टीकरण हो, लक्ष्मी प्राप्ति की गोपनीय विधायें हों अथवा सिद्धाश्रम गमन की भाव-भूमियां सभी कुछ इस शिविर में पहली बार पूर्णता के साथ खुलकर स्पष्ट किया जायेगा क्योंकि अब क्षण अत्यन्त विरल रह गए हैं। अब वे क्षण नहीं रह गए हैं कि ऊहापोह, निश्चय और अनिश्चय के बीच में जीवन को जिया जाए। एक प्रकार से अब तक की सारी यात्रा इसी पर्व की यात्रा थी। जिस प्रकार एक-एक कला कर चांद बढ़ता है और अंतिम दिन पूर्णता को प्राप्त कर लेता है, इसी प्रकार एक-एक कला बढ़ते हुए अनेक साधनाओं, शिविरों, दीक्षाओं से होकर गुजरते हुए यह पूर्णिमा का ही उत्सव है। वे धन्य हैं जो इस बार की गुरु पूर्णिमा में भाग ले रहे हैं।

जिन्होंने पिछले वर्ष की गुरु पूर्णिमा पर पानीपत में भाग लिया, तीव्र प्रयोगों के रोमांच व आह्वान प्रयोगों की गंभीरता को समझा। आध्यात्मिकता की उच्चतम भाव-भूमि से
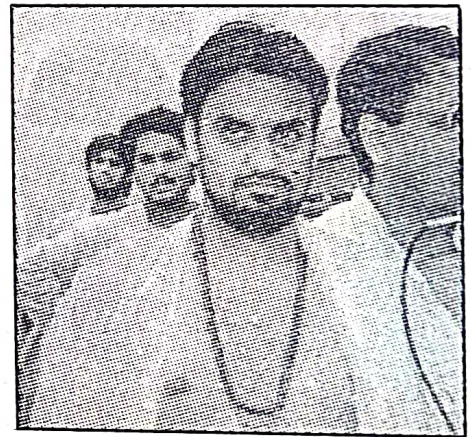
साक्षात् किया तथा मध्य रात्रि के दुर्लभ क्षणों में लक्ष्मी प्रत्यक्ष प्रयोग किया, वे सभी एक वर्ष बीतने के बाद भी उसकी पावनता अपनी स्मृति से विलुप्त नहीं कर सके हैं। **यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि ठीक उसी स्थान पानीपत पर हम सभी पुनः इस वर्ष दिनांक १९, २०, २१ एवं २२ जुलाई के मध्य एकत्र होकर जहां आगामी चरण पूर्ण करेंगे, वहीं पिछले वर्ष की पावनता की स्मृतियों से भी भाव-विभोर रहेंगे।**

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

कश्मीर में स्थिति एक प्रकार से निर्णायक दौर में पहुंच जाएगी। जिस प्रकार से पंजाब में कठोर कदम उठाकर आतंकवाद का समापन किया गया उसी प्रकार कश्मीर के संदर्भ में भी शीर्षस्थ पदाधिकारियों के पद-परिवर्तन के द्वारा केन्द्र सरकार ठोस कदम उठाने को विवश होगी जिसकी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक आलोचना होगी किन्तु सम्पूर्ण रूप से भारत का ही वर्चस्व स्थापित रहेगा। दूसरी ओर **साम्प्रदायिक तनाव शेष भारत में हावी रहेगा** तथा जन आंदोलनों की भी बहुलता रहेगी। पश्चिम बंगाल में विशेष रूप से प्रदर्शनों व राजनीतिक दलों के टकराव का वातावरण रहेगा। मार्क्सवादी सरकार धीमे-धीमे अपना जनाधार खोती जाएगी। सिक्किम में पुनः तनाव उभरेगा। राजस्थान सीमावर्ती घटनाओं के कारण अशांत रहेगा। उत्तर प्रदेश में जातीय संघर्ष जारी रहेंगे तथा श्री मुलायम सिंह की सरकार अपने ही अन्तर्विरोधों के कारण संकट पूर्ण स्थिति में जा फंसेगी। उड़ीसा में राजनीतिक परिवर्तन आने की प्रवल संभावना है। केन्द्र के स्तर पर स्थिति अस्पष्ट एवं खींचतान से भरी ही वनी रहेगी। मध्यप्रदेश में खनन के क्षेत्र में नयी संभावनाओं का पता चलेगा। तमिलनाडु सरकार एवं लिट्टे सम्बन्धों की बात तूल पकड़ेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह माह उथल-पुथल से भरा रहेगा। विश्व एक बार पुनः रंगभेदी नीतियों की विश्वव्यापी बहस में उलझ जाएगा। दक्षिणी अफ्रीका से प्रारम्भ हुआ रंगभेदी विवाद अमेरिका, यूरोप एवं जर्मनी तक भी फैलेगा। रुढ़िवादी एवं अनुदार शक्तियों का विश्व में वर्चस्व बढ़ेगा तथा आगामी समय के लिये अत्यंत अशुभ संकेत है। जापान के शासन में परम्परावादी पद्धति के स्थान पर नये परिवर्तन आयेंगे किन्तु उसका भारत के प्रति रुख विशेष रूप से सकारात्मक बना रहेगा। नेपाल में प्रदर्शन व हिंसक घटनाओं की प्रबलता रहेगी।

शेयर मार्केट

शेयर मार्केट में नये इश्यु का वर्चस्व रहेगा। ग्राहक परम्परागत शेयर की अपेक्षा इनकी ओर अधिक रुचि दिखाएंगे एवं इनके आकर्षक प्रस्तावों को तीव्रता से स्वीकार करेंगे। निर्यात से सम्बन्धित कम्पनियों के इश्यु तेजी से लोकप्रिय होंगे किन्तु वे आगामी दो वर्ष तक के लिये ही लाभप्रद कहे जा सकते हैं। ऐसे शेयरों में **शरद सी फूड्स** का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। दूसरे स्थान पर एग्रो केमिकल्स एवं कृषि उत्पादों पर आधारित शेयर भी लोकप्रिय होंगे जिसमें **माया एग्रो** अग्रणी रहेगी। फोनिक्स इन्टरनेशनल लि०, मिल्क स्पेशियलिटीज लि०, गांधीनगर लीजिंग एण्ड फाइनेंस लि० भी लोकप्रिय नये शेयर रहेंगे तथा भविष्य में भी अच्छी स्थिति प्राप्त कर मनोनुकूल व्यापार देंगे। कुछ नये इश्यु केवल स्थानीय रूप से **किन्तु पर्याप्त लोकप्रिय व लाभप्रद रहेंगे।** भास्कर एग्रो केमिकल्स (हैदराबाद), टी० जी० एफ० मीडिया सिस्टम (मद्रास), मद्रास रिफाइनरी, सेंचुरी प्रोटीन्स लि० (दिल्ली) इसी श्रेणी के इश्यु हैं।

प्रतिष्ठित शेयर मार्केट में इस माह इंडियन रेयन, इंडियन ऑक्सीजन, टिस्को, ऊषा मार्टिन, जुआरी एग्रो केमिकल्स, एन० ई० पी० सी० माइकॉन, रिलायंस, एस्सार गुजरात बेहद अच्छा व्यवसाय देंगे जब कि होटल व्यवसाय के लिये यह माह अत्यन्त निराशाजनक ही रहेगा। **इसी प्रकार इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों के लिये भी यह माह सामान्य से बस कुछ ही श्रेष्ठ रहेगा।** जैसा कि प्रारम्भ में कहा अब शेयर होल्डर्स की रुचि उन शेयरों में अधिक बढ़ेगी जिनका आधार उत्पाद स्वदेशी हो तथा जिनकी एक निश्चित विदेशी मार्केट सदैव उपलब्ध रहती ही हो। नेस्ले, कॉलगेट, हिन्दुस्तान लीवर, जे० सी० टी० ग्रुप के लिये यह माह मध्यम ही रहेगा। ऑटो उद्योग में हल्का सा चढ़ाव आएगा जिसमें अशोक लेलैंड की स्थिति ही सर्वोपरि रहेगी।

ज्योतिषीय दृष्टि से पाठकों को यह सलाह दी जा सकती है कि वे घरेलू उपकरणों, कॉस्मेटिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, आटो एवं निर्माण व्यवसाय से सम्बन्धित शेयर में इस माह रुचि न लें। निर्यात पर आधारित उद्योगों को अपने व्यवसाय का आधार बनाना लाभप्रद रहेगा। आगामी दृष्टि से पर्यटन व निर्यात में अत्यधिक सम्भावनाएं है। होटल निर्माण व्यवसाय पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा किन्तु स्थापित होटल व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। **इनवेस्टमेन्ट की योजनायें भी आगामी दृष्टि से बहुत लाभप्रद नहीं होगी।** बम्बई के उद्योग जगत में हताशा समाप्त होगी तथा आगामी समय विघ्न-बाधाओं की दृष्टि से मुक्त ही रहेगा।

अघोर गौरी प्रयोग
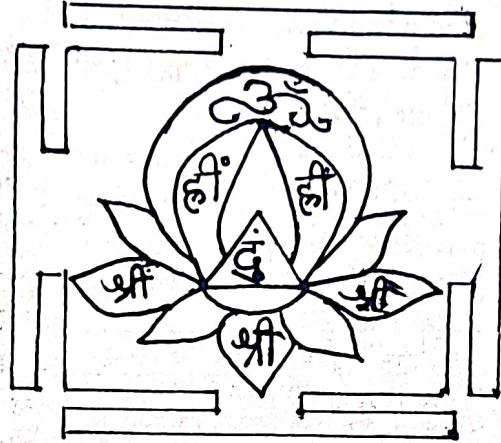
मैं ने पूज्यपाद गुरुदेव **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** से ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के बाद अपने पैतृक नगर में एक ज्योतिषी के रूप में कार्य प्रारम्भ किया था। पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त ज्ञान और गोपनीय सूत्रों के कारण मुझे कभी भी किसी भी कुण्डली का अध्ययन करते समय कोई बाधा आती ही नहीं थी। आशीर्वाद स्वरूप पूज्य गुरुदेव ने मुझे पंचागुली साधना व कर्ण पिशाचनी साधना भी सम्पन्न करवा दी थी जिससे कहीं पर अटकने की स्थिति आने पर मैं अपने सामने बैठे व्यक्ति को दूसरे दिन आने के लिए कह कर नित्य रात्रि की साधना में उस का प्रामाणिक हल प्राप्त कर लिया करता था और मेरे कार्य में दिन दूनी रात चौमुनी सफलता मिलने के साथ ही साथ यश, प्रतिष्ठा भी प्राप्त होने लग गयी थी। एक प्रकार से मेरे द्वारा कही सभी बातें अक्षरशः सत्य सिद्ध होने लग गयी थीं। किसी भी व्यक्ति का भविष्य मुझे उसका चेहरा देखते ही शीशे की भांति साफ दिखाई देने लग जाता था। उन्हीं दिनों की बात है कि एक मध्यमवर्गीय परिवार की युवती मेरे कार्यालय में आयी और मुझे सम्मान सहित प्रणाम करके चैम्बर के बाहर एक ओर बैठ गई। थोड़ी देर बाद मैंने अवसर आने पर उन्हें संकेत से अपने चैम्बर में आने का संकेत किया किन्तु उसने शालीनता से संकेत द्वारा उत्तर दिया कि वह एकांत में ही मुझसे वार्तालाप करेगी। मैंने कक्ष में बैठे दो तीन अन्य आगंतुकों को विदा करने के बाद उसे अपने चैम्बर में बुलाया और समस्या पूछी। **उसके पास कुण्डली आदि नहीं थी और वह एक क्षण कुछ उदास और मौन रहकर बोली- "पंडित जी क्या मेरे भाग्य में विवाह-योग है भी अथवा नहीं?"** उसके बोलने की उदासी और स्वर में छुपे हुये सूनेपन से मैंने चौंक कर उसकी ओर थोड़ा ध्यान से देखा।

> **"मेरे जीवन में ज्योतिषी के रूप में कार्य करते समय अनेक प्रकार की समस्याएं आयी और मैंने उनका प्रामाणिक उपाय भी प्राप्त किया किन्तु विवाह सम्बन्धी अड़चनों का प्रामाणिक हल मिला तो केवल . . ."**

प्रायः २८-३० वर्ष की आयु, शरीर पर एक साधारण सी सूती साड़ी और सामान्य नाक-नक्श होते हुए भी इस प्रकार की जिसे आकर्षक ही कहा जा सकता था किन्तु उसके रूप-रंग से भी अधिक मुझे जिस बात ने ध्यान देने को विवश किया वह यह थी कि इसके पूर्व कभी भी किसी स्त्री ने अपने विवाह के विषय में मुझसे इस प्रकार सीधे नहीं पूछा था। **उसके स्वर में आ गयी कातरता स्पष्ट कह रही थी कि विवाह उसके लिए एक उत्साह का विषय नहीं वरन् सामाजिक चिंता का विषय है** और सामान्य सी पूछताछ से भी यही सिद्ध हुआ कि प्रायः भरे-पूरे घर की होते हुए भी न जाने क्यों उसके विवाह में लगातार बाधा ही आती जा रही है, कभी-कभी यदि कोई विवाह की बात चलती भी है तो सामान्य से दो-चार चरण के बाद समाप्त हो जाती है तथा धीमे-धीमे उसके परिवार वालों ने अब कहीं भी रिश्ते की बात करना समाप्त ही कर दिया है। मुझे इस बात से कुछ पीड़ा भी पहुंची कि एक स्त्री को इस प्रकार विवश होकर अपने विवाह के लिए स्वयं चिंता करनी पड़ रही है और जरूर उसके साथ कुछ न कुछ ऐसी बात अवश्य होगी, उसे घर में तानों से इस प्रकार छेदा जाता होगा अथवा समाज में व्यंग बाणों का इस प्रकार से सामना करना पड़ता होगा कि वह विवश होकर मुझ जैसे एक अपरिचित व्यक्ति से अपने हृदय की व्यथा कहने को निकल पड़ी है, **अन्यथा कोई भी स्त्री, स्त्री-सुलभ लज्जा के कारण अपने विवाह की बात स्वयं नहीं कहती।** विवाह की बात कहते समय उसके चेहरे पर जिस प्रकार की लज्जा की हल्की पर्त आ जाती है, उसका नाममात्र भी मेरे सामने बैठी युवती के चेहरे पर नहीं था। इसके विपरीत उसके चेहरे पर एक प्रकार की रूढ़ता और चिड़चिड़ापन उतर आया था। स्पष्ट लग रहा था कि निरन्तर इसी मनोदशा में रहते-२ उसके चेहरे की स्वाभाविक कोमलता तथा सौम्यता भी चली गयी है। वह असमय ही बूढ़ी दिखायी दे रही थी और चेहरे पर उतर आयी उदासी के साथ-साथ आंखों के नीचे के काले गड्ढे रही-सही कसर पूरी कर दे रहे थे।

मैंने प्रश्न कुण्डली के अनुसार उसका प्रश्न विचारित किया किन्तु उत्तर नकारात्मक मिला। मैंने फिर उसको दूसरे दिन आने के लिए कह अपनी नित्य साधना में सबसे पहले उसके प्रश्न पर ही विचार किया और यह जान कर कुछ स्तब्ध रह गया कि उसके भाग्य में तो विवाह-योग है ही नहीं। **मैंने उसका पूर्व जीवन देखा और उससे वे सूत्र मिले जिनके कारण उसके विवाह में बाधाएं आ रही थीं** और भविष्य साधना के माध्यम से भी यही पाया, किन्तु मेरे मन में एक हठ ठन चुका था।

भूतकालीन घटनाओं को देखने के बाद यद्यपि मेरे मन में संदेह नहीं रह गया था किन्तु साथ ही साथ यह भी विचार आने लगा कि यदि पूर्व जन्म के कारण को समाप्त न किया जा सके उनका प्रभाव इस वर्तमान जीवन तक भोगना पड़े तो क्या इससे व्यक्ति को जीवन में कभी सम्हलने और संवारने का अवसर मिल सकता है। यदि ऐसा नहीं है तो साधना की उपयोगिता क्या है? फिर तो जो भाग्य में है वह होगा ही और मैं एक ज्योतिषी के रूप में उनका भाग्य पढ़कर बताने वाला पुतला मात्र ही हूं, जबकि ज्योतिषी के रूप में मैं अपना केवल इतना ही दायित्व नहीं समझता था।

दूसरे दिन भी वह युवती मेरे कार्यालय आयी किन्तु मैंने उससे विशेष कुछ न कहकर केवल इतना ही कह दिया कि आपकी कुण्डली बनी न होने के कारण मैं कुछ समय बाद ही स्पष्ट रूप से उत्तर दे पाऊंगा। उसने मुझे पन्द्रह दिन बाद मिलने की बात कही जिसे मैंने स्वीकार कर लिया।

इस बीच में मैंने अपने ही नगर में किन्तु नगर से कुछ दूर रह रहे **स्वामी हरिआनन्द जी** से भेंट करने का निश्चय किया। हरिआनन्द जी मुझसे आयु के कुछ बड़े होते हुए भी एक प्रकार से भ्रातृवत् स्नेह ही रखते थे क्योंकि उनके गुरु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव श्रीमाली जी के सम्पर्क में कुछ समय तक रह चुके थे। यूं भी सांसारिक विषयों से इतर विषयों की चर्चा करने हेतु मैं, उनके सुरम्य आश्रम में जब-तब पहुंच ही जाता था किन्तु इस बार मेरी यात्रा का उद्देश्य सर्वथा भिन्न था। मैं उनसे इस बात पर चर्चा करने के उद्देश्य से गया था कि यदि व्यक्ति के प्रारब्ध में कोई घटना या लाभ न हो तो क्या उसे जीवन पर्यन्त

यदि पूर्व-जन्म कृत बाधाओं के कारण अड़चने आती है, तो फिर जो भाग्य में लिखा है वही होगा. . .

फिर साधनाओं का क्या अर्थ है?

. . . साधनाओं से हम इसी प्रारब्ध को भी बदल सकते ही हैं।

उस लाभ से वंचित ही रहना होता है?

स्वामी हरिआनन्द जी ने मेरा सदैव की भांति यथोचित स्वागत-सत्कार किया और बातों ही बातों में हम लोग अध्यात्म की गहन चर्चाओं में खो गए। एकाएक मुझे स्मरण आया कि मैं मूल विषय से तो अलग ही हट रहा हूं और मैंने उनसे अपना मंतव्य स्पष्ट रूप से कहा। स्वामी जी से मेरी प्रारब्ध, पूर्व संचित कर्म, भाग्य, भावितव्य एवं अन्यान्य विषयों पर जो चर्चा हुई वह तो अलग विषय है किन्तु मूल रूप से वे भी इसी बात पर सहमत थे कि **जो कुछ हमारे प्रारब्ध में न हो उसकी प्राप्ति भी साधनात्मक उपायों से सम्भव है** और इसके लिए विशेषकर साबर साधनाओं में प्रभावी व उचित विधान है क्योंकि साबर मंत्रों के रचयिता मूल रूप से विद्रोही व्यक्तित्व रहे और उन्होंने जीवन की विभिन्न विसंगतियों को लेकर उन पर मंत्र रच कर वैदिक मंत्र के ज्ञाताओं को एक प्रकार से चुनौती दी। हरिआनन्द जी यद्यपि स्वयं दूसरे मत के मानने वाले थे किन्तु उनकी साबर व अघोर मंत्रों में भी गहन रुचि थी। प्रसंगवश उन्होंने मुझे मेरी समस्या विशेष का मंत्रात्मक हल तो दिया ही साथ ही प्रयोग रूप में कुछ अन्य मंत्र भी दिए। मैंने उन मंत्रों की प्रयोग विधि तथा उच्चारण भी उनसे समझा तथा लौट कर सम्बन्धित मंत्र उस युवती को पूरी बात स्पष्ट करते हुए, प्रयोग के रूप में करने की सलाह दी। यद्यपि उसे विश्वास नहीं था किन्तु मुझे विश्वास था कि साबर मंत्र कभी भी असफल हो ही नहीं सकते और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। उसने इस मंत्र का प्रयोग प्रारम्भ किया। यह ग्यारह दिनों का प्रयोग था जिसमें प्रतिदिन अघोर गौरी मंत्र के १०८ मंत्र जप करने थे। अपने सामने लाल वस्त्र पर **अघोर गौरी यंत्र** स्थापित कर **हकीक माला** से विशिष्ट मंत्र का जप कर प्रत्येक दिन की मंत्र जप समाप्ति पर एक **गोमती चक्र** यंत्र पर चढ़ा देना था तथा ग्यारह दिनों तक करने के बाद अंतिम दिन सभी गोमती चक्रों को एक साथ सुरक्षित रखकर शेष सामग्री विसर्जित कर देनी थी। इसके अतिरिक्त इस साधना में कोई भी विशेष विधि-विधान अथवा जटिलता नहीं थी। यह विशेष मंत्र था—

मखानो हाथी जद अम्बारी उस पर बैठी कमाल खां की सवारी बैठे चबूतरे पढ़े कुरान हजार काम दुनिया का करे एक काम मेरा कर न करे तो तीन लाख तैतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई

उसने मेरे बताए ढंग से सम्पूर्ण प्रयोग सम्पन्न किया और तब प्रयास पूर्वक एक विशेष स्थान पर विवाह की बात उसके परिवार के सदस्यों ने मेरे अत्यधिक आग्रह पर आरम्भ की। यद्यपि वह परिवार उनकी आर्थिक स्थिति के सामने उनसे कहीं अधिक ऊंचा था और वर के विदेश जाने की बात भी चल रही थी किन्तु वे भी आश्चर्यचकित रह गए जब उन्हें इस विवाह में स्वीकृति ही नहीं मिली विवाह के अगले पन्द्रह दिनों के भीतर ही भीतर वर को विदेश जाने का अवसर भी मिल गया और लगभग छः माह के भीतर वह युवती भी विदेश चली गयी। उसने वे सभी ग्यारह गोमती चक्र सम्भाल कर रखे हैं तथा अपने पूजा स्थान में उन्हें नित्य सौभाग्य सूचक मंगल आभूषण मानकर उनका पूजन करती रहती है। ❀

मुस्लिम तंत्र के ये अचूक टोटके

- **शिशु कष्ट निवारण** रात्रि को सोते समय बच्चे के सिरहाने **जाकुड़ा** का टुकड़ा रख दें, तो बच्चे को कोई कष्ट नहीं होता।
- **प्रसूति कष्ट निवारण** सन्तान उत्पन्न होने में बाधा या कष्ट हो रहा हो तो लाल कपड़े में नमक बांध कर स्त्री के बाईं तरफ रख दिया जाए तो सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है।
- **पथरी दूर करने का प्रयोग** दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में अष्ट धातु की अंगूठी धारण की जाए, तो पथरी का रोग समाप्त हो जाता है।
- **मोटापा दूर करने का प्रयोग** त्रिलौह की अंगूठी यदि मध्यमा उंगली में पहनी जाए, तो धीरे-धीरे मोटापा दूर हो जाता है।
- **स्वप्न दोष पर तंत्र** काले धतूरे की जड़ का टुकड़ा कमर में बांध कर सोने से स्वप्न - दोष की बीमारी दूर हो जाती है।
- **बिच्छू का जहर दूर करने का तंत्र** सत्यानाशी की जड़ बिच्छू के काटने पर लगा दे, तो तुरन्त जहर समाप्त हो जाता है।
- **भूत-प्रेत बाधा दूर करने का तंत्र** नदी के किनारे जो नाव खड़ी हो, उसका एक टुकड़ा रविवार को लाएं व उसका कड़ा बनाकर हाथ में पहने तो भूत-बाधा दूर हो जाती है।
- **व्यापार वृद्धि तंत्र** रविवार के दिन **बिल्ली की नाल** लाकर दुकान में रख दें, तो व्यापार में वृद्धि होती है।
- **मुकदमा विजय तंत्र** यदि **मयूरशिखा** को मुंह में रखकर न्यायालय में जाए तो उसे विजय प्राप्त होती है।
- **पुरुष वशीकरण तंत्र** रविवार को अपनी जूती को तराजू के एक पलड़े में रख दे, और दूसरे पलड़े में उसके बराबर मिठाई तोल दे, और वह मिठाई उसी दिन पुरुष को खिला दे, तो वह पुरुष वश में हो जाता है।
- **स्त्री वशीकरण तंत्र** मोगरे के फूल 'ॐ ह्रीं स्वाहा' से सात बार अभिमन्त्रित कर वह फूल जिस स्त्री को सुंघा दे, वह स्त्री तुरन्त वश में हो जाती है अथवा पुष्य नक्षत्र में धोबी के पांव की मिट्टी लाकर रविवार के दिन सन्ध्या के समय वह मिट्टी स्त्री के मस्तक पर डाले तो वह वश में हो जाती है।
- **अधिकारी वशीकरण तंत्र** पूर्वा फाल्गुनी या मूल नक्षत्र में एक अनार को धूप देकर उस अधिकारी का नाम लेकर उसके दाने दाहिने हाथ में बांध कर अधिकारी के सामने जाएं, तो अधिकारी वशीभूत होता है।
- **मोहनी तंत्र** जो व्यक्ति बाहर गया हुआ है, उसे जल्दी बुलाना हो तो उसका कोई कपड़ा लेकर चरखे पर बांध दे, और चरखेको उल्टा घुमाते हुए कहें, कि अमुक पुरुष या स्त्री तुरन्त घर आए, और इस प्रकार नित्य पन्द्रह मिनट चरखा घुमऐे तो वह पुरुष या स्त्री तुरन्त घर आ जाती है।
- **स्तम्भन तंत्र** फिटकरी के टुकड़े को कमर में बांध कर सम्भोग करने से अधिक समय तक स्तम्भन रहता है।
- **शत्रु परेशान तंत्र** मंगलवार की दोपहर को गधे के बांये पैर की धूल शत्रु के घर में डाल दे, तो शत्रु परेशान होगा और उसके घर में कलह बनी रहेगी।

शिष्यों का पुण्य

गुरु पूर्णिमा पर्व

कोई भी शिष्य या साधक अपनी क्षमता भर इस बात का प्रयास करता ही रहता है कि वह कैसे अधिक से अधिक गुरु साहचर्य में रह सके, गुरुदेव की तुष्टि का हेतु बन सके, उन्हें प्रसन्नता प्रदान कर सके और अपने हृदय की भावनाओं को प्रकट कर सके। वर्ष के अन्य दिनों में वह भले ही दूसरे शिविरों में या अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर गुरु चरणों में न बैठ सके किन्तु गुरुपूर्णिमा के अवसर पर तो आता ही है और इस विषय में किसी भी साधक या शिष्य की मनोभावना पर कोई भी सन्देह नहीं किया जा सकता **आपमें से प्रत्येक के हृदय में अपने गुरु के प्रति असीम प्रेम, असीम लगाव और समर्पित होने की भावना है ही।** जिसको आप जब भी उपस्थित होते हैं अपने आंसुओं के माध्यम से स्पष्ट कर ही देते हैं।

गुरुदेव के समक्ष आवश्यक नहीं कि हर बात बोल कर ही कही जाए वरन वे तो मौन को भी पढ़ लेते हैं। समय और परिस्थितियां बदल जाने के कारण ऐसा हो गया है कि बहुत सी प्राचीन परम्पराओं का पालन हृदय के समस्त बल के बाद भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि सामाजिक जटिलताएं जिस प्रकार दिन- प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं व्यक्ति उनके चक्रव्यूह में फंसकर रह गया है।

इस वर्ष की गुरु पूर्णिमा पानीपत में सम्पन्न होनी निश्चित हुई है जहां विगत वर्ष हजारों साधकों ने पानीपत के महत्वपूर्ण 'सिंगला पैलेस' होटल के विशाल प्रांगण को अपनी उपस्थिति से ठसाठस भर दिया था और जिस प्रकार वहां के व्यवस्थापक श्री सतीश सिंगला ने इसका अनुमान कर एक सप्ताह पूर्व से ही अपने होटल को किसी भी बाह्य अतिथि के लिए वंद कर दिया था, इस बार आयोजन और भी वृहत् विशाल स्तर पर होगा किन्तु यह भी निश्चित है कि कार्य की व्यस्तताओं और पारिवारिक जिम्मेदारिओं के कारण कई गुरु भाई-बहन नहीं सम्मिलित हो पायेंगे साथ ही इस एक वर्ष में जो अनेक नए सदस्य **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** के अंग बने हैं, वे भी इसमें आने के लिए आतुर रहेंगे।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर देश के कोने - कोने से साधक दौड़ कर गुरु चरणों में समर्पित होने के लिए आतुर रहते ही हैं और महीनों पहले से उत्सव स्थान के विषय में जानने की जिज्ञासा से भरे अपने उत्साह को पत्रों के माध्यम से स्पष्ट करते ही रहते हैं।

किन्तु जो सामाजिक जीवन की विषमताओं में फंसकर न आ सकें वे . . . .

ऐसे सभी साधक और शिष्य जो चाहे वर्षों से जुड़े हो चाहे कुछ महीनों से, उनके मन में एक कचोट पैदा होती है कि क्यों हम गुरु चरणों तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। क्या वे गुरु कृपा के पात्र नहीं है, क्या उनसे कोई ऐसा दोष हो गया है जो वे गुरु चरणों तक इस महत्वपूर्ण और **विशेषतः हीरक जयन्ती की गुरु पूर्णिमा पर्व** पर भी नहीं पहुंच पा रहे हैं। मन में निराशा के ऐसे क्षणों में ऐसे विचार आना स्वाभाविक भी है किन्तु गुरुदेव की दृष्टि में तो सभी शिष्य समान है, सभी प्रिय है, और उनका चिन्तन तो इस सीमा तक विराट है कि **जहां मेरा शिष्य नहीं पहुंच पाया है वहां मैं ही पहुंच जाऊंगा, यदि उसने पूर्ण मर्यादा और सम्मान के साथ - साथ शास्त्रीय विधानों का पालन करते हुए गुरु आह्वान प्रयोग सम्पन्न किया होगा।**

प्रस्तुत लेख में हम इसी गोपनीय गुरु आह्वान प्रयोग को स्पष्ट कर रहे हैं, पूज्य गुरुदेव के उन शिष्यों के लिए जो भले ही स्थान की दृष्टि से उनसे दूर हों किन्तु आत्म रूप से पूर्णतः एकाकार हों। पूज्यपाद गुरुदेव के आत्म से एकाकार करना, स्वयं को उनके हृदय में स्थापित

करने की क्रिया करना, स्वयं अपने को इस योग्य बनाना - यही गुरु पूर्णिमा की मूल भावना है और साधक अपने स्थान पर बैठा रह कर भी इस पूर्णता को प्राप्त कर सकता है जिस प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव के हजारों संन्यासी शिष्य उनसे बहुत दूर रहते हुए उनसे एकाकारिता बनाए रखते हैं, केवल उसे उन क्षणों का ज्ञान होना चाहिए कि जब पूज्य गुरुदेव गुरु पूर्णिमा का विशेष प्रयोग सम्पन्न कराएं तब वह भी अपने स्थान पर बैठा-बैठा अपने को उनसे संयुक्त कर ले। गुरु पूर्णिमा एक दिवसीय पर्व ही नहीं पूर्ण **'कल्प'** है गुरु कृपा का। जो प्रारम्भ हो रहा है इस वर्ष दिनांक १९ से २२ जुलाई तक। **इन चार दिनों में प्रतिदिन प्रातः ८.१२ से ६.५६ एवं रात्रि काल में ६.२३ से ११.४२** तक विशेष सिद्ध मुहूर्त उपस्थित होगा। ये सभी छः प्रयोग शिष्य को इन्हीं चार दिनों में इन्हीं मुहूर्तों में अपनी सुविधानुसार सम्पन्न कर लेने हैं।

पूज्य गुरुदेव के पधारने के विभिन्न ढंग हैं। विभिन्न उपायों से वे अपने शिष्यों तक पहुंचते हैं, उन्हें अपना स्पर्श देते हैं। बिम्बात्मक रूप में दर्शन, प्रच्छन्न स्वरूप में सदेह उपस्थिति, दिव्य गंध, मानसिक आह्लाद, सम्पूर्ण शरीर में रोमांच हो उठना, कंठ का भर आना, भाव विह्लता ऐसे अनेक उपाय हैं जिनके माध्यम से पूज्य गुरुदेव प्रतिक्षण अपने साधक को यह अहसास दिलाते ही रहते हैं कि वे उसके आसपास ही हैं। साधना के मध्य तो ये अनुभूतियां और भी अधिक तीव्र, और भी स्पष्ट हो ही जाती हैं, विशेषकर जहां साधक ऐसा दुर्लभ आह्वान प्रयोग सम्पन्न करता है, एक प्रकार से अपने प्राणों के बल के द्वारा पूज्यपाद गुरुदेव के प्राणों को स्पर्श करता है वहां तो वे दौड़ते हुए ही चले आते हैं, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव का ही वचन है कि-- **मैं अपने शिष्यों के बिना अधूरा हूं।**

गुरु पूर्णिमा के दिन आह्वान प्रयोग को सम्पन्न करने का अर्थ

> **केवल शिष्य ही नहीं पूज्य गुरुदेव भी आतुर रहते हैं इस पर्व पर अपने शिष्यों से मिलने के लिए . . .**
>
> **तभी तो रचा गया इस दुर्लभ आह्वान प्रयोग का विधान उनके लिए जो इस पर्व पर किसी कारणवश पूज्य गुरुदेव तक सदेह न पहुंच पाएं।**

होता है सम्पूर्ण गुरु - परम्परा को अपने घर में आमंत्रित करना, सम्मानपूर्वक स्थापित करना। जिस सौभाग्यशाली साधक के घर में एक बार भी ऐसा पूजन हो जाता है वह कई - कई पीढ़ी तक के लिए धन्य हो जाता है क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव तो गुरु- परम्परा के जाग्रत स्वरूप के रूप में साक्षात् उपस्थित हैं इससे सम्पूर्ण गुरु परम्परा तीव्रता के साथ उपस्थित होती है। मेरा तो यहां तक अनुभव है भले ही किसी परिवार का कोई सदस्य गुरु-पूर्णिमा में उपस्थित हो रहा हो फिर भी वह अपने परिवार के सदस्यों द्वारा यदि इस प्रयोग को घर में सम्पन्न करवा लेता है तो निश्चय ही एक विशिष्ट चैतन्यता और पावनता को अपने घर में स्थापित कर लेता है।

> **दिनांक २२.०७.६४ – गुरु पूर्णिमा का पर्व और पानीपत में सम्पन्न हो रहा चार दिवसीय महत्वपूर्ण साधना शिविर! किन्तु जो साधक न आ सकें उनके लिए प्रस्तुत है एक दिवसीय विधान . . .**
>
> **मानों साक्षात् गुरु-चरणों में ही बैठे हों!**

गुरु आह्वान प्रयोग छः महत्वपूर्ण प्रयोगों से मिलकर बना है–

गुरु आह्वान प्रयोग, गुरु स्थापन प्रयोग, सिद्धाश्रम आह्वान प्रयोग, गुरु हृदय स्थापन प्रयोग, पूर्ण सिद्धि प्राप्ति प्रयोग, पूर्णायु एवं **पूर्ण लक्ष्मी स्थापन प्रयोग।**

इन साधनाओं में जिन सामग्रियों की आवश्यकता होगी और जिनका इस दुर्लभ मुहूर्त हेतु जिस विशेष रूप से चैतन्यीकरण आवश्यक है उसके पश्चात् इन्हें मंत्र सिद्ध कर एक पैकेट के रूप में साधक को प्रदान किया जाएगा। जिससे उसकी चैतन्यता सम्बन्धित साधक को ही प्राप्त हो सके। ***सात महत्वपूर्ण सामग्रियों से युक्त इस पैकेट की न्यौछावर मात्र ३३०/- रुपये ही रखी गयी है।***

आगे मैं संक्षेप में इनकी संक्षिप्त साधना विधि स्पष्ट कर रहा हूं साधक को चाहिए कि वह **ताम्र पत्र पर अंकित गुरु चित्र, यंत्र** स्थापित कर पूर्ण विधि - विधान से तांत्रोक्त गुरु पूजन करे अथवा इसी अंक में प्रकाशित षोडशोपचार पूजन करे तथा निम्न प्रकार से ऊपर दिये गए मुहूर्त के अनुसार प्रयोग सम्पन्न करें–

१. गुरु आह्वान प्रयोग

यह इस दिवस का प्रथम और मूलभूत प्रयोग है क्योंकि इस प्रयोग के माध्यम से ही पूज्य गुरुदेव का वह स्वरूप और कृपा प्राप्त की जा सकती है जो गुरु - पूर्णिमा की मूल भावना है। साधक को चाहिए कि वह अपने समक्ष साधना पैकेट में से **गुरु गुटिका** को निकाल कर चावलों की ढेरी पर स्थापित करे और उसका पूजन कुंकुम व अक्षत के साथ पुष्प की पंखुड़ियों से करें।

२. गुरु स्थापन प्रयोग

पूज्य गुरुदेव को आह्वाहित करने के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि वह प्रयोग सम्पन्न किया जाए जिसके द्वारा उनकी पूर्ण स्थापना साधक के मन में तथा गृह में हो सके। इस हेतु **लघु**

नारियल को अपने समक्ष चावलों के ढेरी पर स्थापित कर उसका पूजन श्वेत चंदन व अक्षत से करे।

३.सिद्धाश्रम आह्वान प्रयोग

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेव के साहचर्य के रूप में अनेक विशिष्ट योगियों एवं सिद्धाश्रम के महर्षियों का भी आगमन सम्भव होता है जिनका पूजन करना तथा जिनके प्रति सम्मान व्यक्त करना भी साधक का कर्त्तव्य है। इस हेतु पुष्प की पंखुड़ियों पर अपने सामने **सिद्ध चक्र** स्थापित कर पूजन के रूप में घी का एक बड़ा दीपक लगाएं और उनसे भी आशीर्वाद की याचना करें।

४. गुरु हृदय स्थापन प्रयोग

जहां इस प्रकार का श्रेष्ठतम दिवस हो, दिव्य आत्माओं की सूक्ष्म उपस्थिति हो फिर वहीं **गुरु हृदय स्थापन** का दुर्लभ प्रयोग भी सम्पन्न किया जा सकता है। इसके लिए अपने समक्ष **सिद्धाश्रम मुद्रिका** स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न कर सम्पूर्ण पूजन के अंत में उसे अपने दाहिने हाथ के किसी भी उंगली में धारण कर लें। जिससे प्रतीक रूप में निरन्तर पूज्य गुरुदेव का साहचर्य बना रहता है।

५. पूर्ण सिद्धि प्राप्ति प्रयोग

पूज्यपाद गुरुदेव का साहचर्य इस बात का भी प्रतीक है कि साधक के मन में जिस साधना विशेष की भाव-भूमि हो उसे वह इस सिद्ध दिवस पर प्राप्त कर ले। अपने समक्ष **एक सिद्धि फल** स्थापित कर जिस साधना अथवा महाविद्या साधना की कामना हो उसका मानसिक संकल्प कर उससे सम्बन्धित मंत्र की एक माला मंत्र जप करना पूर्ण सिद्धि दायक होता है।

६. पूर्णायु एवं पूर्ण लक्ष्मी स्थापन प्रयोग

वस्तुतः यह प्रयोग मूल आह्वान प्रयोग का भाग नहीं है किन्तु **इस हीरक जयन्ती वर्ष में पूज्य गुरुदेव की ओर से दिया गया एक आशीर्वाद ही है** साक्षात् पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा प्राप्त एवं मंत्र सिद्ध इस साधना की सामग्री **लक्ष्मी वर-वरद** का स्थापन मात्र ही साधक के लिए पूर्णायु एवं पूर्ण लक्ष्मी प्रदान करने में समर्थ है। साधक इसे भी अपने समक्ष स्थापित कर इसका पूजन केसर व पुष्प की पंखुड़ियों से करें।

इन छः महत्वपूर्ण प्रयोगों के बाद अन्त में **गुरु रहस्य माला** द्वारा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

ॐ परम तत्वाय श्रीं गुरुभ्यो नमः

उपरोक्त मंत्र जप के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें। **गुरु गुटिका, सिद्ध चक्र, लक्ष्मी वरद एवं सिद्धाश्रम मुद्रिका** को छोड़ शेष सामग्री अर्थात् सिद्धि फल, लघु नारियल एवं गुरु रहस्य माला को सफेद वस्त्र में बांध किसी पवित्र जल में विसर्जित कर दें।

हीरक जयन्ती वर्ष के अन्तर्गत

बैतूल में एक दिवसीय साधना शिविर सम्पन्न

(दिनांक ३०.०४.६४)

अभी - अभी पूज्यपाद गुरुदेव के जन्मोत्सव की गूंज जो प्रयाग में उठी और पूरे भारत में बिखरी उसी का अगला चरण था बैतूल का एक दिवसीय साधना शिविर। समस्त मध्य प्रदेश के साधकों ने एक जुट होकर जिस प्रकार गुरु जन्मोत्सव से प्रारम्भ हुए उत्सव की निरन्तरता बनाए रखने के लिए २१.०४.६४ के तुरन्त बाद दिनांक **३०.०४.६४** को इस साधना शिविर का आयोजन रखकर **पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत नन्दकिशोर श्रीमाली जी** को अत्यन्त आग्रह एवं आत्मीयता के साथ आमन्त्रित किया उसके पश्चात् वे भी अपने अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रम से समय निकाल कर जाने के लिए विवश हो गए। यद्यपि हीरक जयन्ती महोत्सव के पश्चात् की अन्य गतिविधियां अभी समाप्त नहीं हुई थी।
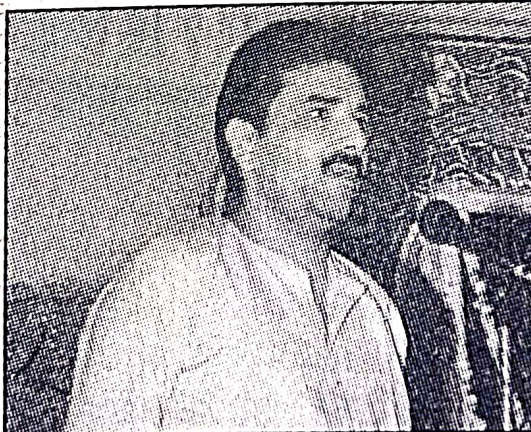
साधकों का भव्य उत्साह **पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी** का भव्य स्वागत, अभिनन्दन, शोभा यात्रा के पश्चात् स्थानीय लोक नर्तकों का अत्यन्त उत्साह से भरा नृत्य, एक - एक पग पर बैतूल- वासियों की सहृदयता को प्रकट कर रहा था। प्रातः ११ वजे से आरम्भ हुआ समारोह, श्री शास्त्री जी द्वारा गणपति पूजन एवं गुरु पूजन के पश्चात् सायं ६ वजे तक निरन्तर गतिशील रहा। पूज्य गुरुदेव से दीक्षित होने की आतुरता लिए साधकों की अपार समूह राशि उमड़ पड़ी थी, किन्तु समय की सीमितता की दृष्टि से लगभग २२५ साधक ही गुरु दीक्षा प्राप्त कर सके। ६ साधकों ने उच्च कोटि की दीक्षाएं ली।

पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी ने इस अवसर पर दिए गए अपने प्रवचन में गुरु तत्व के महत्व को स्पष्ट करते हुए उसकी सामान्य व्यक्ति के जीवन में आवश्यकता को बोधगम्य शब्दों में स्पष्ट किया। पूज्य गुरुदेव ने इस बात का विशेष उल्लेख किया कि जिस प्रकार बैतूल के साधकों ने उनके प्रति अपनत्व और समर्पण प्रस्तुत किया है उससे वे बार - बार वहां आने को विवश होंगे ही। आशीर्वाद स्वरूप उन्होंने समस्त साधकों को महालक्ष्मी प्रयोग भी सम्पन्न कराया।

सुना है कभी अनहद का बोल!

जो गुंजरित हुआ है इन कैसटों में, पूज्य गुरुदेव की वाणी में, जीवन को झकझोरता, हृदय में मौन बन कर समाता . . .

ऑडियो कैसेटः

स्वामी सच्चिदानंद

परम पावन, आध्यात्मिकता के साकार पुंज, दैदीप्यमान, सिद्धाश्रम के प्राण पूज्यपाद के व्यक्तित्व को बांधने का प्रयास, दुर्लभ आह्वान मंत्रों एवं सिद्धाश्रम रचित स्तुति के साथ।

सिद्धाश्रम महात्म्य

तप की केन्द्र स्थली, सौन्दर्य और आध्यात्मिकता के रस में भीगी, पावन भूमि का महत्व एवं अलौकिकता का वर्णन, साक्षात् पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा।

सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर

सिद्धाश्रम से सम्बन्धित अनेक जिज्ञासाओं और दुर्लभ संस्मरणों से गुंथा एक अत्यावश्यक कैसेट। प्रत्येक बार सुनने पर नूतन रहस्य को स्पष्ट करता हुआ।

दुर्लभोपनिषद

जिसके नियमित श्रवण से ही व्यक्ति सर्वथा निष्पाप और तेजस्वी बन कर सिद्धाश्रम- प्राप्ति की पात्रता प्राप्त करने की क्रिया में संलग्न हो सकता है।

लक्ष्मी मेरी चेरी

साधना का मार्ग स्वीकार किया और लक्ष्मी प्रकट न हुई यह सम्भव ही नहीं, किन्तु कैसे? इसी का सटीक विवेचन पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा, प्रामाणिक मंत्रों के साथ।

ॐ मणि पद्मे हुं

तिब्बत के विश्वविख्यात लामाओं का मूल मंत्र जिसमें एक-एक शब्द का कुछ विशेष रहस्य है, लौकिक जगत के ही नहीं, मृत्योपरान्त जीवन, पूर्व जीवन के रहस्य बताने का विशेष तिब्बती तंत्र। एक अद्भुत प्रस्तुति।

मूल्य प्रत्येक ऑडियो कैसेट-३०/-

वीडियो कैसेटः

सिद्धाश्रम

जीवन के चिंतन का मूल केंद्र, जिसकी प्रथम प्रस्तुति वीडियो कैसेट के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त हो सकी है। पीढ़ियों तक के लिए संग्रहणीय एक अद्वितीय अंकन।

आध्यात्मिक प्रवचन

जीवन की यथार्थ शान्ति, एकांत के साधनामय क्षणों में पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष होते हुए आह्लादित व रोमांचित होने के दुर्लभ क्षण।

मूल्य प्रति वीडियो कैसेट-२००/-

नोट- डाक खर्च १८/- अतिरिक्त

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : ०२९१-३२२०६

भारतीय धर्म, साधनाएं और गुरु-तत्व

● डॉ रामदास शर्मा, रायपुर

भारतीय धर्म-साधनाओं में ब्रह्म - तत्व को सर्वोपरि माना गया है, किन्तु इस ब्रह्म-तत्व का ज्ञान सद्गुरु के मार्ग-निर्देशन के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। यही कारण है, संत कबीर के समक्ष जब गुरु और गोविन्द प्रकट होते हैं तो वे गुरु को ही प्रथम प्रणाम करना श्रेयस्कर समझते हैं।

विश्लेषण की दृष्टि से संसार का कोई भी कार्य विशिष्ट पथ-प्रदर्शक के बिना सफल नहीं होता। ऐसा सच्चा पथ-पदर्शक या गुरु साधक को ही प्राप्त होता है। साधक को परिभाषित करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है—

"श्राम्यन्तीति श्रवण तपसन्ते इत्यार्थ।"

— अर्थात् जो श्रम करता है, कष्ट सहता है तथा तप करता है और अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करता है, वही सच्चा साधक है।

श्रीमद्भागवत में भी कहा गया है—

"श्रवण वातरशना आत्म-विद्या विशाप्दा।"

— अर्थात् जो साधक उपवास में निराहार रहकर स्वाभाविक स्वच्छ वायु में जप-तप एवं स्वाध्याय में लीन रहते हैं, वे "वातरशना" ही आत्म-विद्या में प्रवीण होते है।

वेदों, उपनिषदों और पुराणों के रहस्य इतने गंभीर हैं कि सामान्य बुद्धि से उनका वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं किया जा सकता। उल्लिखित मंत्र में "वातरशना" शब्द का प्रयोग किया गया है। "वातरशना" का अर्थ है— वायु-सेवी। साधना करते-करते भौतिक शरीर की एक ऐसी स्थिति आती है, जब साधक केवल वायु पर ही निर्भर हो जाता है। आज के वैज्ञानिक युग में जो लोग यह तर्क करते है कि एकांत जंगलों में निवसित हमारे ऋषि बिना खाद्य-पदार्थों के कैसे शक्तिमान् रहकर साधना करते थे, उन्हें भागवत् में उल्लिखित "वातरशना" का रहस्य समझने का प्रयास करना चाहिये। इस युग के सर्वार्थ सिद्ध-पुरुष **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली** अपने जीवन की दिव्य-साधनाओं के काल में इस "वातरशना" का प्रयोग सिद्ध कर चुके हैं। उनका तो यह भी मत है कि "समाधि" की अवस्था में शरीर को प्राण-वायु के बिना भी अक्षुणय रखा जा सकता है।

गुरु तत्व का जप प्रत्येक जीव निरन्तर करता ही रहता है। श्वास के धारण करने एवं निक्षेप के द्वारा वह निरन्तर हंस मंत्र का जप भी करता रहता है किन्तु इस रहस्य को केवल सद्गुरु ही अनावृत्त कर सकते हैं और इस प्रकार शिष्य के दिव्य जीवन के मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

इस तरह की दुस्तर साधनाएं जो लोग सम्पन्न करते हैं, गुरु की उत्प्रेरणा से ही करते हैं। केवल ग्रंथों का अध्ययन कर संसार में कोई भी न तो ज्ञानी हुआ है, न किसी साधना में सफल हुआ है। हमारे देश में इसीलिये "गुरु-सेवा" का महत्व प्रतिपादित किया गया है। जो साधक विनम्रतापूर्वक समर्पित भाव से निराभिमान होकर गुरु-सेवा करता है, उसे ही गुरु-कृपा (सिद्धि) प्राप्त होती है।

लौकिक और पारलौकिक दोनों ही विद्याओं के क्षेत्र में पग-पग पर गुरु की आवश्यकता पड़ती है, पारलौकिक विद्या के क्षेत्र में तो विचलित होने की अधिक सम्भावना होती है। ऐसी स्थिति में गुरु की शक्ति ही साधक को सम्बल प्रदान करती है। मानवी सभ्यता के अनादि-काल से इस देश

में गुरुकुलों की परम्परा रही है, जहां ऐसे-ऐसे साधक हुए, जिनके तेज के सामने सूर्य भी निष्प्रभ हो गया। उन्होंने अपनी चेतना का परिष्कार ईश्वरत्व के उस स्तर तक किया था, जहां उनके इंगित मात्र से सृष्टि में हलचल मच जाती थी। गुरु-तत्व का रहस्य यही है कि वह साक्षात् ईश्वर है। हमारी आर्य-परम्परा में जिस गुरु को ईश्वर के समकक्ष माना गया था, उसे उससे भी सर्वोपरि कहा गया तो इसका कारण यह है कि गुरु में कुछ ऐसे असाधारण गुण होते हैं कि सामान्य मानवों से उनकी तुलना नहीं की जा सकती। हमारे देश में गुरु के गुणों का वर्णन करते हुए निम्नांकित बातें शास्त्रों में कही गई हैः-

१. जिस का स्वाभाव शुद्ध हो, २. जो जितेन्द्रिय हो, ३. जिसे धन का लोभ न हो, ४. जो वेद-शास्त्रों का ज्ञाता हो, ५. जिसे सत्य का दर्शन हो चुका हो, ६. नित्य जप-तपादि साधनों को लोक-संग्रहार्थ करता हो, ७. जो परोपकारी और दयालु हो, ८. सत्यवादी एवं शांतिप्रिय हो, ९. योग-विद्या में निपुण हो, १०. जिसमें शिष्य के पाप-नाश की शक्ति हो, ११. जो भगवान का भक्त हो, १२. स्त्रियों के प्रति जो अनासक्त हो, १३. क्षमावान हो, १४. धैर्यशाली हो, १५. चतुर हो, १६. अव्यसनी हो, १७. प्रियभाषी हो, १८. निष्कपट हो, १९. निर्भय हो, २०. पापों से असम्पृक्त हो, २१. सदाचारी हो, २२. सादगी से जीवन व्यतीत करता हो, २३. धर्मप्रेमी हो, २४. जीवमात्र का सुहृद हो, २५. अपने शिष्य को पुत्र से बढ़कर प्यार करता हो।

ऐसे महत् गुणों से विभूषित गुरु-तत्व की साधना अत्यन्त दुस्तर है। गुरु-तत्व का आसन सहस्रार-कमल में माना गया है। इस गुरु-तत्व को "हंस-मंत्र" से जागृत किया जाता है और यही मोक्ष का द्वार है। **"अनंत फल-तंत्र"** के अनुसारः-

हंसात्मिकां भगवती जीवो जपति सर्वदा।
हंकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः।।
अस्याः सम्बोधमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।

सिद्धान्त तो यही है कि गुरु-तत्व का जीव निरन्तर जप करता है। यह "हंस-मंत्र" ही जीवन धारण का रहस्य है।

गुरुदेव निद्रा, स्वप्न, ध्यान, समाधि, तन्द्रा किसी भी रूप में शिष्य के शरीर में सूक्ष्म रूप से समाहित होकर परिमार्जन करते हैं। यही भी दीक्षा है, जिससे शिष्य में एक विलक्षण शक्ति का संचार होता है।

सच्चा गुरु इस रहस्य को ही अनावृत्त करता है और शिष्य के दिव्य-जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। **दीक्षा के क्षेत्र में जो लोग विशेषज्ञ हैं, वे जानते हैं, गुरु के स्पर्श, नेत्र-विक्षेप, स्वप्न में अवतरण, मंत्र-निर्देश आदि से शिष्य में एक विलक्षण शक्ति का संचार होता है।** इसे भी "शक्तिपात" की दीक्षा-पद्धति के नाम से जाना जाता है।

*इसमें संदेह नहीं कि आज भी संसार में ऐसे विभूति सम्पन्न गुरु विद्यमान हैं, जिनके संकेत से जड़ जगत भी चलता है। इस देश के महान गुरुओं की ही परम्परा में आज **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली** भी हैं, जिनकी शक्तिपात दीक्षा-पद्धति की विशेषता ही कुछ अलग है। गुरुदेव पर कुछ भी लिखने के पूर्व यह हमेशा ध्यान में रखना होगा कि वे ऋषि-परम्परा के साधक हैं और सम्भवतः संसार के महानतम् तांत्रिक भी हैं। गुरुदेव निद्रा में, ध्यान में, समाधि या स्वप्न में, तंत्र की तंद्रा में सूक्ष्म-शरीर से अपने शिष्य के शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं और उसके संस्कारों का परिमार्जन करते हैं। दीक्षा के क्षणों में ही शिष्य को दिव्यता का बोध होता है।*

"शक्तिपात" दीक्षा-पद्धति का मूलाधार है- कुंडलिनी जागरण। योगियों के अनुभवों ने संसार को एक ऐसी रहस्यमय शक्ति का पता दिया है, जो ऊर्जा के रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। मनुष्य देह में वही कुंडलिनी है, योगियों ने अपने अनुभवों से व्याख्या की है, कि कुण्डलिनी की धारा विद्युत की तरह सुषुम्ना नाड़ी में दौड़ती रहती है, किन्तु यह क्रिया तभी होती है, जब कुण्डलिनी मूलाधार चक्र से जाग्रत होकर चैतन्य होती है और ऊर्ध्वगामी होती है। पुराणों में जो शेषनाग की कल्पना मिलती है, वह कुंडलिनी की ब्रह्मांड-व्याप्ति का ही पर्याय है। मानव-शरीर में स्थित "व्यष्टि कुंडलिनी" जीवन की दिव्यता का प्रमाण है। यह कुंडलिनी यदि जागृत होकर षट्चक्रों का भेदन कर सहस्रार में प्रवेश कर जाये तो मानव को अमृत की प्राप्ति हो जाती है। यह भौतिक शरीर ही तब दिव्य हो जाता है और अनेक चमत्कार सहज ही सिद्ध हो जाते हैं।

विज्ञान चमत्कारों को संदेह की दृष्टि से देखता है, किन्तु कभी वह दिन आ सकता है, जब वैज्ञानिक आत्मा, सूक्ष्म-शरीर और कुंडलिनी जैसे तत्वों पर व्यापक अन्वेषण करें। इन पंक्तियों के लेखकों का मत है कि 'व्यष्टि शरीर' में यदि कुंडलिनी शक्ति का अजस्त्र स्त्रोत है तो 'समष्टि शरीर' में वह सतत् जाग्रत रहकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाली महाशक्ति है। प्राणि-जगत में वही जीवन है, वही विद्युत की प्रभा है, धरती के गर्भ में ज्वालामुखी, समुद्रों के भीतर वड़वाग्नि है, वनस्पति जगत में वही रस है। सम्पूर्ण अंतरिक्ष उसी के आकर्षण में बंधा है, वह नाद है, ब्रह्म है, और वही गुरु-तत्व है।

● राकेश यादव
भिलाई (म.प्र.)

हीरक जयन्ती वर्ष की गुरु-पूर्णिमा पर शिष्यों को सम्बोधित करता एक शिष्य का आह्वान. . .

क्योंकि शिष्य ही गुरु की यथार्थ वाणी एवं आत्म जो है

युगों युगों का पर्व होता है गुरु पूर्णिमा। केवल एक वर्ष बाद पड़ने वाली सामान्य सी एक पूर्णिमा नहीं। इसी बात का अनुभव आज मैं और भी सघनता से कर रहा हूं। दिन - प्रतिदिन जिस प्रकार से इस क्षेत्र में आगे बढ़ रहा हूं तब अनुभव कर रहा हूं कि **यह क्षेत्र तो असीम है, अनन्त है और सचमुच आज कई वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी मुझे यही लग रहा है** कि मैं काल के विशाल प्रवाह में एक ओर खड़ा एक सामान्य सा पथिक ही हूं और पथिक भी क्यों? काल की ही जो उत्तुंग लहरें मुझे इस जन्म से उस जन्म में फेंक रही हैं उसमें फंसा एक सामान्य जीव मात्र ही तो हूं।

यह सब कहने की आवश्यकता आज पुनः यों आ गयी क्योंकि गुरु पूर्णिमा का अवसर समक्ष जो आ गया है। पिछले वर्ष के बाद से सचमुच लग रहा है कि एक युग ही तो बीत गया है। एक युग इस रूप में कि जिन कर्त्तव्यों और मर्यादाओं का पालन आवश्यक होता है, जिस उच्च कोटि की चैतन्यता को ग्रहण कर गुरुत्व का साक्षात्कार किया जाता है और जिस आत्मीयता व विनम्रता के द्वारा गुरु-चरणों का वन्दन किया जाता है, उसकी तो प्रारम्भिक अवस्था ही मेरे हृदय में स्पष्ट नहीं हो पायी है और जीवन के अनेक पल उसकी भावभूमि समझने में ही व्यतीत हो गये हैं। निरन्तर चार वर्षों के बाद भी मैं केवल एक अस्पष्ट सी भावभूमि ही समझ सका हूं और उस भावभूमि पर खड़ा होकर मैं अपने बारे में केवल इतना ही स्पष्ट हो सका हूं कि **शिष्य तो नहीं, लेकिन किसी न किसी रूप में गुरुदेव से सम्बन्धित मात्र हो सका हूं। मेरे लिए इतना परिचय भी बहुत है।** मुझे इस बात का ही असीम सन्तोष है कि मैं पता नहीं किन पुण्यों से एक पवित्र विग्रह के सम्पर्क में बार - बार आ सका, उनका सान्निध्य और सायुज्यता प्राप्त कर सका। चिन्तन के गहन क्षणों में समझ सका हूं कि मैं किनसे निरन्तर प्राण-तत्व ग्रहण कर गतिशील हूं. . . और यही सब मेरे जीवन में चेतना का, तृप्ति का आधार बन सका है।

एक पूर्णिमा ही नहीं कई-कई पूर्णिमाओं का प्रकाश समेटे गुरु चरणों में ही मेरे लिए नित्य पूर्णिमा का ही उत्सव रहा है। जिनके निर्मल और स्निग्ध प्रकाश में अवगाहन करके मेरा यह हाड़- मांस का शरीर ही नहीं मन और प्राण तक स्निग्ध हो सके हैं और मैं समझ सका हूं कि यह तो एक प्रकाश की ही यात्रा है, पूर्णत्व में जाकर समाने का दुर्लभ क्षण है, जिसका प्रकट और सभी के लिए सर्वाधिक सुलभ अवसर है आषाढ़ माह की अप्रतिम पूर्णिमा - **''गुरु पूर्णिमा''।**

निरंतर इस प्रकार एक पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा के मध्य की यात्रा करके मैं आज यह स्पष्ट कह सकता हूं कि जीवन का अथ यदि गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करना है तो उसकी पूर्णिमा और पूर्णता **'गुरु पूर्णिमा'** ही है। **महत्वपूर्ण यह नहीं है कि शिष्य अथवा साधक गुरुदेव से जीवन के किन क्षणों में जुड़ा है कितना समय उनके पास व्यतीत कर चुका है** वरन इसकी सार्थकता तो इस बात में छिपी है कि क्या वह पूर्णिमा के एक निर्मल प्रकाश पुंज का साक्षी बन सका है? अपने- आपको भाव विभोर कर सका है? अपने - आप को दुख, पीड़ा, अभाव, तनाव और कष्टों से सर्वथा मुक्त कर प्रकाश में नहाने की चैतन्यता समझ सका है? गुरुदेव का पूर्ण स्वरूप देख सका है? उनके मानव शरीर के पीछे जो अद्वितीय चेतना छुपी है, उसका साक्षी वन सका है?

और इसी चैतन्यता और साक्षीभाव का यथार्थ व सर्व सुलभ अवसर है गुरु-पूर्णिमा, जव गुरुदेव का औदार्य, कृपा और अनुग्रह त्रिवेणी बन कर शिष्य और साधक के पाप - दोष और मलिनताओं को प्रयागराज की ही भांति समाप्त कर देता है। यह तो वर्ष विशेष है। पूज्यपाद गुरुदेव की हीरक जयन्ती का वर्ष जो प्रारम्भ हुआ है प्रयागराज की पावन भूमि से, गुरुदेव के इस मूक आशीर्वाद के साथ कि प्रत्येक शिष्य के जीवन में पाप- ताप समाप्त कर गंगा, यमुना और सरस्वती अर्थात निर्मलता, सौन्दर्य और ज्ञान तीनों की ही धाराओं को पूर्णता से प्रवाहित होना ही है। इस वर्ष तो प्रत्येक स्थान, प्रत्येक साधना शिविर प्रयागराज ही है। इसी स्वरूप के कारण।

गुरु-पूर्णिमा इसी पावनता का उत्सव है साक्षात् देव गंगा का इस धरा पर आगमन है जो पूज्यपाद गुरुदेव के माध्यम से प्रत्येक शिष्य में प्रवाहित हो सकती है और होगी भी, क्योंकि यह शिष्यों का ही पर्व है, आह्लाद और कामनाओं का दिवस है।

उत्सव वर्ष की ये पूर्णिमा तो कुछ और भी विशेष होने जा रही है इस वर्ष विशेष की यात्रा में और इस पूर्णिमा में सचमुच ही उन व्यक्तियों का जीवन सार्थक होगा जो अपने दैनिक जीवन में इसके प्रति चिन्तन युक्त होंगे, गुरु तत्व को समझने की ओर अग्रसर हुए होंगे। प्रयास कर ऐसे पथ पर चलेंगे जो पथ सभी के लिए नहीं वना है। कुछ ही तो इस पथ की यात्रा कर पाते हैं, कुछ ही तो गुरु चरणों में वैठने का अर्थ समझ पाते हैं और वहुत कम लोग ही तो गुरु-पूर्णिमा की पावन पर्व की दुर्लभता को आत्मसात् कर पाते हैं एक शाश्वत पथ की यात्रा पर चल पाते हैं, कुण्डलिनी जागरण की निर्मल यात्रा और अर्थ को समझ पाते हैं।

. . . और यात्रा भी कैसी? यह तो स्वयं को सदा से प्रवहित गंगा की पावनता में उन्मुक्त छोड़ देना है। गंगा सागर तक पहुंच कर स्वयं ही एक तीर्थ वन जाना है, गुरु चरणों की उज्ज्वलता में नहा कर अपने पंखों पर जमी धूल को धो - पोंछ कर उस आभा से आलोकित हो जाना है जिसकी आने वाले समय में एक उपमा वन जायेगी तथा इस प्रकार अपने इस नश्वर शरीर की निरर्थकता को सार्थक कर लेना है।

इस गुरु-पूर्णिमा पर इन्हीं भावों के साथ मैं पुनः पुनः आपका आह्वान कर उस आनन्द का साक्षीभूत हो रहा हूं जिसे बांटने से कुछ घटता नहीं बढ़ता ही चला जाता है।

मैंने अपने मन को उठा लिया है

श्री मां शारदा, परमहंस श्री रामकृष्ण की लीला सहचरी अपने सभी शिष्यों का पालन उसी अपनत्व और ममत्व से करती थी जिस अनुरूप वे शिष्य ठाकुर को प्रिय थे और इस क्रम में उन्होंने असीम वेदना सही, विष का पान किया फिर भी अविचलित रही। शनैः शनैः स्थिति यहां तक आ गयी कि वे अत्यन्त तिक्त हो गयी। शिष्यों के अन्दर परस्पर मेल - मिलाप न होने से, अपनत्व न होने से वे विरक्त सी हो गयी।। उनके अत्यन्त समीप और पुत्रवत् स्वामी सारदानन्द मां में आए इस परिवर्तन से अनभिज्ञ नहीं थे। एक वार किसी घटना पर मां का प्रायः उपेक्षापूर्ण व्यवहार देखकर उन्होंने करुण स्वर में प्रार्थना की कि वे ऐसा न करें किन्तु श्री मां का सीधा सा उत्तर था — **नहीं रे! अब मैंने अपना मन इस सभी वातों से उठा लिया है।**

साधु-चित्त पर, सरल मन पर जब ठेस लगती है तो वह कोई प्रतिकार नहीं करता, कुचक्र नहीं रचता, बस यों ही अपना मन ''उठा'' लेता है और जिस कर्त्तव्य भाव के वशीभूत होकर जगत में क्रियाशील होता है उससे उन्मनी होकर चित्त को ईश्वर में पुनः लीन कर देता है। फिर कोई आवश्यक नहीं कि वह देह से कहां रहे क्योंकि तब उसकी उपस्थिति भी अनुपस्थिति सदृश्य हो जाती है।

किसी भी शिष्य के जीवन में इससे अधिक दुःखद कुछ भी नहीं हो सकता. . .

विश्व की पांच अलौकिक साधनायें

साधनाओं के क्षेत्र में जहां सरल, सौम्य, सात्विक साधनाओं का महत्व है वहीं तीक्ष्ण और उग्र साधनाएं भी आवश्यक हो जाती हैं। उग्र साधनाओं से भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे अपने स्वरूप में उग्र होती हैं साधक के प्रति नहीं, और जब साधक प्रामाणिक व शास्त्रोक्त विधान से इन्हें सिद्ध करने का उपाय करता है तो वह ऐसा सभी कुछ प्राप्त कर सकता है जो कि अन्यथा सरल सात्विक साधनाओं से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

साधनाओं के इस विशिष्ट खंड में से चुनकर हम पांच चमत्कारी साधनाएं- **भूत साधना, तीव्र वशीकरण प्रयोग, बगलामुखी प्रयोग, तांत्रोक्त लक्ष्मी सिद्धि एवं पौरुष प्रयोग** प्रस्तुत कर रहे हैं। जिनके माध्यम से साधक जीवन के विविध क्षेत्रों में स्वयं परीक्षण कर अनुभव कर सकता है कि साधनाओं के माध्यम से किस प्रकार हाथों-हाथ भी लाभ लिए जा सकते हैं। इन साधनाओं को करने में कोई दोष नहीं है। साधक गायत्री उपासक हो अथवा सौम्य पद्धति से पूजा-साधना करता हो तब भी इन विधियों को अपना सकता है क्योंकि ये विधियां वास्तव में लघु प्रयोग हैं और साधक को अपना आचार-विचार बदलने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

भूत साधना

भूत-प्रेत को लेकर समाज में बहुत सी धारणाएं प्रचलित हैं और व्यक्ति ऊपर से भले ही इन पर विश्वास न करता हो किन्तु आन्तरिक रूप से इनका अस्तित्व स्वीकार करता है कि कोई न कोई ऐसी रहस्यमय योनि होती ही है। वास्तव में त्रिआयामी होने के कारण भूत योनि की दृष्टिगोचरता तो सम्भव नहीं होती लेकिन इनका आभास अवश्य किया जा सकता है। अधिकांशतः व्यक्ति इनका अस्तित्व तब स्वीकार करते हैं जब वे इनके प्रकोप से ग्रस्त हो जाते हैं और निराकरण के उपाय ढूंढते हैं, किन्तु भूत-साधना का तात्पर्य केवल इतना ही नहीं है। प्रकोप से मुक्ति पाने के अतिरिक्त भी यदि साधक थोड़ा सा दृढ़ निश्चय कर प्रयास करे तो इस विलक्षण योनि को अपने वश में कर सकता है और तब उसे एक ऐसा सहयोगी मिल जाता है जिसकी सहायता से इस संसार में कई असम्भव से लगने वाले कार्य भी किए जा सकते हैं। जिस प्रकार से व्यक्ति अपने घर में नौकर रखता है उसी प्रकार भूत-साधना सिद्ध करके वह एक नौकर रख सकता है और **ऐसे "नौकर" मनुष्य से भी ज्यादा विश्वासी एवं आज्ञापालन करने में तत्पर होते हैं क्योंकि वे मंत्रों द्वारा जीवन भर के लिए आवद्ध हो जाते हैं।** यह भी सत्य है कि ऐसे अनुचर न तो कोई धोखा देते हैं न अपने स्वामी पर किसी प्रकार का आघात करते हैं।

इस साधना को किसी भी कृष्ण पक्ष की रविवार की रात्रि से प्रारम्भ करना आवश्यक है। यह ११ दिनों का प्रयोग है और साधक के लिए आवश्यक है कि वह उचित यंत्र व रक्षा उपकरण साथ रखकर ही इस साधना में प्रवृत्त हो। **मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त भूत डामर यंत्र, मूंगे की माला, बड़हल का टुकड़ा तथा लघु भैरव यंत्र** इस साधना की प्रमुख आवश्यकताएं हैं। साधक को चाहिए कि वह साधना के प्रारम्भिक दिन काले वस्त्र का जोड़ा बिछाकर बिना स्नान आदि किए काली धोती पहन कर काले आसन पर बैठ जाए और अपने सामने काले वस्त्र पर ही भूत डामर यंत्र रखकर उसके सामने बड़हल का टुकड़ा रख दें। बायें हाथ की ओर तिल की ढेरी पर लघु भैरव यंत्र स्थापित कर दें जो इस साधना में सुरक्षा आवरण का कार्य करता है। बड़हल के टुकड़े पर काली स्याही से छोटे-छोटे अक्षरों में लिख दें— **ॐ भूताय वशं करि करि स्वाहा** इसके बाद तेल का दिया लगाकर मूंगे की माला से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ श्मशान भूताय वशं करि मम आज्ञा पालय पालय फट्।।

यह ११ दिनों का प्रयोग है और ११ वें दिन जाकर ही स्पष्ट अनुभूति सम्भव होती है। जब भूत प्रकट हो तब साधक किसी भी प्रकार से भयभीत न हो और उससे अधिकार पूर्वक स्वर में कहें कि आज से मैं जो भी कार्य कहूंगा वह तुझे करना ही होगा। ऐसा कहने के उपरान्त भूत आज्ञा-पालन के लिये विवश होता है और साधक जब भी मूल मंत्र का तीन बार उच्चारण करता है तो भूत अदृश्य रूप से उपस्थित होकर आज्ञा-पालन करता ही है। साधना-समाप्ति के पश्चात् बड़हल का टुकड़ा अपनी बांह पर बांध लें और शेष सामग्री किसी श्मशान स्थल में जाकर फेंक आएं।

२. तीव्र वशीकरण प्रयोग

वशीकरण से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण प्रयोग पत्रिका में समय-समय पर प्रकाशित किए गए है किन्तु प्रस्तुत प्रयोग इस ढंग से तीव्र है कि जहां समस्त वशीकरण प्रयोग कार्य न कर रहे हो वहां फिर इसका प्रयोग करना अनुकूल सिद्ध होता है। **प्रारम्भ में एकाएक बहुत तीव्र वशीकरण प्रयोग नहीं करना चाहिए** किन्तु जहां सामने वाला व्यक्ति हठी अथवा पत्थर दिल हो वहां फिर ऐसे ही प्रयोग को उपयोग में लाना चाहिए। जहां प्रेमिका का मन बदल गया हो और वह किसी परपुरुष से विवाह करने को आतुर हो गई हो, अधिकारी अनायास नाराज होकर अहित करने को सोचने लग गया हो अथवा पार्टनर धोखा देने का कार्य कर रहा हो-- ऐसी समस्त स्थितियों में बिना हिचक **तीव्र वशीकरण प्रयोग** सम्पन्न कर स्थिति को अपने पक्ष में लेना चाहिए जिससे बिगड़ता हुआ जीवन सवंर सके।

किसी भी शुक्रवार की रात्रि में स्नान कर सफेद धोती पहन कर, सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाएं। सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर **वशीकरण ताबीज** और **रतन जोत** स्थापित कर दें। यंत्र को धो-पोंछकर कुंकुम की बिन्दी लगाकर अक्षत चढ़ाएं और रतन जोत पर केसर से उस स्त्री या पुरुष का नाम लिखें जिसको अपने अधीन करना है। इसके उपरान्त तेल का दिया लगाकर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।।ॐ क्रीं क्रीं क्रीं 'अमुकं' वश्य करि करि मम आज्ञा पालय पालय फट्।।

'अमुकं' के स्थान पर ही मनोवांछित नाम लेना है। यह मंत्र स्त्री अथवा पुरुष किसी के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है। मंत्र-जप के उपरान्त तावीज को धारण कर लें तथा रतन जोत एवं स्फटिक माला को केवल तव तक स्थापित रखें जब तक कार्य सिद्ध न हो जाए। बाद में इन्हें पवित्रता से विसर्जित कर दें।

३. बगलामुखी प्रयोग

जीवन जिस प्रकार से नित्य प्रति असुरक्षित एवं कटु होता जा रहा है उसमें व्यक्ति को पग-पग पर सावधान रहना और रक्षात्मक उपाय करना आवश्यक होता जा रहा है। यों तो प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से सावधानी रखता ही है, व्यवहारिक रूप से भी और साधनात्मक रूप से भी। वह रक्षात्मक उपाय करता रहता ही है, लेकिन कुछ आपदाएं ऐसी होती हैं जो एकाएक आ जाती हैं और ऐसी विकट स्थिति में सामान्य बुद्धि भी कार्य नहीं करती। तब समझ में नहीं आता कि क्या करें, जिससे इस आकस्मिक आपदा से मुक्ति मिल सके। **किसी मुकदमें- बाजी में उलझा दिया जाना, मानहानि, आघात करने पर आमादा कोई शत्रु ऐसी स्थितियों में आवश्यक होता है कि व्यक्ति को हाथों-हाथ कोई लाभ मिल सके जिससे उसका जीवन नष्ट होने से बच सके।** जिस प्रकार चिकित्सा में पहले फर्स्ट - एड प्रदान की जाती है और बाद में पूर्ण उपचार प्रदान किया जाता है उसी प्रकार साधना-जगत में भी कई ऐसी छोटी-छोटी साधनाएं हैं जो फर्स्ट- एड का कार्य करती है।

जहां ऐसी विकट स्थिति आ गई हो, वहां आवश्यक रहता है कि साधक महाविद्या साधना करने की अपेक्षा एक लघु प्रयोग अपनाएं। मंगलवार की रात्रि को स्नान कर दक्षिण मुख हो पीले रंग के आसन पर बैठ पीला यज्ञोपवित धारण कर सामने पीले वस्त्र पर ही **बगलामुखी यंत्र चित्र** स्थापित करते हुए **हरिद्रा हंसराज** को भी स्थापित कर दें। शुद्ध घी का दीपक लगाएं और यंत्र चित्र को धोकर केसर लगाएं तथा हरिद्रा हंसराज पर केसर द्वारा अंकित करें— **ॐ पीताम्बरा देव्यै नमः** और **मूंगे की माला** द्वारा नित्य ११ माला जप करते हुए पांच दिन तक प्रयोग सम्पन्न करें।

मंत्र

।।ॐ ह्लीं बगलामुखीं अमुक शत्रुणां नाशय मर्दय ह्लीं फट्।।

पांच दिन का यह प्रयोग **बगलामुखी साधना** के क्षेत्र में अद्भुत व विलक्षण माना गया है और साधना प्रारम्भ होते ही कैसी भी विपरीत स्थिति हो अनुकूलता मिलनी प्रारम्भ हो ही जाती है। साधक को चाहिए कि वह इन पांच दिनों में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे और यथासम्भव कम से कम वार्तालाप करें। पांचवे दिन का मंत्र जप समाप्त होने के बाद हरिद्रा हंसराज एवं मूंगे की माला को बस्ती से दूर कहीं जनशून्य स्थान पर जाकर जला देना चाहिए। मंत्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है वहां आप उस व्यक्ति का नाम ले सकते हैं जिसके द्वारा पीड़ित हों। **भूलकर भी इस प्रयोग को द्वेषवश अथवा किसी को हानि पहुंचाने की दृष्टि से कदापि नहीं करना चाहिए अन्यथा विपरीत प्रभाव भी हो सकता है।**

४. तांत्रोक्त लक्ष्मी सिद्धि

जिस प्रकार ऊपर का बगलामुखी प्रयोग एक लघु प्रयोग होते हुए भी जीवन की आवश्यकताओं को तत्क्षण पूर्ण करने वाला है इसी प्रकार **तांत्रोक्त लक्ष्मी सिद्धि** प्रयोग ऐसा ही तीव्र प्रयोग है। जहां धन अभाव की समस्या प्रबल हो और साधक को तुरंत इससे मुक्ति प्राप्त करनी हो तो आवश्यक हो जाता है कि वह इस लघु प्रयोग को सम्पन्न करें। **यदि ऋण-बाधा से दब गए हों और इससे उबरने का कोई उपाय न मिल रहा हो तब तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर ही लेना चाहिए।** इससे दोहरा लाभ प्राप्त होता है। एक ओर जहां ऋणी व्यक्ति के ऊपर देनदार का दबाव कम होता है, वहीं किसी न किसी उपाय से आकस्मिक लक्ष्मी की प्राप्ति भी सम्भव होती है। किसी भी संक्रान्ति के दिन किया जाने वाला यह प्रयोग एक तीव्र तांत्रिक प्रयोग है और सूर्य के राशि-परिवर्तन के साथ-साथ इस प्रयोग को सम्पन्न करने से एक ऐसा परिवर्तन प्रारम्भ होता है जिससे साधक शीघ्र ही आर्थिक दबाव से मुक्त होने की क्रिया सम्पन्न कर लेता है। यह प्रयोग दिन में ठीक १२ बजे अथवा रात में ठीक १२ बजे ही सम्पन्न किया जाता है।

साधक को चाहिए कि वह अपने सामने पीला कपड़ा बिछाकर **पद्मावती यंत्र** स्थापित कर **दो लक्ष्मी प्राकाम्य** यंत्र के अगल-बगल रख **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र का जप करें। दोनों लक्ष्मी प्राकाम्य क्रमशः ऋद्धि व सिद्धि के प्रतीक हैं। इस साधना में मूल मंत्र की पांच माला मंत्र जप होना आवश्यक है और मंत्र जप के काल में साधक अपना स्थान कदापि न छोड़ें।

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं श्रीं ऐं फट्

आगामी माह में जो संक्रान्तियां घटित हो रही हैं उनकी सूची इस प्रकार है—**१५.०६.९४, १६.०७.९४, १७.०८.९४**

मंत्र जप के उपरान्त साधना की समस्त सामग्री कुछ आटे और दक्षिणा के साथ किसी को भिक्षा में दे दें। यदि कोई लेने को उपस्थित न मिले तो समस्त सामग्री किसी तिराहे पर ले जाकर रख दें।

५. प्रबल पौरुष प्राप्ति प्रयोग

घुमक्कड़ साधु-संन्यासियों के बीच इसे कायाकल्प प्रयोग के नाम से जाना जाता है और समय-समय पर इसके प्रयोग द्वारा वे अपने-आप को स्वस्थ व सबल बनाए रखते हैं। उनके मूल कायाकल्प प्रयोग को थोड़े से परिवर्तन के साथ गृहस्थ साधक **प्रबल पौरुष प्राप्ति प्रयोग** के रूप में कर सकते है। जहां साधक पौरुष सम्बन्धी किसी अक्षमता से पीड़ित हो, सम्भोग में पूर्ण सुख का अनुभव न कर पाता हो अथवा अपनी पत्नी को सन्तुष्ट न कर पाता हो और इस कारणवश उसके मन में हीन भावना ही भरी रहती हो तो ऐसी समस्त स्थितियों में इस प्रयोग को करना अत्यन्त तीव्र फलदायक होने के साथ स्थायित्व से लाभ देने वाला भी होता है। पत्रिका के पिछले अंक में हमने **"और स्तम्भन के ये तंत्रात्मक विधान"** शीर्षक के अन्तर्गत् इस प्रयोग का संकेत मात्र दिया था। जिसके अनुसार यदि पीड़ित साधक **शूकरदंत** धारण कर रति क्रीड़ा में संलग्न हो तो कोई कारण ही नहीं कि परस्पर पूर्ण सुख कर आदान-प्रदान न हो। **कुछ साधकों ने इसको धारण करना अव्यवहारिक मानकर बिना धारण किए पूर्ण सुख प्राप्त करने की विधि जाननी चाही** और जहां साधक इस प्रकार से लाभ करना चाहते हैं तो आवश्यक है कि वे किसी भी रविवार की रात्रि में ११ बजे से २ बजे के मध्य आसन पर बैठ लोहे की या स्टील की थाली में कुंकुम से ५२ बिन्दियां लगाएं तथा उनसे थोड़ा अलग हटकर एक बड़ी बिन्दी लगाकर उस पर **बिल्वा** स्थापित करें और थाली के चारों ओर नौ दीपक तेल के लगा दें। इसके बाद उस बिल्वा के खोखले हिस्से में एक काली मिर्च, एक-दो इलाचयी के दाने तथा जल भर कर बायें हाथ में पकड़ लें और दायें हाथ से **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र का जप करें।

स्तम्भन मंत्र

।।ॐ ह्रीं क्रीं क्रीं दिव्य देह क्रीं ह्रीं ह्रीं फट्।।

इसमें केवल एक माला मंत्र जप ही पर्याप्त है। मंत्र जप के उपरान्त बिल्वा के उस खोखले हिस्से में भरा जल काली मिर्च आदि एक बड़ी शीशी में डाल दें और शेष भाग दस गुने सामान्य जल से भर लें। नित्य इस जल को अगले रविवार तक अनुपात से पीते रहें। अगले रविवार को पुनः यह प्रयोग सम्पन्न करें। इस पानी के सेवन से व्यक्ति का कायाकल्प होने लगता है। **बाजीकरण, वीर्य स्तम्भन और पौरुषता में आंतरिक रूप से यह जल बहुत ही अधिक लाभप्रद होता है।**

वास्तव में ये पांच प्रयोग न तो बड़ी साधनाओं के अन्तर्गत् आते हैं न अत्यन्त छोटे टोटकों के रूप में, वरन् इन्हें लघु प्रयोग कहना ही अधिक उचित होगा और ऐसे लघु प्रयोगों का भी जीवन में विशेष महत्व होता है। इनके माध्यम से वे प्रारम्भिक स्थितियां निर्मित की जा सकती हैं जिनके द्वारा साधक तुरन्त लाभ प्राप्त करता है।

यद्यपि पूर्ण व स्थायी लाभ प्राप्त करने के लिए विशिष्ट साधनाओं की आवश्यकता को भी सर्वथा जीवन में नकारा नहीं जा सकता।

सलोने सौन्दर्य का ही दूसरा नाम है

देह की गढ़न
जब सलोनेपन से घुलमिल कर
साधक को झककोर दे तो वही नाम है- रतिप्रिया यक्षिणी,
अपने नाम के ही अनुकूल प्रियता देने में
सदैव प्रस्तुत और उत्तेजकता से भरी,
प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित एक
साधक का रोमांचक
विवरण . . .

रतिप्रिया यक्षिणी

फिर उसकी आंखें कुछ और तरल हुई, भीगती हुई मन की मादकता का एक संदेश लेकर कुछ कहने को तैयार हो गयी और देखते ही देखते उसके सारे शरीर में खुद को मिटा कर, घुला-मिला कर एकरस कर देने की बातें आंखों में मय की एक मस्ती बनकर मेरे चारों ओर छलक पड़ी . . .

. . . हल्की भूरी और सुनहरी रंगत लिये आंखें छलक रही थी और मदहोशी में तन पर पड़े वस्त्र ढुलकने को तैयार हो गए थे . . . सारा अस्तित्व ही समर्पण और ललक को कहने लग गया, हल्की सी कामुकता की पर्त मेरे चारों ओर छाकर मुझे बेसुध और अस्त व्यस्त करने पर उतर आयी . . .

. . . हल्का सांवला रंग लिए कुछ भरा-भरा सा बदन ज्यों मांसलता की एक हल्की पर्त लुनाई से कुछ और भिंच कर तन गयी हो, और सारी सुडौलता एक अक्स बनकर उतर रही हो।

वास्तव में अद्भुत ही होता है यक्षिणी का सौन्दर्य . . . क्या रंग, क्या रूप, क्या तीखे नैन-नक्श, क्या सुडौलता, क्या लुनाई और क्या कमनीयता! ज्यों देह के सितार पर खिंचे कई-कई तार हों . . . किसी एक को भी बस हौले से छू भर ही नहीं दिया कि एक झंकार सारे जिस्म में थर-थरा उठी . . . प्रकट नहीं हुई तो कई-कई बार की साधनाओं में भी नहीं और **जब रीझ गयी तो उन्हीं साधनाओं को सफल करती जीवन के किसी भी पल में, किसी भी मोड़ पर और किसी भी रूप में . . .**

. . . दोनों हाथों को बांध कर दुहरा होता, बेंत की टहनी सा कोमल लचीला बदन, हथेलियों को एक दूसरे से बांध मसलती हुई, बिखरती हुई लटों को कुछ और भी बिखरे हुए गुप-चुप यही कह रही थी कि अब मुझे संभालो, मुझे बिखरने से बचा लो . . .

देह पर फूलों के गुच्छे, वेणी में लगा गजरा, तीखे लाल रंग में रंगे ओंठ, नाखून और माथे की बड़ी सी गहरी नीली बिंदी सभी कुछ उसके रोम-रोम में समायी मादकता और यौवन का निमंत्रण ही बन गए जब वह मेरे समीप आई।

धन, रूप, यौवन, एकांत की अठखेलियों का सुख, नृत्य, संगीत और रोम-रोम से पूरी देह के एक-एक कतरे से समर्पण-- इसके अतिरिक्त साधक को और चाहिए भी क्या? रही-सही कसर तो कामोन्मत्त इशारों, छेड़खानियों, निगाहों की सिहरन और मिलन के उन क्षणों में कानाफूसियों से केवल और केवल यक्षिणी ही पूरा कर सकती है, क्योंकि यौवन को एक उफान तक ले जाना, उसकी मस्ती में खुद

भी खो जाना और अपने सिद्ध साधक को भी समेट लेना तो केवल यक्षिणी ही जानती है . . . **रतिप्रिया यक्षिणी! रति-सुख का पूर्ण प्रभाव देने की यौवन की साकार मूर्ति,** साधक के एक-एक रोम को एक विचित्र सी उत्तेजना और सनसनी से भर देने का रहस्य जानने वाली अपूर्व मादक और कामोत्तेजक यक्षिणी!

श्रृंगार के चुनाव की बात हो या मन में गहरे तक उतर जाते उसके वस्त्रों के रंग, इसको तो केवल रतिप्रिया ही समझती है और जिसका सम्पूर्ण अस्तित्व, जिसकी सम्पूर्ण रचना साधक को पूर्णता से सुख प्रदान करने के लिये ही की गयी हो, उससे अधिक इसे समझ भी कौन सकता है . . . तड़पती हुई नृत्यरत देह की अठखेलियां, सलोने तन पर पड़े दूधिया गजरे की महक, रतिप्रिया तो साधक के जीवन की एक हलचल है, उसे उदासियों के घेरे से निकाल कर, खामोशी को तोड़कर देह के नृत्य में सहभागी बना लेने की अदा है

अप्सरा साहचर्य देती है तो अपने रूप से, किन्नरी अपनी मधुरता से, योगिनी अपनी आत्मीयता से और वहीं यक्षिणी अपने भोग से! साधक के जीवन में प्रत्येक स्थिति का एक निश्चित अर्थ और स्थान है। प्रत्येक दशा का एक आनन्द है जिससे वह जीवन के सभी रसों से परिचित हो सके, तृप्त होकर जीवन को जान सके, जीवन में अभावग्रस्त न रहे, कुंठित और तृष्णा से भरा न रह सके।

जो सौन्दर्य के पारखी हैं, जिन्हें मादकता की परिभाषा का पता है, जो यौवन की अठखेलियों से गुजरे है, जोश को समझे हैं, वे ही समझ सकते हैं कि सौन्दर्य में सलोनेपन का कैसा गहरा रंग होता है। रूप- सौन्दर्य की प्रचलित धारणाओं से कुछ अलग हटकर उन तीखे नयनों की मादकता और देह के हल्के से सांवलेपन में कैसे-कैसे कटाक्ष छुपे होते है, कैसा निमंत्रण झलकता होता है, कैसा आमंत्रण बुला रहा होता है . . .

. . . और तब देह के एक-एक उभार, एक-एक मोहक सुडौल मोड़ और घुमाव उभर-उभर कर, निखर-निखर कर वस्त्रों का अस्तित्व नकारने को मचल पड़ते हैं; जिन पर पड़ता हल्का सा प्रकाश एक-एक रेखा को बखूबी उजागर कर उसमें छिपी कविता की गुनगुनाहट को मुखरित कर देता है।

यक्षिणी ऐसी ही एक कविता है, देह की भाषा में लिखी मादक कविता, जिसकी एक-एक पंक्ति में सुडौलता और अतिरिक्त मांसलता ही समायी हो।

ऐसी 'कविता' को पढ़ा जा सकता है, उसे सराहा जा सकता है और उसके एक-एक अक्षर में यदि डूबा जा सकता है तो केवल साधना से क्योंकि **यक्षिणी और वह भी रतिप्रिया केवल देखने की वस्तु नहीं; गुनगुनाने की, सरस होकर बिखर जाने की घटना है,** ज्यों भौंरा जब रस का पान मदमस्त होकर कर लेता है, तब अपने को संभाल नहीं पाता, गुनगुनाता हुआ यों ही उड़ता फिरता है!

जिन्हें यौवन की कामना है, गुनगुनाते हुए उड़ने की चाहत है, भोग को लेकर कोई उहापोह नहीं हैं, जीवन को पूरी मस्ती से जीने का हौसला है, वे साधक अपने जीवन में रतिप्रिया की साधना करते ही हैं क्योंकि **यही तो है वह साधना जो दो टूक स्पष्ट रूप से प्रचुर भोग की भाव-भूमि तैयार करती है। सुख, धन, ऐश्वर्य, सम्पदा देने के साथ ही साथ सारे शरीर में एक हलचल मचा देती है,** प्रेम का पहला सबक सिखा देती है जिससे बासी पड़ गए तन पर एक अनोखी सी फुहार आकर यौवन के बसंत को कहने लग जाती है. . . और तब साधक के पास से उसकी चाल और हसरतों से भी फागुन की एक नशीली, हवा बहने लग जाती है। जहां रतिप्रिया की साधना है फिर वहीं निरंतर ऐसी घटना है जिससे न कभी भी मन बासी पड़े न तन और ऐसे मिलन से ही जो संगीत उत्पन्न होता है, वही जीवन का रस है, **रतिप्रिया तो अपने नाम में ही अपने रहस्य को स्पष्ट करती है,** अपने को बेसुध होकर प्रस्तुत करती है।

रतिप्रिया यक्षिणी की साधना मन के कायाकल्प की साधना है और विशेषतयः मध्य आयु के पुरुषों के लिए, अनुभवी साधकों के लिए आवश्यक साधना है क्योंकि ऐसे रससिद्ध साधक ही वास्तव में रतिप्रिया जैसी अनिन्द्य रूपसी का यौवन भोग करने में समर्थ हो सकते हैं, उसके मादक संकेतों की भाषा समझ कर एक हलचल और चंचलता का सुख-लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यदि स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह कामदेव साधना का ही एक विशिष्ट रूप है और इसी कारणवश इस साधना में जिस प्रकार से क्रम अपनाया जाता है वह मूलतः कामदेव पूजन ही होता है। कामदेव की विभिन्न सोलह कलाओं को ही अपने तन-मन में समाकर साधक वस्तुतः पूर्ण क्षमता से रतिप्रिया का यौवन - भोग करने में समर्थ हो सकता है। किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न की जाने वाली इस साधना में प्रत्येक साधना की ही भांति कुछ साधना - सामग्री आवश्यक रहती है। **कामदेव यंत्र, सोलह काम बीज, कामदेव गुटिका, रति गुटिका, मूंगे की माला एवं रतिप्रिया यक्षिणी यंत्र** इस साधना में नितांत आवश्यक रहते हैं। यह क्रमबद्ध रूप से दृढ़ता से सम्पन्न की जाने वाली ऐसी विशिष्ट साधना है जिसमें साधक को अपना ध्यान और एकाग्रता प्रयासपूर्वक बनाए ही रखना पड़ता है।

साधना के दिवस पर अपने साधना कक्ष में अपनी रुचि से कोई भी वस्त्र पहनकर पूर्ण आनन्दित भाव के साथ पीले रेशमी आसन बैठें। साधना कक्ष विशेष रूप से सुसज्जित व सुगन्धित कर लें। दिशा दक्षिण के अतिरिक्ति कोई भी हो सकती है तथा सामने वाजोट पर भी रेशमी वस्त्र बिछा कर **कामदेव यंत्र** स्थापित करें। यहां एक बात स्पष्ट करनी आवश्यक है कि कामदेव यंत्र, अनंग यंत्र, रतिकाम यंत्र, रतिराज यंत्र आदि सभी मूलतः एक ही यंत्र के विभिन्न नाम हैं अतः साधक भ्रमित न हों। इस कामदेव यंत्र के समक्ष रति गुटिका तथा कामदेव गुटिका क्रमशः दाएं व बाएं स्थापित करें। इस के बगल में ही रतिप्रिया यक्षिणी यंत्र स्थापित करें तथा सम्पूर्ण पूजन सामग्री के आगे सुगन्धित पुष्पों की पंखुडियों की सोलह ढेरियां बनाकर सोलह काम बीज स्थापित करें। सर्वप्रथम कामदेव यंत्र का पूजन इत्र, सुगन्धित पुष्प की पंखुड़ियों, अक्षत और केसर से करें और प्रत्येक सामग्री 'क्लीं' बीज मंत्र के साथ अर्पित करें। तदुपरांत कामदेव गुटिका व रतिप्रिया गुटिका का पूजन भी उपरोक्त सामग्री से करें। रतिप्रिया यक्षिणी यंत्र का पूजन केवल सुंगधित पुष्पों एवं अक्षत से करें तथा सोलह काम बीजों का पूजन निम्न प्रकार से केसर के द्वारा करें—

१. श्रद्धायै नमः, २. प्रीत्यै नमः, ३. रत्यै नमः, ४.भूत्यै नमः, ५. कान्तायै नमः, ६. मनोभवायै नमः, ७. मनोहरायै नमः, ८. मनोरमायै नमः, ६. मदनायै नमः, १०. उत्पादिन्यै नमः, ११. मोहिन्यै नमः, १२. दीपिन्यै नमः, १३. शोधिन्यै नमः, १४. वश्यंकरिण्यै नमः, १५. रंजनायै नमः, १६. प्रियदर्शनायै नमः।

उपरोक्त कला-स्थापन पूजन के पश्चात् इन सोलह काम कलाओं की हृदय में स्थापन भावना प्रबल करते हुए **मूंगे की माला** से निम्न रतिप्रिया यक्षिणी का मूल मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं आगच्छ रति सुन्दरि
स्वाहा

उपरोक्त मंत्र केवल तीन माला करना पर्याप्त है तथा सम्पूर्ण मंत्र जप के समय घी का दीपक निरन्तर जलते रहना अनिवार्य है। साधक इस क्रम में विशेष सतर्क व चौकन्ना होकर बैठे। उपरोक्त मंत्र के प्रभाव स्वरूप उसे तीव्रता, स्वेदन (पसीना) इत्यादि अनुभव हो सकता है किन्तु ये स्थितियां इस बात की सूचक होती हैं कि साधक के काम-भाव की पुष्टि के साथ-साथ रतिप्रिया का आगमन सूक्ष्म रूप में हो गया है। मंत्र जप के पूर्व ही यदि प्रत्यक्षीकरण हो जाए तो साधक रतिप्रिया यंत्र यक्षिणी के हाथ में देकर उससे जीवन पर्यन्त भार्या सदृश्य सुख-भोग देने का वचन लेकर शेष मंत्र-जप अवश्य पूर्ण करें। इस साधना को तीन शुक्रवारों तक करना अनिवार्य है। साधना की समाप्ति पर साधक कामदेव गुटिका व रति गुटिका एक साथ एक ही धागे में पिरो कर धारण कर लें, शेष सामग्री लाल वस्त्र में बांध कर जल में विसर्जित कर दे। इस साधना का एक गोपनीय रहस्य है कि प्रायः साधना करने के कुछ समय बाद ही यक्षिणी किसी विशेष स्वरूप में साधक के जीवन में इस प्रकार आती है जिससे फिर जीवन पर्यन्त साथ रह सके। अतः इसमें साधना के मध्य प्रत्यक्षीकरण की अपेक्षा साधना के उपरांत सतर्क रहना विशेष लाभप्रद होता है। साथ ही साथ **इस साधना की एक अन्य विशेषता यह भी है कि यह शीघ्र विवाह प्रयोग भी है।** जिन साधकों का विवाह बड़ी आयु का हो जाने के बाद भी न सम्पन्न हो रहा हो उनके लिये यह अनुकूल साधना है जिससे शीघ्र ही रतिप्रिया यक्षिणी किसी भी प्रकार से साधक के जीवन में आकर उसे मनोवांछित भोग प्रदान करती है।

. . . जीवन के किसी भी पल में, किसी भी मोड़ पर और किसी भी रूप में, क्योंकि यही तो रतिप्रिया की विशेषता है!

अपने मृत परिचित से वार्तालाप सम्भव है
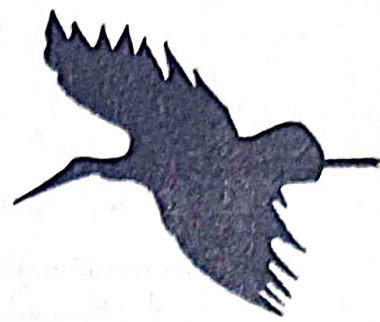
मृत्यु के उपरान्त जीवन के विषय में अब बहुत कुछ रहस्यमय नहीं रह गया है और धीमे-धीमे विज्ञान भी अपने आधुनिकतम यंत्रों, संवदेनशील कैमरे आदि की मदद से इस बात की सत्यता स्वीकार करने लग गया है कि मृत्योपरान्त जीवन होता है।

किन्तु विज्ञान अभी उस स्तर को नहीं प्राप्त कर सका है जहां इन मृतात्माओं से सम्पर्क साधा जा सके, उनके संकेत समझे जा सकें। जवकि भारतीय साधना पद्धति में इसका उपाय है . . .

आज से ठीक एक सदी पहले विश्व के सबसे अधिक विकसित एवं वैज्ञानिक चिन्तन से युक्त कहे जाने वाले देश अमेरिका में फॉक्स बहनों की धूम मची हुई थी और मोटी रकम फीस में देकर प्रत्येक नगर के निवासी उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित करने की होड़ में लगे रहते थे। उनकी अचूक भविष्यवाणियों और किसी भी रहस्य को कुछ ही क्षणों में बता देने से वैज्ञानिकों में हलचल मच गयी थी। कुछ लोगों का मत था कि वे अतीन्द्रिय शक्ति से सम्पन्न नवयुवतियाँ है जबकि वास्तविकता इससे विपरीत कुछ और ही थी। जैसा कि बाद में रहस्योद्घाटन हुआ उनकी सहायता एक मृतात्मा करती थी और वे उसके निर्देश पर ही विभिन्न नगरों के दौरे का कार्यक्रम बनाती थीं। भूमि तत्व से रहित होने के कारण मृतात्मा के लिए कुछ भी अज्ञात अथवा असंभव नहीं होता और अदृश्य रहते हुए वे यदि चाहे तो व्यक्ति की इतनी अधिक सहायक हो सकती है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

एक प्रकार से फॉक्स बहनों की घटना के बाद से ही पश्चिमी देशों में इस क्षेत्र में रुचि बढ़ी और उन्होंने गम्भीरतापूर्वक

शोध कार्य किए। भारतीय घटनाओं को छोड़ दें तो भी पश्चिमी देशों का इतिहास ऐसी अलौकिक घटनाओं से भरा पड़ा है। पश्चिमी वैज्ञानिकों में इस को लेकर दो मत या दो धाराएं है। एक इसकी अनुभूति मानव की अतिचेतन क्षमता का विस्तार मानती है जबकि दूसरी धारा जो भारतीय चिन्तन के अधिक निकट है, इसे मृत्योपरान्त जीवन मानती है तथा मानव- जीवन की, मृत्यु के पश्चात् भी अस्तित्व की निरन्तरता पर विश्वास करती है।

केवल मोह वश या भोग की कामनाओं को पूरा करने के लिए ही नहीं वरन अपने- अपने अधूरे दायित्वों को पूर्ण करने के लिए भी मृतात्माएं माध्यम ढूंढती रहती है, आत्मीयता से भरकर अपने वंशजों के प्रति कुछ करने को आतुर होकर . . .

भारतीय चिन्तन

भारतीय चिन्तन में इस बात की स्वीकृति किसी कौतूहल अथवा चमत्कार की अपेक्षा इतनी सहजता से की गयी है मानों मृत्यु के उपरान्त उसके परिवारजन अलग हुए ही न हों। पाठकों को प्रायः एक जिज्ञासा शेष रह जाती है कि एक ओर यह धारणा है व्यक्ति मृत्यु के उपरान्त एक पल भी शून्य में नहीं रहता, उसे तुरन्त किसी गर्भ में चले जाना होता है, दूसरी ओर हम उनका अस्तित्व पूर्वज, पितर अथवा किसी इतर योनि में चले जाने के रूप में भी करते है। **ऊपर से सर्वथा विरोधाभासी दिखती और तर्क उत्पन्न करती इस जिज्ञासा का उत्तर यही है कि मानव जीवन की सूक्ष्मता का ज्ञान इतनी सहजता से नहीं समझाया जा सकता।** यह सत्य है कि व्यक्ति मृत्यु के उपरान्त एक जीवन को त्याग दूसरे परिवेश में जन्म ले लेता है किन्तु उसका एक सूक्ष्म अंश फिर भी अवशिष्ट रूप से पूर्वक्रम से जुड़ा रह ही जाता है या यों कहें कि उसका भौतिक स्वरूप तो किसी गर्भ के माध्यम से जन्म लेने को विवश होता है किन्तु सूक्ष्म अंश ब्रह्माण्ड में विद्यमान रह ही जाता है।

इन्हीं सूक्ष्म तंतुओं के कारण व्यक्ति अपने घर-परिवार का मोह त्याग नहीं पाता **जिसकी प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति पूर्व जन्म की घटनाओं के माध्यम से होती है।**

वास्तविकता क्या है?

मृतात्माओं के अस्तित्व पर सहज ही विश्वास नहीं होता और इसका कारण है कि हम जो कुछ भी अपनी इन्द्रियों की पकड़ में आता है उसी को प्रामाणिक मानते हैं जबकि सत्यता यह है कि जितना कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है वह सृष्टि का लाखवां हिस्सा ही है। चर्म चक्षुओं के अतिरिक्त वहुत कुछ ऐसा है जो केवल साधनात्मक बल द्वारा ही ज्ञात किया जा सकता है। जिसे सामान्य भाषा में मृत्यु कहा जाता है वह केवल भौतिक शरीर की समाप्ति ही होती है जब कि मानव का अस्तित्व सात सूक्ष्म शरीरों से मिलकर रचित होता है। मृत्यु के उपरान्त इनमें से छह सूक्ष्म देह अस्तित्व में रहती ही है और तव मृत व्यक्ति अपने इन सूक्ष्म शरीरों के साथ क्रियाशील रहता है।

मृतात्माओं का स्वरूप

स्थूल से सूक्ष्म शरीर में चले जाने के कारण व्यक्ति का अस्तित्व प्रकट रूप में समाप्त भले ही हो जाता हो अर्थात् भौतिक जगत से उसका सम्पर्क समाप्त हो जाता हो किन्तु मानसिक रूप से सम्पर्क नहीं समाप्त होता। वे अपने को परिवार से अलग-थलग मानने में कठिनाई अनुभव करते हैं और उपाय ढूंढते रहते हैं जिससे परिवार के व्यक्तियों से अथवा अपने मनोवाच्छित व्यक्तियों से सम्पर्क बना सकें। सूक्ष्म शरीर में चले जाने के कारण उनकी शक्तियां तो असीम हो जाती हैं किन्तु स्थूल शरीर का अभाव बना रहता है फलस्वरूप भोग की इच्छाएं, लालसाएं पूरा करने में वे असमर्थ रहते है और इसी कारणवश एक अतृप्तावस्था में निरन्तर भ्रमण करते रहते हैं।

परिवार का हित

केवल इसी कारणवश ही नहीं वरन् कुछ अन्य कारणों से भी मृत व्यक्ति इस दशा को प्राप्त नहीं कर पाता है जिसे आम बोलचाल की भाषा में मुक्ति कहा जाता है। ऐसे कारणों में कोई आवश्यक नहीं कि केवल लालसा, भोग, मोह सम्बन्धी इच्छाएं ही हों। कई बार विभिन्न दायित्व पूर्ण न होने के कारण भी ऐसा होता है कि मृत व्यक्ति अपने ऊपर एक प्रकार का दबाव अनुभव करता है तथा इस प्रयास में रहता है कि जैसे भी हो वह किसी माध्यम द्वारा अपने दायित्व से मुक्ति पाए। ऐसे विभिन्न कारण हो सकते हैं यथा उसने कोई महत्वपूर्ण कागज या वसीयत कहीं गुप्त स्थान पर रखा हो या धन का सञ्चय किया हो जिसका ज्ञान परिवार को न हो, **परिवार पर कोई विपत्ति आने वाली हो, उसकी संतान जहाँ विवाह करने की इच्छुक हो वहाँ भविष्य में धोखा मिलने की संभावना हो अथवा परिवार का एवं परिवार के सदस्यों को किसी भी प्रकार से कोई नुकसान और कष्ट पहुंचने की सम्भावना हो।** इसी श्रेणी में एक अन्य प्रकार की आत्माएं भी आती हैं, जो अपेक्षाकृत उच्च श्रेणी की मानी जाती हैं, जो प्रायः किसी कवि, चित्रकार, दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक की हो सकती हैं। इन्हें कोई लालसा नहीं होती किन्तु इनका कोई कार्य बीच में अधूरा रह गया

होता है और ये उसकी पूर्ति के लिए छटपटाती रहती हैं।

मृतात्माओं से सम्पर्क

यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुरूप किसी मृतात्मा से सम्पर्क करना चाहे तो यह उसी प्रकार कठिन है ज्यों धान के विशाल ढेर में सुई खोजना तथा यही बात मृतात्माओं के साथ भी आती है क्योंकि उन्हें अपनी बात करने का उचित माध्यम नहीं प्राप्त होता। यद्यपि कुछ एक युक्तियां खोजी गयी हैं जिनके माध्यम से विशेषकर पश्चिमी देशों में जिज्ञासु प्रयोग करते रहे हैं किन्तु ये युक्तियाँ अधिक प्रामाणिक नहीं कही जा सकतीं। प्लेनचिट प्रयोग, ऊँझा बोर्ड प्रयोग, काँसे की कटोरी, स्वतः लेखन माध्यम का उपयोग इनमें से कुछ उपाय है।

भारतीय विधि

इन विधियों की अपेक्षा भारत की प्राचीन **आत्म साधन पद्धति** ही अधिक अनुकूल मानी गयी है। इस विधि का प्रयोग करके प्राचीनकाल से ही साधक विशिष्ट आत्माओं का आह्वान करके उनका ज्ञान प्राप्त करते रहे हैं। इस विधि की विशेषता है कि यह किन्हीं संयोगों पर आधारित न होकर एक निश्चित उपाय प्रदान करती है तथा इसके माध्यम से जिस आत्मा का आह्वान किया जाए केवल वही आत्मा उपस्थित होती है। पाश्चात्य माध्यमों में एक विशेष संकट होता है कि उनके द्वारा प्रायः गलत आत्मा भी प्रकट हो जाती है जिसको वापस भेजने में बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है और यदि साधक समर्थ न हुआ तो वे पलट कर उसी पर हावी हो सकती हैं। आत्म साधना ऐसे समस्त दुष्प्रभावों से सर्वथा मुक्त एक सौम्य व शास्त्रीय पद्धति है।

आत्म साधन प्रयोग

आत्माओं से सम्पर्क की इस प्रामाणिक विधि को साधक एक निश्चित विधान अपनाकर अपने जीवन की स्थायी सिद्धि बना सकता है क्योंकि इस प्रयोग की यह विशेषता है।

इस साधना से पूर्व साधक को गुरु-साधना सम्पन्न कर गुरु मंत्र का सवा लाख मंत्र जप अनुष्ठान पूर्ण विधि-विधान से करना अनिवार्य होता है जिसके दिनों की संख्या निश्चित नहीं है किन्तु इस गुरु मंत्र जप अनुष्ठान में प्रथम दिन साधक जितनी माला मंत्र जप करे उसे दूसरे दिन भी उतनी ही माला मंत्र जप करना अनिवार्य होता है। इस प्रारम्भिक अनुष्ठान को केवल **गुरु आत्म यंत्र पर अप्रयुक्त स्फटिक माला** द्वारा ही सम्पन्न किया जा सकता है।

मंत्र

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

मूल अनुष्ठान करने के उपरान्त साधक को चाहिए कि वह गुरु मंत्र अनुष्ठान के बाद पड़ने वाले प्रथम शुक्रवार से आत्म साधना प्रारम्भ करे। अपने सामने लाल वस्त्र पर **आत्म आह्वान यंत्र** स्थापित कर धूप प्रज्ज्वलित कर अपने आसन के चारों ओर **चार मधुरुपेण रुद्राक्ष** स्थापित करें जो इस तीव्र प्रयोग हेतु रक्षा मंत्रों से सिद्ध किए गए होते है एवं एक सुरक्षा चक्र का कार्य करते है। इसके उपरान्त निम्न मूल मंत्र का जप **आत्म आह्वान माला** से करें।

मंत्र

ह्रौं ह्रौं हस हस अमुक आत्मा आवाहय
जाग्रय स्फुटय फट्।।

(उच्चारण - ह्रौं - हलुओम्)

इस सम्पूर्ण मंत्र जप काल में शुद्ध घी का दीपक जलता रहे तथा जिस गुरु आत्म यंत्र द्वारा प्रारम्भिक साधना की है उसको भी अपने समक्ष रखे। प्रारम्भिक गुरु साधना में प्रयुक्त हुई स्फटिक माला को सम्पूर्ण मंत्र जप के काल में गले में धारण किए रहें।

पांच दिवसीय इस प्रयोग को सम्पन्न करने के उपरान्त साधक को ऐसी क्षमता प्राप्त हो जाती है कि वह भविष्य में 'अमुक' के स्थान पर जिस नाम का उच्चारण कर ग्यारह बार उपरोक्त मंत्र का जप करता है तो वह आत्मा सूक्ष्म रूप से प्रकट होकर उसकी जिज्ञासाओं का समाधान करती ही है।

साधना सिद्ध होने के उपरान्त साधक को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि प्रत्येक आत्मा आदर और सम्मान चाहती है। अतः आप जब भी उनका आह्वान करें तब पूरा सम्मान देते हुए शिष्ट भाषा में प्रश्न पूछें। उन्हें व्यर्थ में केवल कौतुहल अथवा प्रदर्शन के लिये ही आह्वाहित न करें न उलझाव से भरी भाषा का ही प्रयोग करें। उन्हें पूर्ण सम्मान दें तथा विदा करते समय धन्यवाद ज्ञापित करें। इससे वे आत्माएं प्रसन्न होकर भविष्य में भी सहयोग प्रदान करती है।

साधना के उपरान्त गुरु आत्म यंत्र को छोड़ समस्त सामग्री को लाल कपड़े में बांधकर कहीं एकांत में गाड़ दें। जब भी किसी आत्मा का आह्वान करें तब लकड़ी के बाजोट पर **गुरु आत्म यंत्र** को स्थापित कर सुगन्धित अगरबत्ती भी प्रज्ज्वलित करें जिससे किसी विपरीत स्थिति का सामना न करना पड़े।

अलौकिक साधना विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
गुरु यंत्र, चित्र (ताम्रपत्र पर)	१०	२४०/-
पंच पात्र	१०	३०/-
१ गुरु कृपा फल	११	२१/-
लघु गुरु पादुका यंत्र	११	१५०/-
१ सिद्धि फल	११	११/-
गुरु रहस्य माला	११	३००/-
श्री यंत्र	२८	३००/-
मेरु पृष्ठीय श्री यंत्र	२९	२४०/-
कूर्म पृष्ठीय श्री यंत्र	२९	३१०/-
धरा पृष्ठीय श्री यंत्र	२९	३००/-
मत्स्य पृष्ठीय श्री यंत्र	२९	३००/-
उर्ध्वरूपीय श्री यंत्र	२९	३६०/-
मांतगीय श्री यंत्र	२९	३६०/-
नवनिधि श्री यंत्र	२९	६००/-
वाराहीय श्री यंत्र	२९	३००/-
कुबेर यंत्र	२९	२४०/-
कनक धारा यंत्र	२९	२४०/-
कमल गट्टे की माला	२९	१५०/-
शून्य सिद्धि यंत्र	३८	३००/-
१ गोमती चक्र	३८	२१/-
सियार सिंगी	३८	१५०/-
हकीक माला	३८	१५०/-
स्फटिक माला	३८	३००/-
गुरु चैतन्य सिद्धि माला	३८	२४०/-
केतु महायंत्र	३९	२४०/-
नीली हकीक माला	३९	१५०/-
सिद्धाश्रम गुरु गुटिका	४२	१००/-
पारद श्री यंत्र	४५	३६०/-
सौभाग्य शंख	४५	१२०/-
कमल गट्टे की माला	४५	१५०/-
महालक्ष्मी चित्र	४५	११/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
अघोर गौरी यंत्र	६१	६००/-
हकीक माला	६१	१५०/-
१ गोमती चक्र	६१	११/-
जाकुड़ा	६२	३००/-
अष्ट धातु की अंगूठी	६२	३००/-
त्रिलौह की अंगूठी	६२	२४०/-
बिल्ली की नाल	६२	८०/-
मयूर शिखा	६२	८०/-
भूत डामर यंत्र	७१	२४०/-
मूंगे की माला	७१	१५०/-
बड़हल का टुकड़ा	७१	८०/-
लघु भैरव यंत्र	७१	१५०/-
वशीकरण ताबीज	७२	६००/-
रतन जोत	७२	१५०/-
स्फटिक माला	७२	३००/-
बगलामुखी यंत्र-चित्र	७२	३६०/-
हरिद्रा हंसराज	७२	१५०/-
पद्मावती यंत्र	७३	२४०/-
लक्ष्मी प्राकाम्य	७३	२४०/-
बिल्वा	७३	२४०/-
कामदेव यंत्र	७६	२४०/-
१ काम बीज	७६	२१/-
कामदेव गुटिका	७६	१२०/-
रति गुटिका	७६	१२०/-
मूंगे की माला	७६	१५०/-
रतिप्रिया यक्षिणी यंत्र	७६	२४०/-
गुरु आत्म यंत्र	७९	३००/-
स्फटिक माला	७९	३००/-
आत्म आह्वान यंत्र	७९	३००/-
चार मधु रुपेण रुद्राक्ष	७९	४००/-
आत्म आह्वान माला	७९	२४०/-

दीक्षा	पृष्ठ	न्यौछावर
सहस्रार जागरण दीक्षा	३१	६०००/-
सरस्वती दीक्षा	५१	१५००/-
ज्ञान दीक्षा	५१	६००/-
महालक्ष्मी दीक्षा		२१००/-
ऋण मुक्ति दीक्षा		१५००/-
मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा		३६००/-
गृहस्थ सुख समृद्धि दीक्षा		२१००/-
रोग मुक्ति दीक्षा		२१००/-
धनवन्तरी दीक्षा		६००/-
शत्रु बाधा निवारण दीक्षा		१५००/-
बगलामुखी दीक्षा		३१००/-
पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा		३०००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा		२१००/-
अप्सरा सिद्धि दीक्षा		२१००/-
पूर्व जन्मकृत पाप विमोचन दीक्षा		१५००/-
यक्षिणी दीक्षा		२१००/-
गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा		३६००/-
गुरु हृदस्थ धारण दीक्षा		२१००/-
राज्याभिषेक दीक्षा		११०००/-
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा		५१००/-
तारा महाविद्या सिद्धि दीक्षा		३१००/-
सर्व साधना दीक्षा		३१००/-
जीवन मार्ग दीक्षा		६००/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१ ३२२०८

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १२ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

एक अद्वितीय साधना शिविर

शिवरी नारायण, जिला बिलासपुर (म० प्र०)

८-६-१० जून १६६४

- भगवान जगन्नाथ जी की जन्मभूमि। तीन नदियों का संगम तीर्थ. . .
- एक पवित्र और अद्वितीय स्थान, जहाँ श्रीराम ने शबरी के हाथों बेर खाये थे।
- एक साधना स्थली, जहाँ दीक्षा लेने या साधना करने पर सफलता मिलती ही है।
- एक तपस्या भूमि, जहाँ गुरु चरणों में बैठने से ही कई जन्मों के पाप कट कर पुण्य प्राप्त होता है।

प्रथम दिन - महालक्ष्मी साधना

द्वितीय दिन - मनोवांछित कामना पूर्ति साधना

तीसरे दिन - पूर्णाहुति प्रयोग

आप अवश्य पधारें

यह आपके जीवन का सौभाग्य होगा विश्व की श्रेष्ठतम

२१ दीक्षाएं

जो आपके सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने के लिये पर्याप्त है

आयोजक

१. श्री के. बी. द्विवेदी, पंडरिया, बिलासपुर
२. श्री विनोद कुमार साहू, बंसी लाल पैकरा(शिक्षक), तन्नोद
३. श्री भीम राम साहू, श्री राम खिलावन साहू, मुकाम-खोखरी
४. डॉ. सुभाष मिश्रा, बिलाईगढ़, नारायण योगी - पामगढ़
५. श्री आर. सी. वर्मा, थाना-कोरबा
६. श्री एल. एन. सिंह, कॉन्ट्रैक्टर, बिल्हा
७. श्री मदन लाल सिंघानिया, राहौद
८. श्री के. आर. कुर्रे, बजरंग चौक, रायपुर, फोनः५३३४७६
६. लाल जी प्रसाद त्रिपाठी, थाना-अकलतरा
१०. श्री वी.पी.कोशिक, श्री आर. जी. काशी, श्री मुखर्जी-बिलासपुर
११. श्री शिव अग्रवाल, रेल्वे कॉन्ट्रेक्टर, चिरमिरी
१२. श्री एम. पी. चतुर्वेदी, अध्यक्ष, जेल बंगला, जगदलपुर
१३. श्री कैलाश नारायण श्रीवास्तव, राज कुमार यादव, विवेक श्रीवास्तव-अम्बिकापुर
१४. श्री हरिहर चतुर्वेदी (एडवोकेट) - शहडोल
१५. श्री राजेन्द्र गुप्ता, श्री एच. एस. दिल्लीवार, श्रीमती विभा चन्द्राकर- भिलाई, कमल वाधवानी- चौकी
१६. श्री शैलेन्द्र पसीने, श्री सुरेन्द्र हरदेल - दुर्ग
१७. श्री बी. एल. वर्मा(शिक्षक), श्री देशमुख, परदेशी राम देवांगन- डोंगरगढ़
१८. श्री आर. एस. यादव - खरसिया, रायगढ़
१६. श्री जे. पी. मिश्रा, रायगढ़
२०. श्री पूर्णेश चौबे-धार, डॉ० चौधरी-गोन्दिया

सम्पर्क सूत्र

सिद्धाश्रम साधक परिवार, द्वारा : डॉ० विनोद गुप्ता, राहौद, जिला - बिलासपुर, (म.प्र.)

श्री टी. सुब्बाराव, ४/१, सी.पी.आर.आई. कॉलोनी, गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.), फोन : ०७५५ - ५८६२८२

आयोजन स्थल : मेला क्षेत्र, शिवरी नारायण, जिला - बिलासपुर (म.प्र.)

शन नं० ५५७६१/९३ A.H.W. पोस्टल डी.एल.नं० १६०५२/९३

१० से १६ जुलाई ९४ को

(इनमें से किसी भी दिन जो आपके लिए सुविधाजनक हो)

- ☆ महालक्ष्मी दीक्षा
- ☆ ऋण मुक्ति दीक्षा
- ☆ मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा
- ☆ गृहस्थ सुख-समृद्धि दीक्षा
- ☆ रोग मुक्ति दीक्षा
- ☆ धन्वन्तरी दीक्षा
- ☆ शत्रु बाधा निवारण दीक्षा
- ☆ बगलामुखी दीक्षा
- ☆ पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा
- ☆ कुण्डलिनी जागरण दीक्षा
- ☆ अप्सरा सिद्धि दीक्षा
- ☆ पूर्व जन्म कृत पाप विमोचन दीक्षा
- ☆ यक्षिणी दीक्षा
- ☆ गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा
- ☆ गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
- ☆ राज्याभिषेक दीक्षा
- ☆ वीर वैताल सिद्धि दीक्षा
- ☆ तारा महाविद्या सिद्धि दीक्षा
- ☆ सर्व साधना सिद्धि दीक्षा
- ☆ ज्ञान दीक्षा
- ☆ जीवन मार्ग दीक्षा

समग्र, साफल्यदायक, ऐश्वर्य प्रदायक,
अनुकूल एवं जीवन की चुनी हुई २१ दीक्षाएं

नोट : ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों पर प्रदान करेंगे।

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८